

आर्थिक विकास की समझ

(Understanding Economic Development)

इस इकाई में सम्मिलित खंड एवं अध्याय

- विकास
- भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक
- मुद्रा और साख
- वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था
- उपभोक्ता अधिकार

(नोट: अध्याय उपभोक्ता अधिकार परियोजना कार्य के रूप में किया जाएगा।)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

- विकास में लोग क्या चाहते हैं?
 - ज्यादा आय
 - स्वतंत्रता
 - सुरक्षा
 - उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी
- विश्व बैंक विकास के लिए देशों का वर्गीकरण करने के लिए क्या मापदंड अपनाता है?
 - प्रति व्यक्ति आय
 - जीवन प्रत्याशा दर
 - साक्षरता दर
 - तीन स्तरों पर नामांकन अनुपात

उत्तर (a) प्रति व्यक्ति आय

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।
- निम्नलिखित में से कौन-सा सतत विकास का उद्देश्य है?
 - प्रदूषण में कमी
 - प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि
 - प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण
 - उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी
- वर्ष 2007 में भारत का मानव विकास सूचकांक कितना था?
 - 126
 - 128
 - 130
 - 134

उत्तर (b) 128
- कुल राष्ट्रीय आय तथा के भागफल को प्रति व्यक्ति आय कहते हैं?
 - कुल उत्पादन
 - कुल जनसंख्या
 - शुद्ध राष्ट्रीय आय
 - सकल राष्ट्रीय उत्पादन

उत्तर (b) कुल जनसंख्या

- किस राज्य में प्रति व्यक्ति आय सबसे अधिक है?
 - पंजाब
 - केरल
 - बिहार
 - तीनों में एक समान है

उत्तर (a) पंजाब
- किस राज्य का मानव विकास सूचकांक सबसे ऊपर है?
 - पंजाब
 - केरल
 - बिहार
 - उपर्युक्त सभी

उत्तर (b) केरल
- वर्ष 2008 में भारत का मानव विकास सूचकांक कितना था?
 - 128
 - 130
 - 134
 - 142

उत्तर (c) 134
- निम्नलिखित में से किस देश का मानव विकास सूचकांक सबसे ऊपर है?
 - श्रीलंका
 - भारत
 - म्यांमार
 - नेपाल

उत्तर (a) श्रीलंका
- निम्नलिखित में से किस देश का मानव विकास सूचकांक सबसे कम है?
 - श्रीलंका
 - भारत
 - म्यांमार
 - नेपाल

उत्तर (d) नेपाल
- वर्ष 2009 में भारत का मानव विकास सूचकांक कितना था?
 - 130
 - 132
 - 134
 - 138

उत्तर (b) 134
- निम्नलिखित में से किस राज्य में साक्षरता दर सबसे कम है?
 - पंजाब
 - केरल
 - बिहार
 - उपर्युक्त सभी

उत्तर (c) बिहार

13. वर्ष 2013 में भारत का मानव विकास सूचकांक कितना था ?

- (a) 124 (b) 132
(c) 135 (d) 142

उत्तर (c) 135

14. वैश्विक प्रतिस्पर्धा सूचकांक 2009-10 की दृष्टि से भारत का विश्व में कौन-सा स्थान है ?

- (a) 46 (b) 49
(c) 50 (d) 56

उत्तर (b) 49

15. मानव विकास रिपोर्ट में सम्मिलित किया जाता है-

- (a) मानव विकास सूचकांक (HDI)
(b) मानव निर्धनता सूचकांक (HPI)
(c) a एवं b दोनों
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (c) a एवं b दोनों

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

16. चीन एवं श्रीलंका की 2009 की मानव विकास की स्थिति क्रमशः एवं थी।

- (a) 92वाँ एवं 102वाँ (b) 102वाँ एवं 92वाँ
(c) 82वाँ एवं 112वाँ (d) 82वाँ एवं 92वाँ

उत्तर (a) 92वाँ एवं 102वाँ

17. पाकिस्तान, नेपाल एवं बांग्लादेश की 2013 की मानव विकास की स्थिति क्रमशः, एवं थी।

- (a) 146, 144 एवं 141 (b) 144, 146 एवं 141
(c) 146, 145 एवं 142 (d) 144, 141 एवं 146

उत्तर (c) 146, 145 एवं 142

18. सन् 2001 की जनगणना के अनुसार महिला साक्षरता प्रतिशत कितना रहा ?

- (a) 53.67 प्रतिशत (b) 75.26 प्रतिशत
(c) 64.84 प्रतिशत (d) 57.67 प्रतिशत

उत्तर (a) 53.67 प्रतिशत

19. 2009 में भारत का मानव निर्धनता सूचकांक (Human Poverty Index) में कौन-सा स्थान था ?

- (a) 126 (b) 134
(c) 98 (d) 88

उत्तर (d) 88

20. अमेरिका एवं ब्रिटेन का 2009 की मानव विकास की स्थिति से क्रमशः एवं स्थान था।

- (a) 22वाँ एवं 23वाँ (b) 13वाँ एवं 21वाँ
(c) 21वाँ एवं 13वाँ (d) 11वाँ एवं 15वाँ

उत्तर (b) 13वाँ एवं 21वाँ

21. मानव निर्मित संसाधन निम्न में से नहीं है-

- (a) गाँव (b) ऊँची इमारतें
(c) हवाई जहाज (d) खनिज

उत्तर (d) खनिज

22. निम्नलिखित में से किस देश में जीवन प्रत्याशा दर सबसे अधिक है ?

- (a) श्रीलंका (b) भारत
(c) पाकिस्तान (d) नेपाल

उत्तर (a) श्रीलंका

23. सन् 2001 की जनगणना के अनुसार पुरुष साक्षरता प्रतिशत कितना रहा ?

- (a) 71.26 प्रतिशत (b) 72.46 प्रतिशत
(c) 75.26 प्रतिशत (d) 53.67 प्रतिशत

उत्तर (c) 75.26 प्रतिशत

24. मानव विकास सूचकांक में निम्नलिखित में से किसकी गणना करते हैं ?

- (a) प्रति व्यक्ति आय (b) जीवन प्रत्याशा दर
(c) साक्षरता दर (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

25. आज से कितने वर्षों के बाद ऊर्जा संसाधनों का संकट खड़ा हो जाएगा ?

- (a) 5 वर्ष (b) 10 वर्ष
(c) 50 वर्ष (d) 100 वर्ष

उत्तर (c) 50 वर्ष

26. सन् 2011 की जनगणना के अनुसार महिला साक्षरता प्रतिशत कितना रहा ?

- (a) 65.46 (b) 64.84
(c) 75.26 (d) 57.67

उत्तर (a) 65.46

27. सन् 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में कुल साक्षरता

प्रतिशत रहा-

- (a) 62.81 प्रतिशत (b) 64.84 प्रतिशत
(c) 75.81 प्रतिशत (d) 54.81 प्रतिशत

उत्तर (b) 64.84 प्रतिशत

28. राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक है-

- (a) सकल राष्ट्रीय उत्पाद में वृद्धि
(b) गरीबी को कम करना
(c) आय एवं संपत्ति की असमानता को कम करके प्रत्येक के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाना
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

29. सन् 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में कुल साक्षरता प्रतिशत रहा-

- (a) 62.81 (b) 74.04
(c) 64.84 (d) 54.81

उत्तर (b) 74.04

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

30. निम्न में से किस राज्य की साक्षरता दर सबसे अधिक है?

- (a) पंजाब (b) बिहार
(c) केरल (d) ओडिशा

उत्तर (c) केरल

31. सन् 2011 की जनगणना के अनुसार पुरुष साक्षरता प्रतिशत कितना रहा?

- (a) 71.26 (b) 72.46
(c) 82.14 (d) 57.67

उत्तर (c) 82.14

32. निम्नलिखित में से किस देश का क्रमांक मानव विकास सूचकांक में भारत से ऊँचा है?

- (a) पाकिस्तान (b) नेपाल
(c) बांग्लादेश (d) श्रीलंका

उत्तर (d) श्रीलंका

33. केरल में शिशु मृत्यु दर कम है। इसके लिए निम्नलिखित में से कौन-सा कारण सही है?

- (a) वहाँ आधारभूत स्वास्थ्य तथा शैक्षिक सुविधाओं का पर्याप्त प्रावधान है
(b) वहाँ की प्रति व्यक्ति आय अधिकतम है
(c) वहाँ प्राकृतिक संसाधन हैं

(d) केरल की सरकार बहुत कुशल हैं

उत्तर (a) वहाँ आधारभूत स्वास्थ्य तथा शैक्षिक सुविधाओं का पर्याप्त प्रावधान है

34. मानव विकास सूचकांक के प्रमुख मापदंड क्या है?

- (a) निवल उपस्थिति अनुपात, साक्षरता दर
(b) जीने की आयु या जीवन प्रत्याशा
(c) शिशु मृत्यु दर, प्रति व्यक्ति आय
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

35. तीन स्तरों के लिए सकल नामांकन अनुपात का क्या अर्थ है?

- (a) प्राथमिक स्तर पर शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों का अनुपात
(b) प्राथमिक स्कूल, माध्यमिक स्कूल और उससे आगे उच्च शिक्षा के नामांकन अनुपात का कुल योग
(c) भारत के सभी स्कूलों के नामांकित छात्र
(d) वे सभी छात्र जो साक्षर हो चुके हैं

उत्तर (b) प्राथमिक स्कूल, माध्यमिक स्कूल और उससे आगे उच्च शिक्षा के नामांकन अनुपात का कुल योग

36. देश में उत्पादित वस्तुओं तथा सेवाओं का कुल मूल्य तथा विदेशों से प्राप्त शुद्ध आय के जोड़ को क्या कहा जाता है?

- (a) प्रति व्यक्ति आय (b) राष्ट्रीय आय
(c) औसत आय (d) विकास में वृद्धि

उत्तर (b) राष्ट्रीय आय

37. साक्षरता दर क्या है?

- (a) 7 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों में साक्षर जनसंख्या का अनुपात
(b) दसवीं पास छात्रों की संख्या
(c) पढ़े लिखे लोगों की संख्या
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) 7 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों में साक्षर जनसंख्या का अनुपात

38. विभिन्न देशों को विकसित तथा अविकसित वर्गीकृत करने के लिए क्या आर्थिक मापदंड का प्रयोग किया जाता है?

- (a) विकास (b) प्रति व्यक्ति आय
(c) औसत आय (d) राष्ट्रीय आय

उत्तर (b) प्रति व्यक्ति आय

39. भारत के किस राज्य में शिशु मृत्यु दर निम्नतम है?

- (a) केरल (b) बिहार
(c) पंजाब (d) हरियाणा

उत्तर (a) केरल

40. निम्नलिखित में से किस संगठन ने मानव विकास रिपोर्ट तैयार की?

- (a) विश्व बैंक (b) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष
(c) संयुक्त राष्ट्र संघ (d) यू.एन.डी.पी.

उत्तर (d) यू.एन.डी.पी.

41. विश्व बैंक की विश्व विकास रिपोर्ट 2017 के अनुसार समृद्ध देश में प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष आय क्या है?

- (a) US\$12080 या उससे अधिक
(b) US\$12056 या उससे अधिक
(c) US\$12085 या उससे अधिक
(d) US\$13056 या उससे अधिक

उत्तर (b) US\$12056 या उससे अधिक

42. आर्थिक सर्वेक्षण 2017-18 के अनुसार केरल में शिशु मृत्यु दर प्रतिवर्ष 1000 व्यक्ति (2016) कितनी थी?

- (a) 10 (b) 20
(c) 30 (d) 32

उत्तर (a) 10

43. 2017 की विश्व बैंक की विश्व विकास रिपोर्ट के वर्गीकरण के अनुसार भारत की स्थिति क्या है?

- (a) 2017 में भारत में प्रति व्यक्ति आय केवल US\$1820 रुपये प्रतिवर्ष थी
(b) भारत में प्रति व्यक्ति आय केवल US\$1920 रुपये प्रतिवर्ष थी
(c) भारत में प्रति व्यक्ति आय केवल US\$1876 रुपये प्रतिवर्ष थी
(d) भारत में प्रति व्यक्ति आय केवल US\$1976 रुपये प्रतिवर्ष थी

उत्तर (a) 2017 में भारत में प्रति व्यक्ति आय केवल US\$1820 रुपये प्रतिवर्ष थी

44. भूमिहीन ग्रामीण मजदूरों के लिए सबसे अधिक उपयुक्त विकास का लक्ष्य कौन-सा है?

- (a) उनकी उपज के लिए ज्यादा समर्थन मूल्य
(b) वे अपने बच्चों को विदेश में बसा सकें
(c) बेहतर मजदूरी

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (c) बेहतर मजदूरी

45. एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें शुद्ध प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होने के साथ-साथ असमानता, गरीबी, निरक्षरता तथा बीमारी में कमी भी हो। दूसरे शब्दों में, लोगों के आर्थिक जीवन में सुधार हो तथा उनका जीवन स्तर ऊँचा हो, कहलाती है-

- (a) विकास (b) प्रति व्यक्ति आय
(c) औसत आय (d) राष्ट्रीय आय

उत्तर (a) विकास

46. विश्व बैंक की विश्व विकास रिपोर्ट 2017 के अनुसार निम्न आय वाले देशों की प्रति व्यक्ति आय कितनी है?

- (a) US\$895 या उससे कम प्रतिवर्ष
(b) US\$995 या उससे कम प्रतिवर्ष
(c) US\$898 या उससे कम प्रतिवर्ष
(d) US\$976 या उससे कम प्रतिवर्ष

उत्तर (b) US\$995 या उससे कम प्रतिवर्ष

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

47. टाउथ साधारणतया लोगों की इच्छा क्या होती है?

- (a) अधिक आय (b) मौलिक अधिकार
(c) उच्च पद की इच्छा (d) उपरोक्त सभी

उत्तर (a) अधिक आय

48. अधिक आय के अतिरिक्त हमारा बेहतर जीवन किन कारकों पर निर्भर करता है?

- (a) समान व्यवहार
(b) सुरक्षा और स्वतंत्रता
(c) दूसरों से आदर मिलने की इच्छा
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

49. कामकाजी महिलाओं के लिए किस प्रकार का वातावरण आवश्यक होता है?

- (a) स्वतंत्रता
(b) सुरक्षित और संरक्षित वातावरण
(c) समानता
(d) सत्ता में भागीदारी

उत्तर (b) सुरक्षित और संरक्षित वातावरण

50. निम्नलिखित में से किसे औसत आय भी कहा जाता है?

- (a) राष्ट्रीय आय (b) प्रति व्यक्ति आय

(c) कुल आय (d) उपरोक्त सभी

उत्तर (b) प्रति व्यक्ति आय

51. सामान्यतया व्यक्तियों की तुलना किस आधार पर की जाती है?

- (a) जन्म के आधार पर
(b) रंग-रूप के आधार पर
(c) महत्वपूर्ण विशिष्टताओं के आधार पर
(d) योग्यता के आधार पर

उत्तर (c) महत्वपूर्ण विशिष्टताओं के आधार पर

52. किसी वर्ष में पैदा हुए 1000 जीवित बच्चों में से एक वर्ष की आयु से पहले मर जाने वाले बच्चों का अनुपात कहलाता है-

- (a) जन्म दर (b) लिंगानुपात
(c) मृत्यु दर (d) शिशु मृत्यु दर

उत्तर (d) शिशु मृत्यु दर

53. 6-10 वर्ष की आयु के स्कूल जाने वाले कुल बच्चों का उस आयु वर्ग के कुल बच्चों के साथ प्रतिशत क्या कहलाता है?

- (a) साक्षरता दर
(b) निवल उपस्थिति अनुपात
(c) आयु संरचना
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (b) निवल उपस्थिति अनुपात

54. लोगों की इच्छाओं तथा उनके जीवन स्तर में वृद्धि लाने की एक प्रक्रिया है ताकि वे एक उद्देश्यपूर्ण तथा सक्रिय जीवन जी सकें, जबकि राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय इसको इंगित करते हैं, कहलाते हैं-

- (a) भारतीय विकास
(b) मानव विकास
(c) राष्ट्रीय विकास
(d) अर्थव्यवस्था का विकास

उत्तर (b) मानव विकास

55. आर्थिक विकास की वह प्रक्रिया जिसका लक्ष्य प्राकृतिक संसाधनों तथा पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना वर्तमान तथा भावी दोनों पीढ़ियों की जीवन के गुणवत्ता को बनाए रखना है, इसे कहा जाता है-

- (a) सतत् पोषणीय विकास
(b) मानवीय विकास
(c) राष्ट्रीय विकास
(d) अर्थव्यवस्था का विकास

उत्तर (a) सतत् पोषणीय विकास

56. मानवीय विकास सूचकांक में भारत का क्रमांक कौन-सा है?

- (a) 170वाँ (b) 150वाँ
(c) 140वाँ (d) 130वाँ

उत्तर (d) 130वाँ

57. देशों की तुलना करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण विशिष्टता क्या समझी जाती है?

- (a) सकल घरेलू उत्पाद
(b) प्रतिव्यक्ति आय
(c) साक्षरता दर और जन्म मृत्यु दर
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (b) प्रतिव्यक्ति आय

58. प्रति व्यक्ति आय से क्या तात्पर्य है?

- (a) एक देश के आधे से अधिक सामान्य निवासियों द्वारा अर्जित आय
(b) राष्ट्रीय आय में जनसंख्या को भाग देकर प्राप्त आय
(c) एक देश की वस्तुओं और सेवाओं से अर्जित आय
(d) उपरोक्त सभी

उत्तर (b) राष्ट्रीय आय में जनसंख्या को भाग देकर प्राप्त आय

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. मानव विकास रिपोर्ट 2014 के अनुसार भारत का विश्व में वाँ स्थान है। (135, 137)

उत्तर : 135

2. प्रति व्यक्ति आय = $\frac{\text{देश की कुल आय}}{?}$

(देश की कुल जनसंख्या, देश का कुल व्यय)

उत्तर : देश की कुल जनसंख्या।

3. आर्थिक विकास का उद्देश्य राष्ट्र की उत्पादन क्षमता में करना है। (कमी, वृद्धि)

उत्तर : वृद्धि

4. HDI – Human Index.

(Developed, Development)

उत्तर : Development

5. भारत का HDI रैंक है।

उत्तर 130 (2018-एचडीआई रिपोर्ट)

6. किसी विशेष वर्ष में उत्पादित अंतिम वस्तुओं के मूल्य के कुल योगफल को कहते हैं। (जी.डी.पी., विकास)

उत्तर : जी.डी.पी.

7. BMI का अर्थ है।

उत्तर बॉडी मास इंडेक्स

8. औसत आय को के रूप में भी जाना जाता है।

उत्तर प्रति व्यक्ति आय

9. बिहार में वर्ष 2001 में साक्षरता दर थी।

उत्तर 62%

10. अमेरिका की प्रति व्यक्ति आय है।

उत्तर वर्ल्ड बुक फैक्ट के अनुसार \$ 59,5000 लगभग (2017)

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

सही या गलत बताइए

1. पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना किया जाने वाला विकास धारणीयता है।

उत्तर : सही।

2. औसत आय को राष्ट्रीय आय भी कहा जाता है।

उत्तर : गलत।

3. खनिज तेल नवीकरणीय संसाधन है।

उत्तर : गलत।

4. आर्थिक विकास मानवीय विकास का प्रमुख तत्व है।

उत्तर : सही।

5. साक्षरता दर पाँच वर्ष या उससे अधिक आयु की जनसंख्या की साक्षरता दर को मापती है।

उत्तर : गलत।

6. भारत की साक्षरता दर 67% है।

उत्तर गलत

7. औसत आय और प्रति व्यक्ति आय दोनों एक तरह की अवधारणा है।

उत्तर सही

8. एचडीआई की तुलना केवल शिक्षा के आधार पर की जाती है।

उत्तर गलत

9. वयस्क साक्षरता दर का अर्थ 7 वर्ष और उससे अधिक उम्र के लोगों से है।

उत्तर गलत

10. जीवन प्रत्याशा मृत्यु के समय आयु है।

उत्तर गलत

अति लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. शिशु मृत्यु दर क्या होती है?

उत्तर :

यह किसी वर्ष में पैदा हुए 1000 जीवित बच्चों में से एक वर्ष की आयु से पहले मर जाने वाले बच्चों का अनुपात दिखाती है।

2. मानव विकास सूचकांक के तीन घटक बताएँ।

उत्तर :

1. प्रति व्यक्ति आय।
2. जीवन प्रत्याशा।
3. साक्षरता दर।

3. एक देश के आर्थिक विकास के मापन की सामान्य विधि कौन-सी है?

उत्तर :

आय।

4. 1950-51 से 2000 तक भारत की प्रति आय कितनी बढ़ी है?

उत्तर :

1950-51 में 255 रुपये से बढ़कर 2000 में 16,500 रुपये।

5. निवल उपस्थिति अनुपात क्या होता है?

उत्तर :

6-10 वर्ष की आयु के स्कूल जाने वाले कुल बच्चों का उस आयु वर्ग के कुल बच्चों के साथ प्रतिशत।

6. एक देश में औसत या प्रति व्यक्ति आय के मापने का सूत्र बताए।

उत्तर :

$$\text{औसत आय} = \frac{\text{देश की कुल आय}}{\text{कुल जनसंख्या}}$$

7. साक्षरता दर क्या होती है?

उत्तर :

7 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों में साक्षर जनसंख्या का अनुपात।

8. साक्षरता दर साक्षर जनसंख्या के अनुपात के कौन से आयु वर्ग को मापती है?

उत्तर :

7 वर्ष तथा ऊपर का आयु वर्ग।

9. मानव विकास सूचकांक (HDI) में कौन-सा दक्षिण एशियाई देश प्रथम स्थान पर है?

उत्तर :

श्रीलंका।

10. मानव विकास सूचकांक क्या है?

उत्तर :

ऐसा सूचकांक जो प्रति व्यक्ति आय, साक्षरता दर तथा औसत संभावित आय पर आधारित होता है।

11. नवीनीकरण संसाधन किसे कहते हैं?

उत्तर :

वह संसाधन जो वर्षों के प्रयोग के बाद भी समाप्त नहीं होते। जैसे- जल, सूर्य-शक्ति आदि।

12. अमरीकी डालर में भारत की प्रति व्यक्ति आय कितनी है?

उत्तर :

313.9

13. धारणीय विकास के मापक बताएँ।

उत्तर :

1. हरित राष्ट्रीय आय।

2. अधिक बचत।

3. हरित सकल राष्ट्रीय उत्पाद।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

14. समष्टि अर्थशास्त्र का अर्थ बताएँ।

उत्तर :

अर्थशास्त्र का वह भाग जिसका सम्बन्ध सामूहिक आर्थिक क्रियाओं से होता है। जैसे राष्ट्रीय आय, सामूहिक माँग, सकल निवेश आदि।

15. विश्व बैंक के आधारों के अनुसार कौन-सा ऐसा आधार है जो देश के विकास को मापता है?

उत्तर :

प्रति व्यक्ति आय।

16. आर्थिक विकास की परिभाषा दीजिए।

उत्तर :

आर्थिक विकास का अर्थ दीर्घ काल में एक देश की प्रति व्यक्ति वास्तविक आय की वृद्धि के साथ मानव विकास सूचकांक में सुधार से लिया जाता है।

17. आर्थिक संवृद्धि का अर्थ बताइए।

उत्तर :

एक अर्थव्यवस्था में सकल घरेलू उत्पाद में निरन्तर वृद्धि, आर्थिक संवृद्धि कहलाती है।

18. कौन-सा विकास लक्ष्य सबके लिए है?

उत्तर :

आय का उच्च स्तर तथा जीवन की अच्छी गुणवत्ता।

19. एक देश की आय क्या होती है?

उत्तर :

देश के सभी निवासियों की आय।

20. मानव विकास प्रतिवेदन का प्रकाशन किसने किया?

उत्तर :

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP)।

21. आर्थिक विकास तथा संवृद्धि में एक अन्तर बताओ।

उत्तर :

आर्थिक विकास का सम्बन्ध अल्प विकसित देशों तथा आर्थिक संवृद्धि का सम्बन्ध विकसित देशों से होता है।

22. धारणीय आर्थिक विकास का अर्थ बताओ।

उत्तर :

पर्यावरण को बिना हानि पहुँचाए किया गया विकास, धारणीय आर्थिक विकास कहलाता है। इससे आने वाली पीढ़ी को कोई हानि नहीं पहुँचती।

23. एक अनुमान के अनुसार संसार के कच्चे तेल के भंडारण कितने समय तक रहेंगे?

उत्तर :

43 वर्ष।

24. एक देश का विकास प्रायः कैसे निर्धारित किया जा सकता है?

उत्तर :

1. इसकी प्रति व्यक्ति आय द्वारा।

2. इसकी औसत साक्षरता स्तर द्वारा।

3. इसके निवासियों के उच्च जीवन स्तर द्वारा।

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. किसी भी तरह से ज्यादा आय चाहने के अतिरिक्त, लोग बराबरी का व्यवहार, स्वतंत्रता, सुरक्षा और दूसरों से आदर मिलने की इच्छा भी रखते हैं। वे भेदभाव से अप्रसन्न होते हैं। ये सभी महत्वपूर्ण लक्ष्य हैं। बल्कि, कुछ मामलों में ये अधिक आय और अधिक उपभोग से अधिक महत्वपूर्ण हो सकते हैं, क्योंकि जीने के लिए केवल भौतिक वस्तुएँ ही पर्याप्त नहीं होतीं।

1. शहर के अमीर परिवार की एक लड़की के विकास का लक्ष्य/आकांक्षाएँ क्या हो सकती हैं?

2. आय के अतिरिक्त अन्य लक्ष्यों का जीवन में क्या मूल्य है?

उत्तर :

1. शहर के अमीर परिवार की लड़की का लक्ष्य और आकांक्षा अपने भाई के समान स्वतंत्रता प्राप्त करना होगा। वह अपने निर्णय स्वयं करना और अपनी शिक्षा विदेश में करना चाहेगी।

2. आय के अतिरिक्त लोगों के महत्वपूर्ण अन्य लक्ष्य

निम्नलिखित होते हैं-

1. मित्रों आदि द्वारा समानता का व्यवहार
2. स्वतंत्रता
3. सुरक्षा की भावना
4. दूसरों से आदर मिलने की इच्छा
5. स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएँ।

उपर्युक्त लक्ष्यों का जीवन में अत्यधिक मूल्य है। केवल अधिक आय होने से व्यक्ति सुखी नहीं रह सकता, क्योंकि अगर उसका कोई मित्र नहीं है तो मनुष्य का जीवन एकाकी हो जाता है। वह किसी के साथ स्वतंत्रतापूर्वक अपने विचार नहीं बाँट सकता। मित्रों और संबंधियों द्वारा समानता का व्यवहार भी जरूरी है।

2. आर्थिक विकास का अर्थ बतायें। एक देश में आर्थिक विकास को मापने के दो संकेतक कौन से हैं?

उत्तर :

आर्थिक विकास का अर्थ-आर्थिक विकास एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से दीर्घ अवधि में प्रति व्यक्ति आय तथा लोगों के आर्थिक कल्याण में वृद्धि होती है।

एक देश के आर्थिक विकास के मापन के दो संकेतक- एक देश के आर्थिक विकास के मापन के कई संकेतक हैं। उनमें से दो निम्नलिखित हैं-

1. **राष्ट्रीय आय-** यह एक वर्ष में एक देश की साधन (कारक) आय का योगफल है।
2. **प्रति व्यक्ति आय-** प्रति व्यक्ति आय की गणना करने के लिए एक देश की राष्ट्रीय आय को उस देश की कुल जनसंख्या से विभाजित किया जाता है। सूत्र के रूप में

$$\text{प्रति व्यक्ति आय} = \frac{\text{राष्ट्रीय आय}}{\text{कुल जनसंख्या}}$$

3. विकास के लिए आवश्यक तीन सार्वजनिक सुविधाओं का वर्णन करें।

उत्तर :

विकास के लिए आवश्यक तीन सार्वजनिक सुविधाएँ- विकास के लिए आवश्यक तीन सार्वजनिक सुविधाएँ निम्नलिखित हैं-

1. **प्रदूषण रहित वातावरण-** सरकार को आवासीय क्षेत्र से बाहर उद्योगों की स्थापना कर, वाहनों का निरीक्षण कर तथा अधिक वृक्ष लगाकर प्रदूषण रहित वातावरण उपलब्ध कराने की ओर ध्यान देना चाहिए।
2. **अधिक पाठशाला तथा कॉलेज खोलना-** सरकार को अधिक स्कूल तथा कॉलेज खोलने चाहिए ताकि अधिकांश बच्चे कम लागत पर शिक्षित हो सकें।
3. **संपूर्ण क्षेत्र के लिए सामूहिक सुरक्षा उपलब्ध कराना-** सरकार को विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले सभी व्यक्तियों को सुरक्षा प्रदान करनी चाहिए।

4. मानव विकास से क्या अभिप्राय है? मानव विकास को मापने वाले विभिन्न मापदंड लिखें।

उत्तर :

मानव विकास- मानव विकास से अभिप्राय निर्धनता को कम करने पर विशेष बल देने और असमानता तथा बेरोजगारी के बीच की खाई को पाटने के साथ ही मानव जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक पहलुओं का सतत् विकास।

मानव विकास को मापने के विभिन्न मापदंड- दीर्घ और स्वस्थ शरीर, शिक्षा, जानकारी तथा सूचना प्राप्त करने का अधिकार, आजीविका अर्जन के सुअवसर, शालीन जीवन स्तर, प्राकृतिक संसाधनों तक पहुँच, निजी और सामाजिक सुरक्षा, समानता और मानव-अधिकारों की रक्षा करने वाले राजनैतिक वातावरण की प्राप्ति।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

5. विकास का अर्थ बताइए। इसके मापदण्ड लिखो।

उत्तर :

विकास का अर्थ है, प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में दीर्घकालीन वृद्धि। इससे देश के लोगों के भौतिक कल्याण में वृद्धि होती है तथा जन-जीवन में सुधार आता है। इसके मुख्य मापदण्ड इस प्रकार से हैं-

1. राष्ट्रीय आय में वृद्धि।
2. प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में निरन्तर वृद्धि।
3. भौतिक जीवन गुणवत्ता में सुधार, शिक्षा, जीवन प्रत्याशा तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि।
4. धारणीय विकास अर्थात् विकास के साथ भावी पीढ़ी का संरक्षण।
5. मानव विकास सूचकांक में सुधार।
6. स्वतंत्रता के साथ विकास।

6. मानव विकास और आर्थिक विकास में अन्तर बताएँ।

उत्तर :

मानव विकास		आर्थिक विकास	
1.	मानव विकास की अवधारणा एक विकसित अवधारणा है।	1.	आर्थिक विकास की अवधारणा तुलनात्मक रूप से एक संकुचित अवधारणा है।
2.	मानव विकास की अवधारणा परिमाणात्मक तथा गुणात्मक है।	2.	आर्थिक विकास की अवधारणा केवल परिमाणात्मक है।

मानव विकास	आर्थिक विकास
3. मानव विकास में सकल घरेलू उत्पाद के साथ-साथ मानवीय आनन्द के तत्वों पर भी विचार किया जाता है।	3. आर्थिक विकास में केवल सकल घरेलू उत्पाद पर विचार किया जाता है।
4. मानव विकास एक लक्ष्य है।	4. आर्थिक विकास एक साधन है।

7. कुछ ऐसे उदाहरण दें जहाँ आय के अतिरिक्त अन्य कारक महत्वपूर्ण हैं।

उत्तर :

वे आय या भौतिक वस्तुएँ जो हमें जीवन की अच्छी गुणवत्ता नहीं देते। आय के अतिरिक्त कुछ अन्य पहलू जैसे समान व्यवहार, स्वतंत्रता, सुरक्षा, कमाने के सुअवसर, कार्य करने की अच्छी दशाएँ, प्रदूषण मुक्त पर्यावरण, नौकरी की सुरक्षा, अच्छा सामाजिक जीवन हैं जो अच्छे गुणवत्ता वाले जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं।

8. कौन से कारक मानव विकास में योगदान देते हैं?

उत्तर :

निम्नलिखित कारक (आर्थिक तथा अनार्थिक) मानव विकास में योगदान देते हैं-

1. दीर्घ तथा स्वस्थ जीवन जीना।
2. शिक्षा, सूचना तथा ज्ञान प्राप्त करना।
3. शालीन जीवन स्तर का होना।
4. समानता का व्यवहार तथा मानव अधिकार प्राप्त करना।
5. स्वतंत्रता, सुरक्षा, शिक्षा आदि आधारभूत अधिकारों का प्राप्त होना।

9. विकास की कोई तीन विशेषताएँ बताएँ।

उत्तर :

1. विभिन्न लोगों के विकास के लक्ष्य भिन्न हो सकते हैं।
2. एक व्यक्ति के लिए जो विकास है, दूसरे के लिए वह विकास नहीं हो सकता। दूसरे के लिए वह विनाशकारी भी हो सकता है।
3. विकास का सबसे महत्वपूर्ण अंग है-आय, परन्तु आय चाहने के अतिरिक्त लोग बराबरी का व्यवहार, स्वतंत्रता, सुरक्षा तथा दूसरों से आदर मिलने की इच्छा भी रखते हैं।
4. विकास के लिए लोग मिले-जुले लक्ष्यों को देखते हैं।

10. भूमिहीन श्रमिकों के लिए विकास के लक्ष्य क्या है?

उत्तर :

भूमिहीन श्रमिकों के लिए विकास के लक्ष्य निम्नलिखित हैं-

1. सप्ताह में कार्य के अधिक दिन तथा अच्छी मजदूरी।
2. उनके बच्चों को गुणवत्ता शिक्षा देने के लिए सरकार द्वारा शैक्षणिक सुविधाएँ।

3. सामाजिक भेदभाव का न होना ताकि उनके बच्चे भी गाँव में नेता बन सकें।

11. पंजाब के धनी किसानों के लिए विकास के क्या लक्ष्य हैं?

उत्तर :

पंजाब के धनी किसानों के लिए विकास के लक्ष्य निम्नलिखित हैं-

1. उनकी फसलों का उच्च समर्थन मूल्य मिले।
2. उनके बच्चे विदेशों में आबाद हों।
3. श्रम सस्ता हो तथा श्रमिकों के काम करने के घंटे अधिक हों।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

12. एक उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट कीजिए कि दो वित्तीय समूहों के बीच विकास की धारणाएँ अलग क्यों हैं?

उत्तर :

1. दो समूहों के लोगों के लिए विकास की धारणा भिन्न हो सकती है। जैसे उद्योगपति बाँधों के निर्माण को विकास मान सकते हैं, क्योंकि इससे अधिक बिजली मिलती है। लेकिन आदिवासी, किसान एवं ग्रामीण इसका विरोध कर सकते हैं, क्योंकि बाँधों से उनकी जमीन जलमग्न हो सकती है। उनका जीवन अस्त-व्यस्त हो सकता है, वे बेघर हो सकते हैं और उनकी जीविका खो सकती है।

2. उद्योगपतियों के लिए खनन उद्योग से तात्पर्य है दूसरे विकास कार्यों के लिए प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता, जैसे लोहा और इस्पात।

यह स्थानीय लोगों के लिए आमदनी, ढाँचागत विकास तथा रोजगार उपलब्ध कराता है। लेकिन दूसरे समूहों के लोगों के लिए यह वनोन्मूलन, संसाधनों और स्थानीय लोगों का शोषण, पर्यावरण आपदा तथा प्रदूषण इत्यादि हो सकता है। इस प्रकार विकास की धारणाएँ एक नहीं हैं।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. (1) केवल वर्षा पर निर्भर करने वाले कृषकों के क्या लक्ष्य हैं?

(2) भूमि के स्वामी परिवार से एक ग्रामीण महिला की क्या आशाएँ हो सकती हैं?

उत्तर :

(1) कृषकों के लक्ष्य- केवल वर्षा पर निर्भर करने वाले कृषक आशा करते हैं कि-

1. उचित समय पर पर्याप्त वर्षा हो।
2. वर्षा न होने की स्थिति में गाँव के धनी किसान उन्हें खाद्यान्न उपलब्ध करवायें।
3. सूखा आदि विपदा के समय सस्ती दरों पर सरकार ऋण उपलब्ध करवाए।

(2) ग्रामीण महिला की आशाएँ- भूमि रखने वाले किसान की स्त्री चाहती है कि-

1. उसके पास अधिक आभूषण तथा सुन्दर कपड़े हों।
2. उसके बच्चे को अच्छी शिक्षा मिले।
3. उसके बच्चों की शादी अच्छे परिवारों में हो।

2. भिन्न-भिन्न व्यक्ति विकास के विषय में अलग-अलग अवधारणाएँ क्यों रखते हैं? चर्चा करें।

उत्तर :

विकास के विषय में अलग-अलग अवधारणाओं के कारण- भिन्न-भिन्न व्यक्ति विकास के विषय में अलग-अलग अवधारणाएँ रखते हैं। इसका कारण यह है कि लोगों के जीवन की परिस्थितियाँ भिन्न-भिन्न हैं। कुछ व्यक्ति धनी हैं और कुछ निर्धन। वे उन्हीं वस्तुओं के बारे में विचार करते हैं और जो उनके लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। निर्धन व्यक्ति भोजन, कपड़ा, मकान आदि जैसी आधारभूत आवश्यकताओं के बारे में विचार करेंगे। वे कार जैसी मूल्यवान वस्तुओं के बारे में नहीं सोच सकते। इसके विपरीत धनी व्यक्ति कीमती कारों के विषय में विचार करते हैं। अतः लोगों की विकास की विभिन्न अवधारणाएँ होती हैं और वे अपनी जीवन-परिस्थितियों के अनुसार सोचते हैं।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

3. देश के विकास के लिए सार्वजनिक सुविधाएँ क्यों आवश्यक हैं? किन्हीं चार सार्वजनिक सुविधाओं का वर्णन कीजिए।

अथवा

जन सुविधाओं का क्या अर्थ है? वे क्यों महत्वपूर्ण हैं? भारत में जन सुविधाओं के नाम लिखिए।

उत्तर :

1. सार्वजनिक सुविधाएँ उन सुविधाओं का उल्लेख करती हैं जिन्हें कोई व्यक्ति अकेला खरीद नहीं सकता या व्यवस्था नहीं कर सकता।
2. निम्नलिखित सार्वजनिक सुविधाएँ विकास के लिए आवश्यक हैं-
 1. प्रदूषण मुक्त वातावरण।
 2. संक्रामक बीमारियों से बचाव।
 3. अच्छी आधारभूत संरचना।
 4. अच्छी कानूनी व्यवस्था।
 5. स्वच्छ जल और साफ-सफाई की व्यवस्था इत्यादि।
 6. सार्वजनिक वितरण प्रणाली की व्यवस्था।
4. उच्च प्रति व्यक्ति आय होने के बावजूद भी मध्य पूर्व के देशों को विकसित देश क्यों नहीं कहा जाता?

उत्तर :

1. यद्यपि मध्य पूर्व के देशों में प्रति व्यक्ति आय बहुत अधिक है परन्तु वहाँ धन का वितरण असमान है।
2. तेल उत्पादन के कारण इन देशों की प्रति व्यक्ति आय

अधिक है। इसलिए उनके पास आय का केवल एक प्रमुख स्रोत है।

3. विश्व बैंक की विश्व विकास रिपोर्ट ने इन देशों को विकसित देशों की सूची में शामिल नहीं किया है।

5. विकसित और अल्पविकसित देशों में भेद करें।

उत्तर :

विकसित और अल्पविकसित देशों में भेद-

विकसित देश		अल्पविकसित देश	
1.	इन देशों की प्रति व्यक्ति आय उच्च होती है।	1.	इन देशों की प्रति व्यक्ति आय निम्न होती है।
2.	इन देशों में लोगों का जीवन स्तर ऊँचा होता है।	2.	इन देशों में लोगों का जीवन स्तर निम्न होता है।
3.	संयुक्त राज्य अमेरिका, यू.के., जापान आदि विकसित देश हैं।	3.	नेपाल, पाकिस्तान आदि अल्पविकसित देश हैं।

6. पर्यावरण अवक्षय के कारण समझाएँ।

उत्तर :

पर्यावरण अवक्षय के कारण- पर्यावरण अवक्षय के निम्नलिखित कारण हैं-

1. **जनसंख्या विस्फोट-** पर्यावरण अवक्षय का एक मुख्य कारण भारत में जनसंख्या विस्फोट की प्रवृत्ति है। इसके फलस्वरूप भूमि पर जनसंख्या का दबाव बहुत अधिक बढ़ गया है तथा भूमि का अधिक शोषण होने लगा है। जनसंख्या विस्फोट के कारण वनों के अन्तर्गत भूमि प्राप्त करने के लिए वनों का बहुत अधिक कटाव किया गया है।
2. **लोगों की निर्धनता-** भारत में निर्धनता रेखा से नीचे के लोगों की संख्या काफी अधिक है। ये लोग अपने जीवन-निर्वाह के लिए वनों का कटाव करते हैं। तथा अनेक प्रकार की प्राकृतिक पूँजी का शोषण करते हैं।
3. **बढ़ता हुआ नगरीकरण-** नगरीकरण के बढ़ने के फलस्वरूप मकानों तथा सार्वजनिक सुविधाओं में काफी वृद्धि हुई है। इसके फलस्वरूप भूमि तथा अन्य प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक शोषण किया जा रहा है।
4. **तीव्र औद्योगीकरण-** द्रुत और तीव्र औद्योगीकरण भी वायु, जल तथा ध्वनि प्रदूषण को बढ़ावा देता है। विशेष रूप से धुआँ एक खतरनाक प्रदूषण है।

7. मानव विकास सूचकांक का क्या महत्व है?

उत्तर :

मानव विकास सूचकांक का महत्व- निम्न बिन्दु मानव विकास सूचकांक के महत्व को दर्शाते हैं-

1. मानव विकास सूचकांक किसी देश के विकास के स्तर को बढ़ाता है।

2. यह एक देश को बताता है कि उच्च क्रम प्राप्त करने के लिए उसे अभी कितना आगे बढ़ना है।
3. इसके माध्यम से हमें आयु प्रत्याशा, प्रौढ़ शिक्षा दर, शिक्षा का स्तर, प्रति व्यक्ति आय आदि आर्थिक कल्याण के मुख्य तत्वों की जानकारी होती है।
4. इसकी सहायता से दो या दो से अधिक देशों के विकास स्तर की तुलना कर सकते हैं।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

8. तीन उदाहरण दीजिए, जहाँ स्थितियों की तुलना के लिए औसत का प्रयोग किया जाता है।

उत्तर :

निम्न स्थितियों की तुलना के लिए औसत का प्रयोग किया जाता है—

1. क्रिकेट खिलाड़ियों की उपलब्धि की तुलना के लिए औसत

$$= \frac{\text{कुल रन}}{\text{खेली गई पारियों की संख्या - अविजित पारियों की संख्या}}$$
 का प्रयोग किया जाता है।
2. अनियत श्रमिकों की आय की तुलना के लिए औसत दैनिक आय निकाली जाती है।
3. किसी परीक्षा में छात्रों की उपलब्धियों की तुलना के लिए औसत का प्रयोग किया जाता है। इसके लिए छात्र द्वारा प्रत्येक विषय में प्राप्त अंकों के योग को प्रत्येक विषय में अधिकतम अंकों के योग से विभाजित कर उसे 100 से गुणा किया जाता है।

NCERT पाठ्य-पुस्तक प्रश्न

1. सामान्यतः किसी देश का विकास किस आधार पर निर्धारित किया जा सकता है—
 (a) प्रतिव्यक्ति आय (b) औसत साक्षरता स्तर
 (c) लोगों की स्वास्थ्य स्थिति (d) उपरोक्त सभी

उत्तर (d) उपरोक्त सभी

2. निम्नलिखित पड़ोसी देशों में से मानव विकास के लिहाज से किस देश की स्थिति भारत से बेहतर है?
 (a) बांग्लादेश (b) श्रीलंका
 (c) नेपाल (d) पाकिस्तान

उत्तर (b) श्रीलंका

3. मान लीजिए कि एक देश में चार परिवार हैं। इन परिवारों की प्रतिव्यक्ति आय ₹5,000 है। अगर तीन परिवारों की आय क्रमशः ₹4,000, ₹7,000 और ₹3,000 हैं, तो चौथे परिवार की आय क्या है?
 (a) ₹7,500 (b) ₹3000
 (c) ₹2000 (d) ₹6000

उत्तर (d) ₹6000

4. विश्व बैंक विभिन्न वर्गों का वर्गीकरण करने के लिए किस प्रमुख मापदंड का प्रयोग करता है? इस मापदंड की, अगर कोई है, तो सीमाएँ क्या हैं?

उत्तर :

विश्व बैंक विभिन्न वर्गों का वर्गीकरण करने के लिए प्रति व्यक्ति औसत आय के मापदंड का प्रयोग करता है। विश्व बैंक की विश्व विकास रिपोर्ट 2006 के अनुसार, देशों का वर्गीकरण करने में इस मापदंड का प्रयोग किया गया है। वे देश जिनकी 2004 में प्रति व्यक्ति आय ₹4,53,000 प्रति वर्ष या उससे अधिक है, उन्हें समृद्ध देश और वे देश जिनकी प्रति व्यक्ति आय ₹37,000 प्रति वर्ष या उससे कम है, उन्हें निम्न आय वाला देश कहा गया है।

सीमाएँ—

1. यह मापदंड हमें आय के वितरण के बारे में जानकारी नहीं देता है।
2. यह मापदंड शांति, स्वास्थ्य, पर्यावरण, शिक्षा, दीर्घायु की अपेक्षा केवल आर्थिक मापदंड पर ही ध्यान देता है।
5. विकास मापने का यू.एन.डी.पी. का मापदंड किन पहलुओं में विश्व बैंक के मापदंड से अलग है?

उत्तर :

विकास को मापने का विश्व बैंक का मापदंड केवल आय पर आधारित है। इस मापदंड की अनेक सीमाएँ हैं। आय के अतिरिक्त भी कई अन्य मापदंड हैं जो विकास मापने के लिए आवश्यक है, क्योंकि मानव मात्र पर्याप्त आय के बारे में नहीं सोचता, बल्कि वह अपनी सुरक्षा, दूसरों से आदर और बराबरी का व्यवहार पाना, स्वतंत्रता आदि जैसे अन्य लक्ष्यों के बारे में भी चिंतन करता है।

यू.एन.डी.पी. द्वारा प्रकाशित मानव विकास रिपोर्ट में विकास के लिए निम्नलिखित मापदंड अपनाए गए—

1. **लोगों का स्वास्थ्य—** मानव विकास का प्रमुख मापदंड है स्वास्थ्य या दीर्घायु। विभिन्न देशों के लोगों की जीवन प्रत्याशी जितनी अधिक होगी, वह मानव विकास की दृष्टि से उतना ही अधिक विकसित देश माना जाएगा।
2. **शैक्षिक स्तर—** मानव विकास का दूसरा प्रमुख मापदंड शैक्षिक स्तर है। किसी देश में साक्षरता की दर जितनी ज्यादा होगी वह उतना ही विकसित माना जाएगा और यह दर यदि कम होगी तो उस देश को अल्पविकसित कहा जाएगा।
3. **प्रतिव्यक्ति आय—** मानव विकास का तीसरा मापदंड है प्रतिव्यक्ति आय। जिस देश में प्रतिव्यक्ति आय अधिक होगी उस देश में लोगों का जीवन स्तर भी अच्छा होगा और अच्छा जीवन स्तर विकास की पहचान है। जिन देशों में लोगों की प्रतिव्यक्ति आय कम होगी, लोगों का जीवन स्तर भी अच्छा नहीं होगा। ऐसे देश को विकसित देश नहीं

माना जा सकता।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

6. हम औसत का प्रयोग क्यों करते हैं? इनके प्रयोग करने की क्या कोई सीमाएँ हैं? विकास से जुड़े अपने उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

एक देश के लोगों की आर्थिक स्थिति की दूसरे देश के लोगों की आर्थिक स्थिति के साथ सही-सही तुलना करने के लिए हम औसत का प्रयोग करते हैं।

औसत आय की सीमाएँ-

1. यह आय के वितरण के संबंध में सही तस्वीर पेश नहीं करती।
2. औसत आय अभौतिक वस्तुओं और सेवाओं के बारे में कोई जानकारी नहीं देती।

उदाहरण- नीचे दी गई तालिका में दो देशों 'क' और 'ख' के 5-5 नागरिकों की आय का वर्णन किया गया है-

तालिका : दो देशों की तुलना

2007 में नागरिकों की मासिक आय (₹ में)						
देश	1	2	3	4	5	औसत
देश 'क'	9500	10500	9800	10000	10200	10000
देश 'ख'	500	500	500	500	48000	10000

क्या आप इन दोनों देशों में रहकर समान रूप से सुखी होंगे? क्या दोनों देश बराबर विकसित हैं? शायद हममें से कुछ लोग देश 'ख' में रहना पसंद करेंगे अगर हमें यह आश्वासन हो कि हम उस देश के पाँचवें नागरिक होंगे। लेकिन अगर हमारी नागरिकता संख्या लॉटरी के द्वारा निश्चित होगी तो शायद हममें से अधिकतर लोग देश 'क' में रहना पसंद करेंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि अगर दोनों देशों की औसत आय एक समान है, देश 'क' के लोग न तो बहुत अमीर हैं न बहुत गरीब, जबकि देश 'ख' के अधिकतर नागरिक गरीब हैं और एक व्यक्ति बहुत अमीर है।

7. प्रतिव्यक्ति आय कम होने पर भी केरल का मानव विकास क्रमांक हरियाणा से ऊँचा है। इसलिए प्रतिव्यक्ति आय एक उपयोगी मापदंड बिल्कुल नहीं है और राज्यों की तुलना के लिए इसका उपयोग नहीं करना चाहिए। क्या आप सहमत हैं? चर्चा कीजिए।

उत्तर :

यदि व्यक्तिगत आकांक्षाओं और लक्ष्यों को देखा जाए तो हम पाते हैं कि लोग केवल बेहतर आय के विषय में ही नहीं सोचते बल्कि वे अपनी सुरक्षा, दूसरों से आदर और बराबरी का व्यवहार पाना, आजादी इत्यादि अन्य लक्ष्यों के बारे में भी सोचते हैं। इसी प्रकार जब हम किसी देश के विकास के बारे में सोचते हैं तो औसत आय के अलावा अन्य लक्षणों को भी देखते हैं।

तालिका 1.1 चयनित राज्यों की प्रतिव्यक्ति आय

राज्य	2015-16 के लिए प्रतिव्यक्ति आय (रुपयों में)
हरियाणा	1,62,034
केरल	1,40,190
बिहार	31,454

तालिका 1.2 हरियाणा केरल और बिहार के कुछ तुलनात्मक आँकड़े

राज्य	शिक्षु मृत्यु दर प्रति 1000 व्यक्ति (2016)	साक्षरता दर % (2011)	निवल उपस्थिति (प्रति 100 व्यक्ति) उच्चतर (आयु 14 तथा 15 वर्ष) (2013-14)
हरियाणा	33	82	61
केरल	10	94	83
बिहार	38	62	43

तालिका 1.1 में दिए गए आँकड़ों के अनुसार हरियाणा की प्रतिव्यक्ति आय केरल और बिहार से ज्यादा है। इस प्रकार, यदि आय को ही विकास का मापदंड माना जाए तो तीनों राज्यों में हरियाणा सबसे अधिक और बिहार सबसे कम विकसित राज्य माना जाएगा। किंतु यदि तालिका 1.2 में दिए गए अन्य आँकड़ों को देखें तो पाते हैं कि केरल में शिशु मृत्यु दर हरियाणा से बहुत कम है, जबकि हरियाणा में प्रतिव्यक्ति आय अधिक है। इसी प्रकार, केरल में साक्षरता दर सबसे अधिक और बिहार में सबसे कम है। इस प्रकार, केवल प्रतिव्यक्ति आय को ही विकास का मापदंड नहीं माना जा सकता। अन्य मापदंडों, जैसे-साक्षरता, स्वास्थ्य आदि को देखें तो केरल की स्थिति हरियाणा से बेहतर है।

8. भारत के लोगों द्वारा ऊर्जा के किन स्रोतों का प्रयोग किया जाता है? ज्ञात कीजिए। अब से 50 वर्ष पश्चात् क्या संभावनाएँ हो सकती हैं?

उत्तर :

भारत के लोगों के द्वारा ऊर्जा के नवीकरणीय और अनवीकरणीय दोनों स्रोतों का प्रयोग किया जा रहा है जिनकी सूची इस प्रकार है-

1. **नवीकरणीय स्रोत-** पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा, जल विद्युत, परमाणु ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा और भू-तापीय ऊर्जा।
2. **अनवीकरणीय स्रोत-** कोयला, खनिज तेल, ताप विद्युत और प्राकृतिक गैस।

भारत में अब से 50 वर्षों के पश्चात् ऊर्जा के अनवीकरणीय स्रोतों का भंडार नष्ट हो जाएगा। भारत को अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए या तो बहुत महँगी कीमतों पर विदेशों से इन संसाधनों का आयात करना पड़ेगा जोकि देश की अर्थव्यवस्था के लिए बहुत घातक होगा या फिर ऊर्जा के

नवीकरणीय संसाधनों के विकास पर ही अधिक-से-अधिक बल देना होगा।

9. धारणीयता का विषय विकास के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर :

धारणीयता से अभिप्राय है सतत पोषणीय विकास अर्थात् ऐसा विकास जो वर्तमान पीढ़ी तक ही सीमित न रहे बल्कि आगे आने वाली पीढ़ी को भी मिले। वैज्ञानिकों का कहना है कि हम संसाधनों का जैसे प्रयोग कर रहे हैं, उससे लगता है कि संसाधन शीघ्र समाप्त हो जाएँगे और आगे आने वाली पीढ़ी के लिए नहीं बचेंगे। यदि हमें विकास को धारणीय बनाना है अर्थात् निरंतर जारी रखना है, तो हमें संसाधनों का प्रयोग इस तरह से करना होगा जिससे विकास की प्रक्रिया निरंतर जारी रहे और भावी पीढ़ी के लिए संसाधन बचे रहें।

धारणीयता की अवधारणा विकास के लिए निम्न कारणों से महत्वपूर्ण है-

1. यह भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखती है।
2. यह प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण प्रयोग करने में प्रोत्साहित करती है।
3. यह गुणवत्तापूर्ण जीवन को महत्व देती है।

10. धरती के पास सब लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं, लेकिन एक भी व्यक्ति के लालच को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं हैं। यह कथन विकास की चर्चा में कैसे प्रासंगिक है? चर्चा कीजिए।

उत्तर :

हमारी धरती के पास संसाधनों के अपार भंडार हैं। यदि हम धारणीयता को ध्यान में रखकर संसाधनों का प्रयोग करते हैं तो धरती हमें निराश नहीं करेगी। यह हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संसाधन उपलब्ध कराती रहेगी।

लेकिन यदि कोई व्यक्ति लालचवश संसाधनों का दुरुपयोग करता है तो धरती के पास एक अकेले व्यक्ति के लालच को पूरा करने के लिए संसाधनों का अकाल पड़ जाएगा। संसाधनों का दुरुपयोग अमानवीय है। इससे एक व्यक्ति के लालच के कारण पूरे समुदाय या समाज को संसाधनों से वंचित रहना पड़ सकता है और इससे देश का विकास रुक जाएगा। देश का संतुलित विकास होता रहे इसके लिए आवश्यक है कि संसाधनों का उचित नियोजन के अनुसार प्रयोग करें।

11. पर्यावरण में गिरावट के कुछ ऐसे उदाहरणों की सूची बनाइए जो आपने अपने आसपास देखे हैं।

उत्तर :

पर्यावरण में गिरावट के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं-

1. भूमिगत जल का स्तर बहुत अधिक गिर गया है और कुएँ, तालाब तथा पोखरें सूख गए हैं।
2. ट्यूबवेलों की गहराई 300 फुट से भी अधिक हो गई है।
3. नदियों में तेजाबयुक्त पानी बहने के कारण जलीय जीव

और मछलियाँ मर रही हैं।

4. हवा में धूल और कार्बन के अंश बहुत अधिक बढ़ गए हैं। धोकर सूखने के लिए डाले गए कपड़े कालिख के कारण काले पड़ जाते हैं।
5. पेड़-पौधों के नष्ट हो जाने के कारण गर्मी की तपन से जलना पड़ता है।
6. हरी-भरी भूमि बंजर होती जा रही है।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

12. तालिका 1.6 में दी गई प्रत्येक मद के लिए ज्ञात कीजिए कि कौन-सा देश सबसे ऊपर है और कौन-सा देश सबसे नीचे? तालिका 1.6 : वर्ष 2017 के लिए भारत और उसके पड़ोसी देशों के कुछ आँकड़े

देश	सकल राष्ट्रीय आय (स.रा.अ.) प्रति व्यक्ति अमेरिकी डॉलर में (2011 क्रयशक्ति क्षमता)	जन्म के समय संभावित आयु 2017	विद्यालयी औसत आयु 25 वर्ष या उससे अधिक (2017)	विश्व में मानव विकास सूचकांक (HDI) का क्रमांक 2016
श्रीलंका	11,326	75.5	10.9	76
भारत	6,353	68.8	6.4	130
म्यांमार	5,567	66.7	4.9	148
पाकिस्तान	5,331	66.6	5.2	150
नेपाल	2,471	70.6	4.9	149
बांग्लादेश	3,677	72.8	5.8	136

उत्तर :

तालिका 1.6 विभिन्न मापदंडों के आधार पर दुनिया के विभिन्न देशों को विकास की अलग-अलग श्रेणियों में बाँटती है। इसमें प्रतिव्यक्ति आय, संभावित आयु, विद्यालयी औसत आयु तथा मानव विकास सूचकांक क्रमांक को मापदंड बनाया गया है। प्रतिव्यक्ति आय के आधार पर श्रीलंका सबसे ऊपर तथा बांग्लादेश सबसे नीचे है। जन्म के समय संभावित आयु (जीवन प्रत्याशा) के आधार पर श्रीलंका सबसे ऊपर तथा बांग्लादेश सबसे नीचे है। विद्यालयी औसत आयु के क्षेत्र में भी श्रीलंका सबसे ऊपर तथा बांग्लादेश सबसे नीचे है। मानव विकास सूचकांक के क्रमांक में भी श्रीलंका का स्थान विश्व में 76वाँ है जो इस तालिका में दिए गए सभी देशों से ऊपर है तथा बांग्लादेश 136वाँ स्थान लेकर सबसे नीचे है।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

13. नीचे दी गई तालिका में भारत में व्यस्कों (15-49 वर्ष आयु वाले) जिनका बी.एम.आई. सामान्य से कम है (बी.एम.आई. < 18.5kg/m²) का अनुपात दिखाया गया है। यह वर्ष 2015-16 में देश के विभिन्न राज्यों के एक सर्वेक्षण पर

आधारित है। तालिका का अध्ययन करके निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

राज्य	पुरुष (%)	महिला (%)
केरल	8.5	10
कर्नाटक	17	21
मध्य प्रदेश	28	28
सभी राज्य	20	23

1. केरल और मध्य प्रदेश के लोगों के पोषण स्तरों की तुलना कीजिए।
2. क्या आप अन्दाज लगा सकते हैं कि देश में लगभग हर पाँच में से एक व्यक्ति अल्पपोषित क्यों है, यद्यपि यह तर्क दिया जाता है कि देश में पर्याप्त खाद्य है? अपने शब्दों में विवरण दीजिए।

उत्तर :

1. उपर्युक्त आँकड़े केरल और मध्य प्रदेश के लोगों के पोषण स्तर को दर्शाते हैं। इसके अनुसार केरल में 8.5 प्रतिशत पुरुष और 10 प्रतिशत महिलाएँ अल्प-पोषित हैं, जबकि मध्य प्रदेश में 28 प्रतिशत पुरुष और 28 प्रतिशत महिलाएँ अल्प-पोषित हैं। इसका अर्थ है कि मध्य प्रदेश में अधिक लोग अल्प-पोषित हैं।
2. देश में पर्याप्त अनाज होने के बावजूद देश के 40 प्रतिशत लोग अल्प-पोषित हैं क्योंकि अभी भी लगभग 40 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा से नीचे हैं। ये व्यक्ति इतना भी नहीं कमा पाते कि अपने लिए दो समय का खाना प्राप्त कर सकें। इसलिए देश में अनाज उपलब्ध होने के बावजूद ये उसे खरीद नहीं पाते और अल्प-पोषित रहते हैं।

WWW.CBSE.ONLINE

भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्र

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भारतीय अर्थव्यवस्था में निम्नलिखित में से कौन-सा क्षेत्रक पाया जाता है?

- (a) प्राथमिक क्षेत्रक (b) द्वितीयक क्षेत्रक
(c) तृतीयक क्षेत्रक (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

2. कौन-सा क्षेत्रक वस्तुओं के विनिर्माण से संबंधित है?

- (a) प्राथमिक क्षेत्रक (b) द्वितीयक क्षेत्रक
(c) तृतीयक क्षेत्रक (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (b) द्वितीयक क्षेत्रक

3. निम्नलिखित में से कौन-सा क्षेत्रक प्राकृतिक वस्तुओं के उत्पादन से संबंधित है?

- (a) प्राथमिक क्षेत्रक (b) द्वितीयक क्षेत्रक
(c) तृतीयक क्षेत्रक (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) प्राथमिक क्षेत्रक

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

4. कौन-सा क्षेत्रक सेवाएँ प्रदान करता है?

- (a) प्राथमिक क्षेत्रक (b) द्वितीयक क्षेत्रक
(c) तृतीयक क्षेत्रक (d) a और b दोनों

उत्तर (c) तृतीयक क्षेत्रक

5. कपास द्वारा कपड़े का उत्पादन करना निम्नलिखित में से किस क्षेत्र से संबंधित है?

- (a) प्राथमिक क्षेत्र
(b) द्वितीयक क्षेत्र
(c) तृतीयक क्षेत्र
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (b) द्वितीयक क्षेत्र

6. बीमा, बैंकिंग एवं संचार सेवाओं को प्रदान करना निम्नलिखित

में से किस क्षेत्र से संबंधित क्रियाएँ हैं?

- (a) प्राथमिक क्षेत्र
(b) द्वितीयक क्षेत्र
(c) तृतीयक क्षेत्र
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (c) तृतीयक क्षेत्र

7. प्राथमिक क्षेत्रक के उत्पाद का उदाहरण है—

- (a) कृषि (b) वानिकी
(c) मत्स्य पालन (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

8. अल्प बेरोजगारी तब होती है जब लोग—

- (a) काम करना नहीं चाहते हैं
(b) सुस्त ढंग से काम कर रहे हैं
(c) अपनी क्षमता से कम काम कर रहे हैं
(d) उनके काम के लिए भुगतान नहीं किया जाता है

उत्तर (c) अपनी क्षमता से कम काम कर रहे हैं

9. कौन-सा द्वितीयक क्षेत्रक का उदाहरण नहीं है?

- (a) दर्जी (b) कुम्हार
(c) बढ़ई (d) बेकरी वाला

उत्तर (b) कुम्हार

10. कौन-सी सेवा प्राथमिक क्षेत्रक का अंग है?

- (a) बैंक सेवाएँ (b) परिवहन सेवाएँ
(c) भंडारण सेवाएँ (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

11. ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम कब पारित किया गया?

- (a) 2005 (b) 2006
(c) 2007 (d) 2008

उत्तर (a) 2005

12. 1973 में सबसे बड़ा उत्पादक क्षेत्र कौन-सा था ?

- (a) प्राथमिक
- (b) द्वितीयक
- (c) तृतीयक
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (a) प्राथमिक

13. निम्नलिखित में से कौन-सी उत्पादन की अंतिम क्रिया है ?

- (a) पौधा
- (b) गेहूँ का दाना
- (c) आटा
- (d) रोटी

उत्तर (d) रोटी

14. किसी देश की राष्ट्रीय आय में निम्न में से किसका योगदान होता है ?

- (a) कृषि
- (b) उद्योग एवं यातायात
- (c) निर्माण
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

15. निम्नलिखित में से कौन-सा सार्वजनिक क्षेत्र का उदाहरण नहीं है ?

- (a) स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया
- (b) भारत संचार निगम लिमिटेड
- (c) केनरा बैंक
- (d) रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड

उत्तर (d) रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड

16. निम्नलिखित में से कौन-सा निजी क्षेत्र से संबंधित नहीं है ?

- (a) मारुति उद्योग
- (b) हिन्दुस्तान लीवर
- (c) इण्डियन ऑयल कॉर्पोरेशन
- (d) रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड

उत्तर (c) इण्डियन ऑयल कॉर्पोरेशन

17. संगठित क्षेत्र की विशेषता है-

- (a) नियुक्ति पत्र
- (b) नियमित रोजगार
- (c) सवेतन अवकाश
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

18. ईंटों से भवनों का निर्माण निम्नलिखित में से किस क्षेत्र की गतिविधि है ?

- (a) प्राथमिक क्षेत्र
- (b) द्वितीयक क्षेत्र

(c) तृतीयक क्षेत्र

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (b) द्वितीयक क्षेत्र

19. राष्ट्रीय आय की संरचना से तात्पर्य है-

- (a) कुल राष्ट्रीय उत्पादन
- (b) कुल राष्ट्रीय आय के स्रोत
- (c) राष्ट्रीय आय में विभिन्न क्षेत्रों का योगदान
- (d) राष्ट्रीय आय में कृषि क्षेत्र का योगदान

उत्तर (c) राष्ट्रीय आय में विभिन्न क्षेत्रों का योगदान

20. जी.डी.पी. किन वस्तुओं और सेवाओं के मूल्यों का योग है ?

- (a) प्रारंभिक
- (b) वास्तविक
- (c) अंतिम
- (d) सकल

उत्तर (c) अंतिम

21. निम्नलिखित में से कौन-सा अन्य तीन से भिन्न है ?

- (a) कृषक
- (b) माली
- (c) मधुमक्खी पालक
- (d) पुजारी

उत्तर (d) पुजारी

22. पिछले तीस वर्षों से किस क्षेत्र ने सबसे अधिक विकास किया है ?

- (a) प्राथमिक
- (b) द्वितीय
- (c) तृतीयक
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (c) तृतीयक

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

23. भारत में नीति आयोग का अध्यक्ष कौन होता है ?

- (a) वित्त मंत्री
- (b) विदेश मंत्री
- (c) प्रधानमंत्री
- (d) राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत व्यक्ति

उत्तर (c) प्रधानमंत्री

24. भारत में जी.डी.पी. में सर्वाधिक योगदान निम्नलिखित में से किस क्षेत्र का है ?

- (a) प्राथमिक क्षेत्र
- (b) द्वितीयक क्षेत्र
- (c) तृतीयक क्षेत्र
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (c) तृतीयक क्षेत्र

25. निम्न में से कौन-सी तृतीयक क्षेत्रक की क्रिया है?

- (a) खेती करना (b) बैंक सेवा
(c) लकड़ी से कागज बनाना (d) मछली पकड़ना

उत्तर (b) बैंक सेवा

26. निजी क्षेत्रक का मुख्य उद्देश्य क्या होता है?

- (a) लोक कल्याण करना
(b) अधिकाधिक लाभ अर्जित करना
(c) जन-सुविधाओं को उपलब्ध कराना
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (c) जन-सुविधाओं को उपलब्ध कराना

27. सार्वजनिक क्षेत्रक का मुख्य उद्देश्य क्या होता है?

- (a) व्यापार के माध्यम से धन कमाना
(b) जन सुविधा और लोक कल्याण करना
(c) अधिकाधिक लाभ अर्जित करना
(d) उचित कीमत पर वस्तुओं को उपलब्ध कराना

उत्तर (c) अधिकाधिक लाभ अर्जित करना

28. भारत में विद्यालय जाने के आयु वर्ग में लगभग कितने बच्चे हैं?

- (a) 10 करोड़ बच्चे (b) 20 करोड़ बच्चे
(c) 30 करोड़ बच्चे (d) 40 करोड़ बच्चे

उत्तर (b) 20 करोड़ बच्चे

29. भारत में सबसे अधिक शिशु मृत्यु दर वाले दो राज्य कौन-से हैं?

- (a) बिहार और बंगाल (b) ओडिशा और मध्यप्रदेश
(c) छत्तीसगढ़ और उत्तरप्रदेश (d) सिक्किम और मणिपुर

उत्तर (b) ओडिशा और मध्यप्रदेश

30. भारत में लगभग कितने प्रतिशत ग्रामीण परिवार छोटे और सीमांत किसानों की श्रेणी में आते हैं?

- (a) 60% (b) 70%
(c) 80% (d) 82%

उत्तर (c) 80%

31. 2005 के अंतर्गत उन सभी लोगों, जो काम करने में सक्षम हैं और जिन्हें काम की जरूरत है, को सरकार द्वारा वर्ष में कितने दिन के रोजगार की गारंटी दी गई है?

- (a) 90 दिन (b) 100 दिन
(c) 120 दिन (d) 150 दिन

उत्तर (b) 100 दिन

32. आर्थिक प्रगतिविधियों को महत्वपूर्ण मापदंडों के आधार पर जिन विभिन्न समूहों में वर्गीकृत किया जाता है, उन समूहों को कहते हैं-

- (a) क्षेत्रक (b) अर्थव्यवस्था
(c) कार्यशील जनसंख्या (d) आर्थिक क्रिया

उत्तर (a) क्षेत्रक

33. निम्नलिखित में से किस आधार पर क्षेत्रकों को सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में वर्गीकृत किया जाता है?

- (a) रोजगार परिस्थितियाँ
(b) आर्थिक क्रिया की प्रकृति
(c) उद्यम का स्वामित्व
(d) किसी उद्यम में काम कर रहे मजदूरों की संख्या

उत्तर (c) उद्यम का स्वामित्व

34. राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम निम्नलिखित में से किस वर्ष में लागू किया गया?

- (a) 2004 (b) 2005
(c) 2006 (d) 2007

उत्तर (b) 2005

35. वे गतिविधियाँ जिसमें सभी सेवाओं वाले व्यवसाय सम्मिलित हैं। परिवहन, संचार, व्यापार, स्वास्थ्य शिक्षा तथा प्रबंधन जैसी गतिविधियाँ किस क्षेत्रक के अंतर्गत आते हैं?

- (a) प्राथमिक क्षेत्रक (b) द्वितीयक क्षेत्रक
(c) तृतीयक क्षेत्रक (d) संगठित क्षेत्रक

उत्तर (c) तृतीयक क्षेत्रक

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

36. निम्नलिखित में से किसे प्रच्छन्न रोजगार के नाम से जाना जाता है?

- (a) अति रोजगार (b) नियमित रोजगार
(c) अल्प रोजगार (d) अनियमित रोजगार

उत्तर (c) अल्प रोजगार

37. जी.डी.पी. क्या है?

- (a) सकल दैनिक उत्पाद (b) सकल घरेलू ऊर्जा
(c) सकल घरेलू उत्पाद (d) विशाल घरेलू उत्पाद

उत्तर (c) सकल घरेलू उत्पाद

38. आर्थिक गतिविधियों को किन क्षेत्रकों में वर्गीकृत किया जाता

है?

- (a) एक-संगठित क्षेत्रक
- (b) दो-निजी क्षेत्रक, सार्वजनिक क्षेत्रक
- (c) तीन-प्राथमिक क्षेत्रक, द्वितीयक क्षेत्रक, तृतीयक क्षेत्रक
- (d) चार-प्राथमिक क्षेत्रक, द्वितीयक क्षेत्रक, तृतीयक क्षेत्रक, चतुर्थ क्षेत्रक

उत्तर (c) तीन-प्राथमिक क्षेत्रक, द्वितीयक क्षेत्रक, तृतीयक क्षेत्रक

39. कौन-सा क्षेत्रक सबसे अधिक रोजगार देता है?

- (a) प्राथमिक क्षेत्रक
- (b) द्वितीयक क्षेत्रक
- (c) तृतीयक क्षेत्रक
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (a) प्राथमिक क्षेत्रक

40. वह स्थिति जिसमें श्रमिक काम तो करते हैं परंतु वे पूर्णतया रोजगार में नहीं लगे होते। अर्थात् श्रमिकों को उनके सामर्थ्य से कम काम दिया जाता है, कहलाती हैं-

- (a) प्रच्छन्न बेरोजगारी
- (b) मौसमी बेरोजगारी
- (c) अल्प बेरोजगारी
- (d) संरचनात्मक बेरोजगारी

उत्तर (c) अल्प बेरोजगारी

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

41. वे क्षेत्र जो सरकार द्वारा पंजीकृत नहीं होते। ये छोटी-छोटी और बिखरी इकाइयाँ जो अधिकांशतः सरकारी नियंत्रण से बाहर होती हैं, इस क्षेत्रक के नियम तथा विनियम होते हैं परंतु उनका अनुपालन नहीं होता, उसे कहा जाता है-

- (a) संगठित क्षेत्रक
- (b) असंगठित क्षेत्रक
- (c) प्राथमिक क्षेत्रक
- (d) द्वितीयक क्षेत्रक

उत्तर (b) असंगठित क्षेत्रक

42. वह परिस्थिति जिसमें एक प्रक्रिया में आवश्यकता से अधिक श्रमिक काम कर रहे होते हैं। इसमें प्रत्येक व्यक्ति कुछ काम कर रहा है परंतु किसी को भी पूर्ण रोजगार प्राप्त नहीं है, उसे कहा जाता है-

- (a) मौसमी बेरोजगारी
- (b) प्रच्छन्न बेरोजगारी
- (c) अल्प बेरोजगारी
- (d) संरचनात्मक बेरोजगारी

उत्तर (b) प्रच्छन्न बेरोजगारी

43. वे गतिविधियाँ जिसके अंतर्गत प्राकृतिक उत्पादों को विनिर्माण प्रणाली के द्वारा अन्य रूपों जैसे-उद्योग, विनिर्माण कार्य,

विद्युत आदि किस क्षेत्रक के अंतर्गत आती हैं?

- (a) प्राथमिक क्षेत्रक
- (b) द्वितीयक क्षेत्रक
- (c) तृतीयक क्षेत्रक
- (d) संगठित क्षेत्रक

उत्तर (b) द्वितीयक क्षेत्रक

44. वह क्षेत्रक जिसमें परिसम्पत्तियों पर स्वामित्व, नियंत्रण तथा प्रबंधन की जिम्मेदारी एकल व्यक्ति या कंपनी के हाथों में होती है, कहलाता है।

- (a) सार्वजनिक क्षेत्रक
- (b) निजी क्षेत्रक
- (c) संगठित क्षेत्रक
- (d) असंगठित क्षेत्रक

उत्तर (b) निजी क्षेत्रक

45. असंगठित क्षेत्रक के सदस्य कौन हैं?

- (a) भूमिहीन कृषि श्रमिक
- (b) छोटे और सीमांत किसान
- (c) फसल बटाईदार और कारीगर
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

46. वे गतिविधियाँ जो कि मनुष्य के प्राकृतिक पर्यावरण से जुड़ी हैं; जैसे-शिकार, मत्स्यपालन, पशुपालन, कृषि, वनोत्पाद, खनिज आदि किस क्षेत्रक के अंतर्गत आते हैं?

- (a) प्राथमिक क्षेत्रक
- (b) द्वितीयक क्षेत्रक
- (c) तृतीयक क्षेत्रक
- (d) संगठित क्षेत्रक

उत्तर (a) प्राथमिक क्षेत्रक

47. वे उद्यम अथवा कार्यक्षेत्र जिनमें नियमित रोजगार अवधि होती है, जो सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं व जहाँ नियमों एवं विनियमों का पालन किया जाता है, कहलाता है?

- (a) प्राथमिक क्षेत्रक
- (b) द्वितीयक क्षेत्रक
- (c) संगठित क्षेत्रक
- (d) असंगठित क्षेत्रक

उत्तर (c) संगठित क्षेत्रक

48. किसी विशेष वर्ष में प्रत्येक क्षेत्रक द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य का जोड़ कहलाता है-

- (a) प्रति व्यक्ति आय
- (b) राष्ट्रीय आय
- (c) सकल घरेलू उत्पाद
- (d) औसत आय

उत्तर (c) सकल घरेलू उत्पाद

49. भारत में सकल घरेलू उत्पाद के लिए आँकड़ों को एकत्र करने का दायित्व किस पर है?

- (a) योजना आयोग पर
- (b) केन्द्रीय सतर्कता आयोग पर

(c) केन्द्र सरकार के मंत्रालय पर

(d) सांख्यिकी संगठन पर

उत्तर (c) केन्द्र सरकार के मंत्रालय पर

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम में पारित किया गया। (2005, 2006)

उत्तर : 2005

2. निजी क्षेत्र की गतिविधियों का उद्देश्य होता है। (सार्वजनिक लाभ, निजी लाभ)

उत्तर : निजी लाभ

3. क्षेत्र भारत की जी.डी.पी. में सबसे अधिक योगदान देता है। (तृतीयक, चतुर्थक)

उत्तर : तृतीयक

4. राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम के अंतर्गत 1 वर्ष में दिन के रोजगार की गारंटी दी गई है। (100, 150)

उत्तर : 100

5. प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करके उत्पादित माल की श्रेणी में आता है।

उत्तर प्राथमिक क्षेत्र

6. अर्थव्यवस्था के क्षेत्र हैं। (तीन, चार)

उत्तर : तीन

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

7. द्वितीयक क्षेत्र का दूसरा नाम है।

उत्तर औद्योगिक क्षेत्र

8. तृतीयक क्षेत्र का दूसरा नाम है।

उत्तर सेवा क्षेत्र

9. तृतीयक क्षेत्र देश में एक बड़ा क्षेत्र है।

उत्तर विकसित

10. परिवहन, संचार और बैंकिंग क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

उत्तर तृतीयक

सही या गलत बताइए

1. चीनी व गुड़ बनाना तृतीयक क्षेत्र का उत्पाद है।

उत्तर : गलत

2. खुली बेरोजगारी में काम करने के इच्छुक लोगों को काम मिलता है।

उत्तर : गलत

3. निजी क्षेत्र की गतिविधियों का सामाजिक कल्याण होता है।

उत्तर : गलत

4. लकड़ी काटना प्राथमिक क्षेत्र का उत्पादक है।

उत्तर : सही

5. स्वामित्व के आधार पर उद्योगों को चार वर्गों में बाँटा जाता है।

उत्तर : सही

6. तृतीयक क्षेत्र भारत में महत्व प्राप्त कर रहा है।

उत्तर सही

7. लोग संगठित क्षेत्र में नौकरी की सुरक्षा की उम्मीद नहीं कर सकते।

उत्तर सही

8. जीडीपी का अधिकतम हिस्सा सार्वजनिक क्षेत्र से आता है।

उत्तर सही

9. असंगठित क्षेत्र में नियुक्ति पत्र का प्रावधान नहीं है।

उत्तर सही

10. असंगठित क्षेत्र सरकार के साथ पंजीकृत हैं।

उत्तर गलत

व्याख्या :

अति लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. जब हम प्राकृतिक संसाधनों का शोषण करके एक वस्तु का उत्पादन करते हैं, उसे किस क्षेत्र की क्रिया कहते हैं?

उत्तर :

प्राथमिक क्षेत्र।

2. द्वितीयक क्षेत्र की क्रियाओं की परिभाषा दे।

उत्तर :

द्वितीयक क्षेत्र में वे क्रियाएँ सम्मिलित होती हैं जिन्हें प्राकृतिक विनिर्माण द्वारा अन्य रूपों में बदला जाता है।

3. आर्थिक क्रियाएँ क्या हैं? कुछ उदाहरण दो।

उत्तर :

वे सभी क्रियाएँ, जिनसे लोगों को कोई-न-कोई आय होती है, आर्थिक क्रियाएँ कहलाती हैं। अथवा

वे सभी क्रियाएँ जिनका संबंध संपत्ति तथा वस्तुओं के उत्पादन, वितरण तथा उपभोग से होता है, आर्थिक क्रियाएँ कहलाती हैं।

उदाहरण-

1. एक चिकित्सक द्वारा रोगी का इलाज करना।

2. अध्यापक का विद्यालय में पढ़ाना।
3. एक श्रमिक का फैक्ट्री में काम करना।
4. ये क्रियाएँ स्वयं वस्तुएँ उत्पन्न नहीं करती अपितु वे उत्पादन प्रक्रिया में सहायता करती हैं उन्हें कौन-सी क्रिया कहते हैं?

उत्तर :

तृतीयक क्षेत्र की क्रियाएँ।

5. आर्थिकेतर क्रियाएँ क्या हैं? कुछ उदाहरण दो।

उत्तर :

ऐसी क्रियाएँ, जिनसे कोई आय प्राप्त नहीं होती, उन्हें आर्थिकेतर क्रियाएँ कहा जाता है। उदाहरण—

1. एक अध्यापक द्वारा घर में अपने बेटे को पढ़ाना।
2. गृहिणी का घर में काम करना।
3. बेटे द्वारा पिता की कार को धोना।
6. 1973 तक सबसे बड़ा उत्पादक क्षेत्र कौन-सा था?

उत्तर :

प्राथमिक क्षेत्र।

7. 2003 में सबसे बड़ा उत्पादक क्षेत्र कौन-सा था?

उत्तर :

तृतीयक क्षेत्र।

8. प्राथमिक क्रियाएँ क्या हैं?

उत्तर :

वे क्रियाएँ, जिनका सीधा संबंध भूमि तथा जल से होता है, जैसे—पशु-पालन, कृषि, शिकार, मत्स्य पालन, खनन आदि। विकासशील देशों के अधिकतर लोग प्राथमिक क्षेत्र में ही कार्यरत रहते हैं।

गेहूँ, कोयले तथा संगमरमर का उत्पादन कुछ प्राथमिक क्षेत्र के उदाहरण हैं।

9. नरेगा को कब लागू किया गया?

उत्तर :

2005 में।

10. जी. डी. पी. का अर्थ है सकल घरेलू उत्पाद। यह क्या दर्शाता है?

उत्तर :

यह दर्शाता है कि दिए हुए वर्ष में कुल उत्पादन के संदर्भ में एक देश की अर्थव्यवस्था कितनी बड़ी है।

11. अतिरिक्त रोजगार के सृजन के दो उपाय बताइए।

उत्तर :

1. अर्द्ध-ग्रामीण क्षेत्रों में उन उद्योगों और सेवाओं को बढ़ावा देना जहाँ बहुत अधिक लोग नियोजित किए जा सकें।
2. पर्यटन अथवा क्षेत्रीय शिल्प उद्योग को बढ़ावा देना।

12. संगठित क्षेत्र का एक लाभ बताइए।

उत्तर :

संगठित क्षेत्र में कर्मचारियों को सवेतन छुट्टी, अवकाश काल में भुगतान, भविष्य निधि जैसी सुविधाएँ प्राप्त होती हैं।

13. उत्पादन के कारकों से आप क्या समझते हैं। उत्पादन के किन्हीं तीन कारकों के नाम बताओ।

उत्तर :

ये संसाधन आर्थिक क्रियाओं के लिए बहुत जरूरी होते हैं, क्योंकि ये वस्तुओं के उत्पादन में सहायता करते हैं।

भूमि, श्रमिक, उद्यम तथा संपत्ति उत्पादन के चार मूलभूत कारक हैं।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

14. नरेगा (NREGA) क्या है?

उत्तर :

राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी एक्ट।

15. तृतीयक क्षेत्र की क्रियाएँ क्या हैं?

उत्तर :

ये वे सहायक सेवाएँ हैं, जिनकी प्राथमिक तथा द्वितीयक क्षेत्र की क्रियाओं को क्रियान्वित करने के लिए जरूरत पड़ती है। बैंकिंग, बीमा, परिवहन, संचार आदि तृतीयक क्षेत्र की क्रियाएँ हैं।

16. निजी क्षेत्र क्या है?

उत्तर :

ऐसी अर्थव्यवस्था, जिसमें आर्थिक संस्थाओं पर एक व्यक्ति का स्वामित्व, प्रबंधन तथा नियंत्रण होता है। निजी क्षेत्र का मुख्य उद्देश्य अधिकतम लाभ कमाना होता है। उदाहरण के लिए कृषि के लिए खेत, मछली पालन इकाइयाँ, थोक की दुकानें आदि।

17. असंगठित क्षेत्र कौन से हैं?

उत्तर :

वह क्षेत्र जिन पर कोई सरकारी अधिनियम लागू नहीं होता तथा इनमें मजदूरों का शोषण किया जाता है।

18. संगठित क्षेत्र का अर्थ बताइए।

उत्तर :

वह उद्यम स्थान जिनमें नियमित रूप से कार्य होता है तथा नियमित रूप से वेतन मिलता है। यह क्षेत्र सरकार द्वारा पंजीकृत होता है।

19. तृतीयक क्षेत्र की परिभाषा दीजिए।

उत्तर :

वह क्षेत्र जो प्राथमिक तथा द्वितीयक क्षेत्र को सरल बनाने के लिए सेवाएँ प्रदान करता है, जैसे यातायात, बैंकिंग, बीमा आदि सेवाएँ।

20. प्राथमिक क्षेत्र का क्या अर्थ है?

उत्तर :

वह क्षेत्र जिसमें प्राकृतिक साधनों का प्रयोग करके वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है जैसे कृषि, पशुपालन इत्यादि।

21. द्वितीयक क्षेत्रक की कुछ गतिविधियाँ बताओ।

उत्तर :

निर्माण उद्योग, कुटीर उद्योग, छोटे उद्योग आदि जिनमें प्राकृतिक साधनों को दूसरे उपयोगी पदार्थों में परिवर्तित किया जाता है।

22. अल्प रोजगार का अर्थ बताइए।

उत्तर :

जब लोग काम करने को तैयार हों पर इन्हें क्षमता के अनुसार काम करने को न मिले।

23. तृतीयक क्षेत्रक की कुछ गतिविधियों के नाम बताओ।

उत्तर :

परिवहन, संचार, बैंकिंग सेवाएँ तथा बीमा सेवाएँ, घरेलू तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार आदि।

24. मध्यवर्ती वस्तुएँ क्या हैं?

उत्तर :

वह पदार्थ जो आगे उत्पादन में सहायक होते हैं।

25. प्राथमिक क्षेत्रक की गतिविधियाँ बताओ।

उत्तर :

कृषि/पशुपालन, मछली पालन, मुर्गी पालन, डेयरी फार्मिंग, वनारोपन आदि।

26. अन्तिम पदार्थ क्या होते हैं?

उत्तर :

वह पदार्थ जो उपभोग के लिए तैयार होते हैं तथा इनका कोई आगे निर्माण नहीं हो सकता। जैसे उपभोग पदार्थ, फ्रिज, टी. वी. आदि।

27. चतुर्थक क्रियाएँ कौन-सी हैं?

उत्तर :

सूचना तथा टेक्नोलॉजी (I.T.), अनुसंधान कार्य आदि।

28. भारत में कौन-सा क्षेत्र अधिक विस्तारित हैं-संगठित अथवा असंगठित?

उत्तर :

असंगठित।

29. भारत में इस समय अधिक लोग किस क्षेत्र में नियोजित हैं?

उत्तर :

प्राथमिक क्षेत्र।

30. कौन-सा क्षेत्रक सबसे अधिक रोजगार देता है?

उत्तर :

प्राथमिक क्षेत्रक।

31. भारत में किस क्षेत्रक ने अधिकतम विकास दर दिखाई है?

उत्तर :

तृतीयक क्षेत्र।

32. अल्प बेरोजगारी क्या है?

उत्तर :

वह स्थिति जिसमें श्रमिक काम तो करते हैं परन्तु वे पूर्णतया रोजगार में नहीं लगे होते। श्रमिकों को अपने सामर्थ्य से कम काम दिया जाता है।

33. भारत में सकल घरेलू उत्पाद (G.D.P.) के लिए आँकड़ों को एकत्र करने का दायित्व किस पर है?

उत्तर :

भारत में जी.डी.पी. मापन जैसा कठिन कार्य केन्द्र सरकार के मंत्रालय द्वारा किया जाता है। यह मंत्रालय राज्यों एवं केन्द्र शासित क्षेत्रों के विभिन्न सरकारी विभागों की सहायता से वस्तुओं और सेवाओं की कुल संख्या और उनके मूल्य से संबंधित सूचनाएँ एकत्र करता है और तब जी.डी.पी. का अनुमान करता है।

34. बुनियादी सेवाएँ क्या हैं?

उत्तर :

किसी भी देश में अनेक सेवाओं, जैसे-अस्पताल, शैक्षिक संस्थाएँ, डाक एवं तार सेवा, थाना, कचहरी, ग्रामीण प्रशासनिक कार्यालय, नगर निगम, रक्षा, परिवहन, बैंक, बीमा कंपनी इत्यादि की आवश्यकता होती है। इन्हें बुनियादी सेवाएँ माना जाता है।

35. सकल घरेलू उत्पाद (G.D.P.) क्या है?

उत्तर :

किसी विशेष वर्ष में प्रत्येक क्षेत्रक द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य, उस वर्ष में क्षेत्रक के कुल उत्पादन की जानकारी प्रदान करता है।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. उचित उदाहरणों की सहायता से समझाइए कि सेवा क्षेत्रक का कौन-सा भाग महत्व में नहीं बढ़ रहा है।

उत्तर :

सेवा क्षेत्रक का निम्न भाग महत्व में नहीं बढ़ रहा है

1. असंगठित क्षेत्र-सेवा क्षेत्रक का असंगठित क्षेत्र महत्व में नहीं बढ़ रहा है।
2. छोटे दुकानदार, मरम्मत करने वाले व्यक्ति-इस क्षेत्र में काफी लोग काम कर रहे हैं। जैसे छोटे-छोटे दुकानदार, मरम्मत करने वाले लोग। इनकी आय नियमित नहीं है।
3. अनियमित कर्मचारी- सेवा क्षेत्र में अनियमित कर्मचारी भी महत्व में आगे नहीं बढ़ रहे हैं। इन लोगों को प्रतिदिन रोजगार तलाश करना पड़ता है। इनमें से कई लोगों को रोज काम नहीं मिलता।

2. आर्थिक तथा अनार्थिक क्रियाओं में अन्तर बतायें। अन्तर के केवल दो बिन्दु लिखें।

उत्तर :

आर्थिक तथा अनार्थिक क्रियाओं में अन्तर-

आर्थिक क्रियाएँ	अनार्थिक क्रियाएँ
1. आर्थिक क्रियाएँ वे मानवीय क्रियाएँ हैं जो धन के उत्पादन, विनिमय, वितरण और उपयोग से संबंध रखती हैं।	1. अनार्थिक क्रियाएँ वे मानवीय क्रियाएँ हैं जो सेवा भाव तथा जनकल्याण से संबंध रखती हैं।
2. आर्थिक क्रियाओं का वैधानिक होना आवश्यक है।	2. अनार्थिक क्रियाएँ अवैधानिक भी हो सकती हैं।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

3. संगठित तथा असंगठित क्षेत्रों में अन्तर स्पष्ट करें।

उत्तर :

संगठित क्षेत्र	असंगठित क्षेत्र
1. ये क्षेत्र सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं।	1. ये क्षेत्र सरकार द्वारा पंजीकृत नहीं होते हैं।
2. रोजगार की अवधि नियमित होती है।	2. रोजगार की अवधि नियमित नहीं होती है।
3. इस क्षेत्र को अनेक सरकारी नियमों एवं विनियमों का पालन करना होता है। जैसे- कारखाना अधिनियम, न्यूनतम मजदूरी अधिनियम आदि।	3. इस क्षेत्र को किसी अधिनियम का पालन नहीं करना होता।
4. इस क्षेत्र में बैंक, अस्पताल, स्कूल आदि शामिल हैं।	4. इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में वे लोग भी शामिल हैं, जो छोटे काम करते हुए स्व-रोजगार में लगे हैं।

4. भारत में पाई जाने वाली बेरोजगारी के कोई तीन प्रकार समझाइए।

उत्तर :

भारत में निम्न प्रकार की बेरोजगारी पाई जाती है-

1. **प्रच्छन्न बेरोजगारी**-प्रच्छन्न बेरोजगारी उस स्थिति में विद्यमान होती है जब एक श्रम की सीमान्त भौतिक उत्पादकता शून्य होती है या कभी-कभी ऋणात्मक होती है। दूसरे शब्दों में प्रच्छन्न बेरोजगारी की स्थिति एक काम करने के लिए जितने श्रमिकों की आवश्यकता होती है

उससे अधिक श्रमिक उस काम में लगे होते हैं। यदि कुछ श्रमिक हटा दिए जायें तो कुल उत्पाद में कमी नहीं होगी। भारत के ग्रामीण क्षेत्र में प्रच्छन्न बेरोजगारी की समस्या काफी गंभीर है, भारत में यह बेरोजगारी 25% तथा 30% के बीच में है।

2. **मौसमी बेरोजगारी**-भारत एक कृषि प्रधान देश है और कृषि एक मौसमी व्यवसाय है। यह बेरोजगारी मौसम में परिवर्तन के फलस्वरूप पैदा होती है। भारत में लगभग 166 लाख लोग मौसमी बेरोजगार हैं।
3. **औद्योगिक बेरोजगारी**-भारत में औद्योगिक बेरोजगारी के उत्पन्न होने के कई कारण हैं। पहला कारण उत्पादन में पूँजी प्रधान तकनीक को अपनाना। दूसरा कारण गाँव के लोगों को शहर में नौकरी करने आना। गाँवों के लोगों के शहर में आने के कारण औद्योगिक शहरों में श्रमिकों की संख्या बढ़ गई है परन्तु भारत में अभी इतने उद्योग स्थापित नहीं हुए कि बढ़ती हुई श्रम-शक्ति को अपने में खपा सके।

5. अर्थव्यवस्था के वित्तीय क्षेत्रों में समय के साथ आये बदलावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

1. कृषि क्षेत्र में, कृषि प्रणाली परिवर्तित हो गई है। रासायनिक कीटनाशक दवाओं के उपयोग से नकदी फसलों के उत्पादन में वृद्धि हुई है। वर्षा पर निर्भरता कम हो गई है। कृषि में आधुनिक उपकरणों का उपयोग बढ़ा है।
 2. विनिर्माण उद्योग में नई मशीनों और औजारों का उपयोग हो रहा है। फैक्ट्रियाँ फैल रही हैं। कुल उत्पादन और रोजगार की दृष्टि से द्वितीयक क्षेत्र सबसे महत्वपूर्ण हो गया है।
 3. सेवा क्षेत्र में नई सेवाएँ जुड़ रही हैं तथा लगातार बढ़ रही हैं। इस क्षेत्र में ज्ञान प्रक्रिया बाह्यस्त्रोतीकरण महत्वपूर्ण बन गया है।
6. असंगठित क्षेत्र में श्रमिकों का शोषण किया जाता है। क्या आप इस विचार से सहमत हैं? अपने उत्तर के समर्थन में कारण दीजिए।

उत्तर :

हाँ, निम्नलिखित कारणों के कारण असंगठित क्षेत्र में श्रमिकों का शोषण किया जाता है-

1. असंगठित क्षेत्र में श्रमिकों के लिए नौकरी की सुरक्षा नहीं होती है, क्योंकि उन्हें बिना किसी कारण नौकरी से निकाला जा सकता है।
2. उन्हें कम छुट्टियाँ दी जाती हैं तथा बीमारी आदि की छुट्टियों के लिए भुगतान नहीं किया जाता है।
3. कई बार उन्हें अतिरिक्त समय लगाना पड़ता है, जिसके लिए उन्हें कोई भुगतान नहीं किया जाता है।
4. सामान्यतया, असंगठित क्षेत्र में अनियमित कार्य प्राप्त होता है तथा जब कार्य अधिक नहीं होता तो नियोक्ता

श्रमिकों को नौकरी से निकाल देता है।

7. तृतीयक क्षेत्र की गतिविधियाँ क्या हैं? उदाहरण दें।

उत्तर :

तृतीयक क्षेत्र की गतिविधियों में सभी सेवाओं वाले व्यवसाय सम्मिलित हैं। परिवहन, संचार, व्यापार, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा प्रबंधन तृतीयक क्षेत्र के कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

ये गतिविधियाँ प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रों के विकास में मदद करती हैं। ये गतिविधियाँ स्वतः वस्तुओं का उत्पादन नहीं करती बल्कि उत्पादन-प्रक्रिया में सहयोग या मदद करती हैं। इसीलिए इन्हें सेवा क्षेत्र भी कहते हैं।

8. एक संगठित क्षेत्र क्या है? इसके कोई तीन लाभ लिखें।

उत्तर :

संगठित क्षेत्र—संगठित क्षेत्र को औपचारिक क्षेत्र भी कहते हैं। यह वह क्षेत्र है जिसमें श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा के लाभ (जैसे भविष्य निधि, उपदान, पेंशन आदि) प्राप्त होते हैं। इसके कर्मचारी श्रम संघ बना सकते हैं। इस क्षेत्र में काम करने वाले कर्मचारी नियमित होते हैं।

संगठित क्षेत्र के लाभ—

1. संगठित क्षेत्र के श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा के लाभ प्राप्त होते हैं।
2. श्रमिक अपने हितों की रक्षा के लिए श्रम संघ बना सकते हैं।
3. यदि उनसे अतिरिक्त काम लिया जाता है, तो उस अतिरिक्त काम का अतिरिक्त भुगतान किया जाता है।

9. असंगठित क्षेत्र से आप क्या समझते हैं? इसकी कोई तीन हानियाँ लिखें।

उत्तर :

असंगठित क्षेत्र—इस क्षेत्र को अनौपचारिक क्षेत्र भी कहा जाता है। इस क्षेत्र के उद्योग सरकारी नियंत्रण से बाहर होते हैं। इस क्षेत्र में काम करने वाले कर्मचारियों को अनौपचारिक श्रमिक कहते हैं।

हानियाँ—असंगठित क्षेत्र की निम्नलिखित हानियाँ हैं—

1. इस क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिकों को नौकरी की सुरक्षा प्राप्त नहीं होती।
2. श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा के लाभ प्राप्त नहीं होते।
3. इस क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिकों का वेतन काफी कम होता है।
4. इस क्षेत्र के श्रमिक श्रम संघ नहीं बना सकते।

10. सार्वजनिक क्षेत्र से यह आशा क्यों की जाती है कि वह लागत पर कुछ वस्तुओं को उपलब्ध करवाएँ?

उत्तर :

निम्नलिखित कारणों से सार्वजनिक क्षेत्र को कुछ वस्तुएँ उचित लागत/कीमत पर उपलब्ध करवानी चाहिए—

1. सार्वजनिक क्षेत्र का उद्देश्य केवल लाभ अर्जित करना नहीं

है अपितु जनकल्याण तथा सामाजिक लाभ के बारे में भी विचार करना चाहिए।

2. कुछ वस्तुओं का उत्पादन करना निजी क्षेत्र की क्षमता के बाहर है क्योंकि उन वस्तुओं के उत्पादन में काफी धन की आवश्यकता होती है।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

11. विकसित तथा विकासशील देशों में अर्थव्यवस्था के क्षेत्रों पर बढ़ती हुई जनसंख्या के प्रभाव का वर्णन करें।

उत्तर :

1. विकासशील देशों में कार्य में नहीं लगी हुई आश्रित जनसंख्या में बच्चे तथा बूढ़े लोग आते हैं और उनकी कुल संख्या कार्यरत (कार्यशील) जनसंख्या की तुलना में अधिक होती है। इसका अर्थ है कि कार्य में लगा हुआ प्रत्येक व्यक्ति जनसंख्या के बड़े हिस्से को पालन-पोषण में सहायता देता है। इतनी नौकरियाँ उपलब्ध नहीं होतीं जितने कि नौजवान नौकरियों की तलाश में जुटे होते हैं। विकासशील देशों में होशियार बच्चे विकसित देशों में अपने लिए व्यवसायों की तलाश करते हैं जिसके फलस्वरूप मस्तिष्क पलायन या निष्कासन की स्थिति उत्पन्न होती है।
2. विकसित देशों में जनसंख्या तीव्र गति से नहीं बढ़ती। इन देशों में नौकरी की तलाश करने वाले नौजवानों की संख्या कम होती है। इसलिए इन्हें अपने ही देश में नौकरियाँ मिल जाती हैं। इन देशों में आश्रित वृद्धों और बच्चों की संख्या कम होती है। इन देशों में अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएँ प्राप्त होने के कारण जीवन प्रत्याशा लम्बी होती है और उनकी कार्यक्षमता भी अधिक होती है लेकिन कुल मिलाकर आश्रित जनसंख्या की तुलना में कार्यशील जनसंख्या अधिक होती है। इन देशों में जीवन स्तर ऊँचा होता है और प्रति व्यक्ति आय भी अधिक होती है।

12. देश का सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) क्या है? भारत में जी.डी.पी. को मापने का कार्य कौन करता है?

उत्तर :

किसी एक वर्ष विशेष के दौरान प्रत्येक क्षेत्र में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं से उस साल संबंधित क्षेत्र के कुल उत्पादन का आंकड़ा हासिल किया जाता है। इस प्रकार संबंधित सभी क्षेत्रों के उत्पादन के गुणक से सकल घरेलू उत्पाद यानी जीडीपी की गणना की जाती है।

भारत में जीडीपी को मापने का दुरुह एवं विशाल कार्य भारत सरकार से संबंधित मंत्रालय द्वारा संपन्न किया जाता है। केंद्र सरकार का संबंधित मंत्रालय भारत के सभी राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों के विभिन्न सरकारी विभागों से वस्तुओं एवं सेवाओं के अनुमानित आँकड़ों एवं उनकी कीमतों की सभी सूचना एकत्रित करके जीडीपी का अनुमान लगाता है।

13. व्याख्या कीजिए कि किसी देश के आर्थिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्रक कैसे योगदान करता है?

उत्तर :

किसी देश के आर्थिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्रक निम्न प्रकार से योगदान करता है-

1. यह बुनियादी संरचनाओं के निर्माण एवं विस्तार द्वारा तीव्र आर्थिक विकास को प्रेरित करता है।
2. यह रोजगार के अवसर पैदा करता है।
3. यह विकास के लिए वित्तीय संसाधन जुटाता है।
4. यह आय एवं सम्पत्ति की समानता लाता है।
5. यह लघु एवं कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित करता है।
6. यह संतुलित क्षेत्रीय विकास को प्रोत्साहित करता है।
7. यह निजी एकाधिकार को नियंत्रित करता है।
8. यह सस्ती दरों पर आसानी से वस्तुओं की उपलब्धता को सुनिश्चित करता है।

14. भारत एक विकासशील देश है। इस देश के अधिकांश लोग अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्रक में कार्यरत हैं। ऐसा क्यों?

उत्तर :

भारत में द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रक धीमी गति से विकसित हो रहे हैं इसलिए यहाँ प्राथमिक क्षेत्रक में ही जनसंख्या की जीविका का अधिक भार है। यहाँ के तृतीयक क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कंपनियों का ही प्रबल नियंत्रण है। कुटीर उद्योग पूरी तरह उपेक्षित हैं और लगभग ऐसे सभी उद्योग बन्द होने की दशा में हैं।

केवल चन्द धनी व्यष्टियों का द्वितीयक क्षेत्रक में एकाधिकार है। वे अपने भारतीय भाइयों को रोजगार देने के स्थान पर विदेशी नागरिकों और फर्म से काम कराने को अधिक महत्व देते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी विकसित हो जाने के बाद उनके लिए ऐसा करना और आसान हो गया है। विश्व व्यापार संगठन के सचिवीय सम्मेलन के आदेशों का मौन अनुपालन करते हुए यहाँ श्रम कानूनों को बेहद लचीला बनाकर पूँजीवादी प्रकृति का सामंतवाद स्थापित कर दिया गया है। विश्व व्यापार संगठन कहने भर को संयुक्त राष्ट्र संघ की एक एजेन्सी है लेकिन वस्तुतः यह अमरीकी वर्चस्व के पिंजरे का तोता या पालतू पक्षी है।

15. भारतीय अर्थव्यवस्था में प्राथमिक क्षेत्रक के महत्व के कोई चार बिन्दु लिखें।

उत्तर :

भारतीय अर्थव्यवस्था में प्राथमिक क्षेत्रक के महत्व के चार बिन्दु निम्नलिखित हैं-

1. यह अधिकांश जनसंख्या की आजीविका का आधार है।
2. इस क्षेत्रक में उन क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है जो प्राकृतिक संसाधनों का प्रत्यक्ष रूप से प्रयोग करती है।
3. अंतिम रूप में जो वस्तुओं का निर्माण करते हैं यह क्षेत्रक उन सबका आधार है।
4. यह क्षेत्रक अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रकों का आधार है।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

16. भारत में सेवा क्षेत्रक की वृद्धि के लिए किन्हीं तीन कारणों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

1. जैसे-जैसे आय बढ़ती है, कुछ वर्ग के लोग कई सेवाओं जैसे रेस्तराँ, शॉपिंग, निजी अस्पताल, निजी विद्यालय की माँग शुरू कर देते हैं।
2. कृषि एवं उद्योग के विकास से परिवहन, व्यापार भंडारण जैसी सेवाओं का विकास होता है।
3. बहुत बड़ी संख्या में लोग छोटी दुकानों, मरम्मत कार्यों जैसी सेवाओं में लगे हैं।
4. वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित नवीन सेवाएँ जैसे-कॉल सेंटर, इंटरनेट, ए.टी.एम. इत्यादि विकसित हुए हैं।

17. शहरी क्षेत्रों में किस प्रकार रोजगार को बढ़ाया जा सकता है?

उत्तर :

शहरी क्षेत्रों में रोजगार बढ़ाने के उपाय- शहरी क्षेत्र में निम्न तरीकों से रोजगार को बढ़ाया जा सकता है-

1. वर्तमान शिक्षा पद्धति में सुधार करके इसको स्कूली अवस्था से ही व्यवसायोन्मुख बनाना। इसके अलावा छात्रों में आत्मनिर्भरता की आदतें बचपन से ही डालनी आवश्यक है।
2. औद्योगिक क्रियाकलापों के सुदूर एवं पिछड़े हुए गाँवों तक विस्तार देने की ठोस कार्यवाही अपेक्षित है।
3. बैंकों से स्वरोजगार हेतु प्रोत्साहित करने के लिए न्यूनतम ब्याज दरों पर ऋण उपलब्ध कराया जाए और कुटीर उद्योग-धंधों का प्रोन्नयन किया जाए।
4. न्यूनतम पूँजी निवेश वाली उत्पादन की प्राविधियाँ विकसित की जाएँ।

18. उन उपायों को बताइए जिन्हें आप असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों के संरक्षण में सहायक मानते हैं।

उत्तर :

असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों के संरक्षण के लिए निम्न उपाय सुझाए जा सकते हैं-

1. भारत में ग्रामीण परिवारों का लगभग 80% भाग छोटे एवं सीमान्त किसानों की श्रेणी में है, जो असंगठित क्षेत्रक के अन्तर्गत आता है। इन किसानों को उन्नत बीजों की समय पर आपूर्ति, कृषि आगतें, ऋण भंडारण और विपणन सुविधाओं के माध्यम से सहायता पहुँचाने की आवश्यकता है।
2. सरकार को चाहिए कि वह लघु उद्योगों की कच्चे माल प्राप्त करने और उत्पादों के विपणन में सहायता करें।
3. सरकार को असंगठित क्षेत्रक के लिए न्यूनतम मजदूरी निश्चित कर उसे ईमानदारी से लागू करना चाहिए।
4. सरकार को इस क्षेत्रक में श्रमिकों के संरक्षण हेतु वर्तमान कानूनों को कड़ाई से लागू करना चाहिए।

19. वह उपाय बताइए जिनसे असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों की सुरक्षा की जा सकती है।

उत्तर :

निम्नलिखित उपाय असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों की सुरक्षा करने में सहायता करेंगे-

1. असंगठित क्षेत्रक में सरकार को कुछ नियम एवं नियमन बनाने चाहिए।
2. लोगों को उस असंगठित क्षेत्र में काम करना चाहिए, जहाँ काम नियमित हो।
3. लोगों को उस क्षेत्र में काम करना चाहिए, जहाँ उचित और तत्काल भुगतान प्राप्त हो तथा काम की सुरक्षा हो।

20. भारत में तृतीयक क्षेत्र का महत्व क्यों बढ़ता जा रहा है?

अथवा

भारत में तृतीयक क्षेत्र के महत्व के बढ़ने के चार कारण लिखें।

उत्तर :

भारत में तृतीयक क्षेत्र के महत्व के बढ़ने के चार कारण निम्नलिखित हैं-

1. भारत एक विकासशील देश है। अस्पताल, शैक्षणिक संस्थानों, बैंकिंग, बीमा कंपनियों आदि की सेवाओं को उपलब्ध करवाना देश का दायित्व होता है।
2. उद्योग तथा कृषि के विकास से परिवहन, व्यापार, संग्रहण आदि कई प्रकार की सेवाओं का विकास होता है। भारत में दिन-प्रतिदिन प्राथमिक तथा द्वितीयक क्षेत्रक का विकास होता जा रहा है।
3. भारत में दिन-प्रतिदिन आय का स्तर बढ़ता जा रहा है और लोगों के विशेष वर्ग ने व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थानों, निजी स्कूलों, निजी अस्पतालों की सेवाओं की माँग करनी शुरू कर दी है।
4. पिछले कुछ दशकों में सूचना प्रसारण आदि सेवाएँ महत्वपूर्ण और आवश्यक बन रही हैं।

21. शिक्षा के क्षेत्र में अधिक रोजगार सृजन क्यों किया जा सकता है? कोई तीन कारण लिखिए।

उत्तर :

1. विद्यालय जाने वाले के आयु-वर्ग में लगभग 20 करोड़ बच्चे हैं। इनमें लगभग दो-तिहाई ही विद्यालय जाते हैं।
2. उच्च अनुपात में बच्चे स्कूल छोड़ देते हैं।
3. यहाँ विद्यालय और शिक्षकों की भी कमी है। इस प्रकार ज्यादा रोजगार सृजन किया जा सकता है।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. भारतीय अर्थव्यवस्था में द्वितीयक क्षेत्रक के महत्व के कोई पाँच बिन्दु लिखें।

उत्तर :

1. कच्चे माल या प्राथमिक उत्पादों को यह क्षेत्रक मानव के

लिए लाभकारी वस्तु में बदलता है।

2. यह क्षेत्रक बड़े पैमाने पर मशीनों का प्रयोग करता है। इसमें पूँजी निवेश अधिक होता है। उत्पादन की नवीनतम और आधुनिक विधियों को इस्तेमाल किया जाता है। विशेष योग्यता वाले श्रमिक ही इसमें कार्य करते हैं।
3. यह क्षेत्रक कच्चे माल को अधिक मूल्यवान बनाता है तथा इसकी उपयोगिता बढ़ा देता है।
4. बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार प्रदान करता है। नवीनतम प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाता है।
5. इस क्षेत्रक के विभिन्न उद्योग परस्पर निर्भरता वाले होने से एक-दूसरे के निकट खुल जाते हैं। एक उद्योग का अंतिम उत्पाद दूसरे उद्योग का कच्चा माल होता है। अतः शीघ्र ही वहाँ एक शहर बस जाता है।
6. द्वितीयक क्षेत्रक लोगों में आत्मनिर्भरता लाते हैं। उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों को ऊँची मजदूरियाँ मिलती हैं और इस प्रकार प्रति व्यक्ति आय स्तर ऊँचा उठता है।
7. विनिर्माण उद्योग बड़े पैमाने पर उत्पादन करते हैं तथा अतिरिक्त उत्पादन का बड़ी मात्रा में अन्य देशों को निर्यात करके बहुमूल्य विदेशी मुद्रा अर्जित की जाती है। इस विदेशी मुद्रा से नवीनतम प्रौद्योगिकी और उन वस्तुओं का आयात किया जा सकता है जिनका भारत में अभाव है।

नोट- कोई पाँच बिन्दु लिखें।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

2. प्राथमिक क्षेत्रक तथा द्वितीयक क्षेत्रक में अन्तर के कोई चार बिन्दु लिखें।

उत्तर :

प्राथमिक क्षेत्रक तथा द्वितीयक क्षेत्रक में अन्तर-

प्राथमिक क्षेत्रक	द्वितीयक क्षेत्रक
1. प्राथमिक क्षेत्रक में कृषि, पशुपालन, मछली पालन, खनन तथा लड़े बनाना आदि क्रियायें शामिल की जाती हैं। यह क्षेत्रक विकसित देशों में पाया जाता है।	1. द्वितीयक क्षेत्रक एक औद्योगिक क्षेत्रक है जो प्राकृतिक पदार्थों को दूसरे रूपों में बदलता है और उपभोक्ताओं के लिए उन वस्तुओं की उपयोगिता बढ़ाता है।
2. इस क्षेत्रक में प्रकृति द्वारा उपलब्ध कराई वस्तुओं के संग्रहण या उन्हें उपलब्ध करवाने की क्रियाएँ की जाती हैं।	2. यह क्षेत्रक अधिकांश विकसित देशों में पाया जाता है।
3. इस क्षेत्रक की क्रियायें खाद्य पदार्थ, रेशे, लकड़ी, खनिज पदार्थ उत्पन्न करती हैं।	3. इस क्षेत्रक की क्रियाएँ वस्तुओं का निर्माण करती हैं।

प्राथमिक क्षेत्रक		द्वितीयक क्षेत्रक	
4.	इन क्रियाओं को करने के लिए काफी श्रम की आवश्यकता पड़ती है।	4.	इस क्षेत्रक की क्रियाओं को करने के लिए कम श्रम की आवश्यकता होती है।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

3. असंगठित क्षेत्रक क्या होता है? इस क्षेत्रक की कार्य स्थितियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

इस क्षेत्रक के अन्तर्गत वे छोटी और छिटपुट इकाइयाँ आती हैं जो सामान्यतः सरकारी नियंत्रण के बाहर होती हैं। यद्यपि इनके लिए भी नियम और विनियम बने हैं, परन्तु उनका पालन नहीं होता है।

इस क्षेत्रक में निम्नलिखित कार्य स्थितियाँ हैं—

1. यहाँ कोई औपचारिक प्रक्रिया नहीं होती है। व्यक्ति को नियोक्ता द्वारा कोई औपचारिक पत्र नहीं दिया जाता है। यहाँ रोजगार में मजदूरी कम और प्रायः अनियमित होती है।
2. यहाँ रोजगार की सुनिश्चितता नहीं होती है। लोगों को नियोजक द्वारा अकारण किसी भी समय काम छोड़ने के लिए कहा जा सकता है। यहाँ काम के घटें निश्चित नहीं होते हैं। साथ ही काम के अतिरिक्त घंटों के लिए भुगतान की कोई व्यवस्था भी नहीं है।
3. लोग दैनिक मजदूरी प्राप्त करते हैं। दैनिक मजदूरी के अलावा अन्य किसी लाभ का कोई प्रावधान नहीं है। यहाँ भुगतान के साथ छुट्टी या बीमारी के कारण छुट्टी आदि की कोई व्यवस्था नहीं होती है।
4. द्वितीयक क्षेत्रक की गतिविधियों के अंतर्गत प्राकृतिक उत्पादों को विनिर्माण प्रणाली के जरिए अन्य रूपों में परिवर्तित किया जाता है। यह प्राथमिक क्षेत्रक के बाद अगला कदम है। यहाँ वस्तुएँ सीधे प्रकृति से उत्पादित नहीं होती हैं, बल्कि निर्मित की जाती हैं। इसलिए विनिर्माण की प्रक्रिया अपरिहार्य है। यह प्रक्रिया किसी कारखाना, किसी कार्यशाला या घर में हो सकती है।
 1. द्वितीयक क्षेत्रक को औद्योगिक क्षेत्रक क्यों कहा जाता है?
 2. एक देश की अर्थव्यवस्था में द्वितीयक क्षेत्रक का क्या मूल्य और महत्व है?

उत्तर :

1. द्वितीयक क्षेत्रक को औद्योगिक क्षेत्रक कहने का मुख्य कारण यह है कि यह क्षेत्रक विभिन्न प्रकार के उद्योगों से जुड़ा हुआ है, जैसे इसमें कपास के पौधे से प्राप्त रेशे का उपयोग कर हम सूत कातते और कपड़ा बुनते हैं।
2. द्वितीयक क्षेत्रक का देश की अर्थव्यवस्था में अत्यधिक मूल्य है। उद्योगों के विकास अथवा औद्योगिकरण का देश

के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। औद्योगिकरण के कारण ही इंग्लैंड जैसे छोटे देश ने प्रगति की ओर विश्व में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। औद्योगिकरण के आधार पर ही देशों का वर्गीकरण विकसित और अविकसित देशों में किया जाता है। उद्योगों के महत्व के कारण ही जवाहरलाल नेहरू ने द्वितीय पंचवर्षीय योजना में उद्योगों को विकसित करने का लक्ष्य रखा था उद्योगों के विकास के परिणामस्वरूप ही आज भारत उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है।

5. प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक क्षेत्रकों में क्या परिवर्तन हुए हैं?

उत्तर :

1. **प्राथमिक क्षेत्रक में ऐतिहासिक परिवर्तन—** प्राथमिक क्षेत्रक में निम्नलिखित परिवर्तन हुए हैं—
 - i. कृषि करने की विधियों में परिवर्तन हुआ है तथा कृषि क्षेत्रक ने उन्नति करनी आरम्भ कर दी है। इसने पहले से बहुत अधिक खाद्यान्न उत्पन्न करना शुरू कर दिया है।
 - ii. प्राथमिक क्षेत्रक में क्रय तथा विक्रय की क्रियाओं में भी बहुत वृद्धि हुई है।
 - iii. प्राथमिक क्षेत्रक में अब पहले से अधिक श्रमिक/कामगार कार्यरत हैं।
2. **द्वितीयक क्षेत्रक में ऐतिहासिक परिवर्तन—** द्वितीयक क्षेत्रक में निम्नलिखित परिवर्तन हुए हैं—
 - i. आधुनिक समय में निर्माण की नई विधियों का प्रयोग किया जाने लगा है। नये-नये कारखानों की स्थापना की गई है और द्वितीयक क्षेत्र दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।
 - ii. कृषि में काम करने वाले अधिकांश लोगों ने सस्ते दर पर कारखानों में काम करना शुरू कर दिया है। धीरे-धीरे कुल उत्पादन तथा रोजगार में द्वितीयक क्षेत्रक सबसे अधिक महत्वपूर्ण क्षेत्रक बन गया है।
3. **तृतीयक क्षेत्रक में परिवर्तन—** तृतीयक क्षेत्रक में निम्नलिखित ऐतिहासिक परिवर्तन हुए हैं—
 - i. पिछले 100 वर्षों में विकासशील देश द्वितीयक क्षेत्रक से तृतीयक क्षेत्रक की ओर अग्रसर हुए हैं।
 - ii. कुल उत्पादन के संदर्भ में सेवा क्षेत्र सबसे अधिक महत्वपूर्ण क्षेत्रक बन गया है।
 - iii. काम करने वाले व्यक्ति अब सेवाक्षेत्र में बढ़ गए हैं। यह सामान्य प्रवृत्ति सभी विकासशील देशों में है।
6. राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी अधिनियम 2005 क्या है? ग्रामीण व्यक्तियों की सहायता के लिए इस अधिनियम में क्या पग (कदम) उठाए गए हैं?

उत्तर :

राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी अधिनियम 2005– काम के अधिकार को लागू करने के केन्द्र सरकार ने 200 गाँवों के लिये यह कानून पास किया है। बाद में यह अधिनियम 600 जिलों में लागू किया गया।

नरेगा (अब मनरेगा हो गया है) 2005 के अंतर्गत ग्रामीण लोगों की सहायता के लिए निम्न कदम उठाए गए हैं–

1. यह अधिनियम सभी व्यक्तियों को जो न्यूनतम दर पर काम के इच्छुक हैं, उन्हें 100 दिनों की न्यूनतम अवधि के लिए काम देने का आश्वासन देता है।
2. कुल रोजगार का एक तिहाई भाग स्त्रियों के लिए आरक्षित किया गया है।
3. अनुरोध के 15 दिन के भीतर रोजगार प्राप्त करने का अधिकार दिया गया है। यदि इस सीमा अवधि के अंतर्गत रोजगार नहीं दिया जाता तो अनुरोध करने वाले को दैनिक बेरोजगारी भत्ता पाने का अधिकार है।
7. सकल घरेलू उत्पाद क्या है? सकल घरेलू उत्पाद की गणना करने के लिए हम विभिन्न वस्तुओं तथा सेवाओं को कैसे गिनते हैं? उदाहरण सहित समझाएँ।

अथवा

प्रत्येक क्षेत्रक के लिए हम वस्तुओं तथा सेवाओं की गणना कैसे करते हैं? सोदाहरण समझाएँ।

उत्तर :

सकल घरेलू उत्पाद–यह एक देश में एक वर्ष में उत्पादित अंतिम वस्तुओं तथा सेवाओं का बाजार मूल्य है।

सकल घरेलू उत्पाद की गणना–सकल घरेलू उत्पाद की गणना में वस्तुओं तथा सेवाओं का निम्न प्रकार से व्यवहार किया जाता है–

1. सकल घरेलू उत्पाद की गणना करते समय सभी प्रकार की सेवाओं को शामिल किया जाता है।
2. जहाँ तक वस्तुओं के शामिल होने का सम्बन्ध है, केवल अंतिम वस्तुएँ ही ली जाती हैं। मध्यवर्ती वस्तुओं को शामिल नहीं किया जाता क्योंकि मध्यवर्ती वस्तुओं को शामिल करने से दोहरी गणना हो जाती है।

उदाहरण– मान लीजिए एक किसान गेहूँ का उत्पादन करता है और उसे 4000 रुपये में आटा मिल मालिक को बेच देता है। आटा मिल मालिक उसका आटा बना कर उसे 6,000 रुपये में डबल रोटी बनाने वाले को बेच देता है। डबल रोटी वाला उसकी डबल रोटी बनाकर उसे 8,000 रुपये में दुकानदार को बेच देता है। दुकानदार डबल रोटियों को अंतिम उपभोक्ता को 9,000 रुपये में बेच देता है। इस प्रकार–

$$\begin{aligned}\text{उत्पादन का मूल्य} &= 4,000 + 6,000 + 8,000 + 9,000 \\ &= 27,000 \text{ ₹}\end{aligned}$$

दोहरी गणना के कारण उत्पादन का मूल्य बढ़ कर 27,000 रुपये हो जाता है, जबकि वास्तव में केवल 9,000

रुपयें के मूल्य का उत्पादन हुआ है। इसका कारण यह है कि गेहूँ का मूल्य चार बार, आटे का मूल्य तीन बार, बेकरी वाले की सेवाओं का मूल्य दो बार जोड़ा गया है। अन्य शब्दों में गेहूँ का मूल्य तथा आटा बनाने वाले और बेकरी बनाने वाले की सेवाओं का मूल्य दो बार जोड़ा गया है।

8. भारत जैसे देश में सार्वजनिक क्षेत्र की गतिविधियों को सरकार द्वारा अपने हाथों में रखने के किन्हीं तीन कारणों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

1. कुछ सेवाओं पर बहुत अधिक धन व्यय करने की आवश्यकता होती है।
2. हजारों लोगों से पैसा इकट्ठा करना आसान कार्य नहीं है।
3. निजी क्षेत्रक इन सेवाओं के लिए ऊँची कीमतें माँगते हैं।
4. इन भारी व्ययों को सरकार अपने ऊपर लेती है एवं यह सुनिश्चित करती है कि ये सेवाएँ सबको उपलब्ध हों।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

9. कुशलता विकास से आप क्या समझते हैं? यह रोजगार के अवसर कैसे पैदा करने में कहाँ तक सहायक होता है?

उत्तर :

जब कोई व्यक्ति किसी रोजगार से संबंधित शिक्षा और प्रशिक्षण लेता है तो वह एक कुशल कारीगर बन जाता है। अतः कुशलतापूर्ण विकास का अर्थ है–

1. किसी व्यक्ति की शिक्षा तथा प्रशिक्षण द्वारा उस रोजगार में विशिष्टता ग्रहण करना उसकी उत्पादन क्षमता को बढ़ाता है।
2. किसी रोजगार की विशिष्टता को बनाये रखने की क्षमता।
3. इतनी क्षमता रखना कि नई तकनीक को आसानी से अपना ले।
4. अन्य विकसित देशों को श्रम शक्ति के साथ होड़ लेने की क्षमता रखना। प्रशिक्षण और शिक्षा कारोबार की उत्पादन क्षमता बढ़ा देते हैं।

10. पिछले 30 वर्ष में भारतीय अर्थव्यवस्था का तृतीयक क्षेत्रक सर्वाधिक उत्पादक क्यों बना? चार कारण बताइए।

उत्तर :

इस उपलब्धि के पीछे कई कारण हैं जिनमें से प्रश्नानुसार हम चार कारणों का वर्णन निम्नवत करते हैं–

1. भारत सरकार के साथ ही राज्य सरकारों और पंचायती राज संस्थाओं ने इस क्षेत्रक को प्रोत्साहित किया है। सामाजिक और ढाँचागत सुविधाओं के प्रोन्नयन और विस्तार के लिए समय-समय पर अनुदान, निधियाँ तथा चन्दे की राशियाँ बड़ी मात्रा में दी जाती हैं। इन सुविधाओं के लिए ग्रामीण तथा शहरी इलाकों में बड़ी संख्या में श्रमिक, कार्यकर्ता, विशेषज्ञ और व्यवसायियों की सेवाएँ आवश्यक होती हैं।

2. भारत ने बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक से नई आर्थिक नीति, भूमंडलीकरण, उदारीकरण तथा मुक्त व्यापार की नीतियों को अपनाया है। भूमंडलीकरण और उदारीकरण के कारण भारत के चिकित्सक, अभियंता, अध्यापक तथा तकनीकीविद जैसे विशेषज्ञों एवं व्यवसायियों की विश्व के अन्य देशों में भारी माँग है। ये विशेषज्ञ तथा व्यवसायी राष्ट्रीय और प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने, अंतर्राष्ट्रीय विनिमय तथा व्यापार विस्तार करने और अन्य भुगतानों को निपटाने के लिए आवश्यक विदेशी मुद्रा को कमा कर भारत ला रहे हैं।
3. वैज्ञानिक खोजों/आविष्कारों, नई खोजों, नवीनतम प्रौद्योगिकी के आगमन तथा भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों की स्थापना के कारण सेवा क्षेत्र का तीव्र गति से विकास हो रहा है। कुछ भारतीय व्यापार घरानों तथा कंपनियों ने विश्व के अन्य देशों में अपने उद्योग स्थापित कर लिए हैं। इन कारणों से तृतीयक क्षेत्र हमारे देश का सर्वाधिक उत्पादक क्षेत्र बन पाया है।
4. इंटरनेट सेवाओं, वेबसाइट, ई-मेल सेवाओं तथा जन-संचार साधनों के कारण लोगों को रोजगार के नए अवसरों और पदोन्नति नियमों की विशेष जानकारी मिल रही है। नौकरी पेशा वर्ग को नए पदों का अवसर कई एजेन्सी (दलाली के आधार पर) प्रदान कर रही हैं। उदारीकरण, नए अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रम तथा नीतियाँ, सूचना प्रौद्योगिकी का प्रोन्नयन, वित्तीय संसाधनों का पारस्परिक विनिमय, कच्चा माल, परिवहन के नए साधनों का खोला जाना तथा विकासशील और विकसित देशों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा कुछ अन्य कारण हैं जिन्होंने पिछले 30 वर्ष की अवधि में तृतीयक क्षेत्र को भारत का बहुत बड़ा उत्पादक क्षेत्र बनाया है।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

NCERT पाठ्य पुस्तक के प्रश्न

1. कोष्ठक में दिए गए सही विकल्प का प्रयोग कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—
- सेवा क्षेत्र में रोजगार में उत्पादन के समान अनुपात में वृद्धि । (हुई है/नहीं हुई है)
 - क्षेत्र के श्रमिक वस्तुओं का उत्पादन नहीं करते हैं। (तृतीयक/कृषि)
 - क्षेत्र के अधिकांश श्रमिकों को रोजगार-सुरक्षा प्राप्त होती है। (संगठित/असंगठित)
 - भारत में अनुपात में श्रमिक असंगठित क्षेत्र में काम कर रहे हैं। (बड़े/छोटे)
 - कपास एक उत्पाद है और कपड़ा एक उत्पाद है। (प्राकृतिक/विनिर्मित)
 - प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों की गतिविधियाँ

..... हैं।

(स्वतंत्र/परस्पर निर्भर)

उत्तर :

- नहीं हुई है
- तृतीयक
- संगठित
- बड़े
- प्राकृतिक, विनिर्मित
- परस्पर निर्भर।

2. सही उत्तर का चयन करें—

- सार्वजनिक और निजी क्षेत्र का आधार पर विभाजित हैं—
(a) रोजगार की शर्तों
(b) आर्थिक गतिविधि के स्वभाव
(c) उद्यमों के स्वामित्व
(d) उद्यम में नियोजित श्रमिकों की संख्या

उत्तर (c) उद्यमों के स्वामित्व

- एक वस्तु का अधिकांशतः प्राकृतिक प्रक्रिया से उत्पादन क्षेत्र की गतिविधि है।
(a) प्राथमिक (b) द्वितीयक
(c) तृतीयक (d) सूचना प्रौद्योगिकी

उत्तर (a) प्राथमिक

- किसी वर्ष में उत्पादित कुल मूल्य को स.घ.उ. कहते हैं।
(a) सभी वस्तुओं और सेवाओं
(b) सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं
(c) सभी मध्यवर्ती वस्तुओं और सेवाओं
(d) सभी मध्यवर्ती एवं अंतिम वस्तुओं और सेवाओं

उत्तर (b) सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं

- स.घ.उ. के पदों में वर्ष 2013-14 के बीच तृतीयक क्षेत्र की हिस्सेदारी प्रतिशत है।
(a) 20 से 30 (b) 30 से 40
(c) 50 से 60 (d) 60 से 70

उत्तर (c) 50 से 60

3. निम्नलिखित का मेल कीजिए—

	कृषि क्षेत्र की समस्याएँ		कुछ संभावित उपाय
1.	असिंचित भूमि	(अ)	कृषि-आधारित मितों की स्थापना
2.	फसलों का कम मूल्य	(ब)	सहकारी विपणन समितियाँ

	कृषि क्षेत्रक की समस्याएँ		कुछ संभावित उपाय
3.	कर्ज भार	(स)	सरकार द्वारा खाद्यान्नों की वसूली
4.	मंदी काल में रोजगार का अभाव	(द)	सरकार द्वारा नहरों का निर्माण
5.	कटाई के तुरन्त बाद स्थानीय व्यापारियों को अपना अनाज बेचने की विवशता	(य)	कम ब्याज पर बैंकों द्वारा साख उपलब्ध कराना।

उत्तर 1. (द), 2. (स), 3. (य), 4. (अ), 5. (ब)।

4. विषम की पहचान करें और बताइए क्यों?

- (1) पर्यटन-निर्देशक, धोबी, दर्जी, कुम्हार
- (2) शिक्षक, डॉक्टर, सब्जी विक्रेता, वकील
- (3) डाकिया, मोची, सैनिक, पुलिस कांस्टेबल
- (4) एम.टी.एन.एल., भारतीय रेल, एयर इंडिया, जेट एयरवेज, ऑल इंडिया रेडियो।

उत्तर :

1. **पर्यटन-निर्देशक** का कार्य एक निपुण कार्य है, इसे विभिन्न ऐतिहासिक स्थान का अध्ययन करना पड़ता है।
2. **सब्जी विक्रेता**-क्योंकि उसे नियमित रूप से भुगतान प्राप्त नहीं हो रहा है एवं उसे अपनी सब्जियों के विक्रय पर निर्भर रहना पड़ता है।
3. **मोची**-क्योंकि वह असंगठित निजी क्षेत्रक में कार्य कर रहा है एवं कभी भी काम से निकाला जा सकता है।
4. **जेट एयरवेज**-क्योंकि यह निजी क्षेत्रक के अंतर्गत है तथा अन्य सभी सार्वजनिक क्षेत्रक में है।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

5. एक शोध छात्र ने सूरत शहर में काम करने वाले लोगों का अध्ययन करके निम्न आँकड़े जुटाएँ-

कार्य स्थान	रोजगार की प्रकृति	श्रमिकों का प्रतिशत
सरकार द्वारा पंजीकृत कार्यालयों और कारखानों में	संगठित	15
औपचारिक अधिकार-पत्र सहित बाजारों में अपनी दुकान, कार्यालय और क्लिनिक		15
सड़कों पर काम करते लोग निर्माण श्रमिक, घरेलू श्रमिक		20

कार्य स्थान	रोजगार की प्रकृति	श्रमिकों का प्रतिशत
छोटी कार्यशालाओं में काम करते लोग, जो प्रायः सरकार द्वारा पंजीकृत नहीं हैं		

तालिका को पूरा कीजिए। इस शहर में असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों की प्रतिशतता क्या है?

उत्तर :

कार्य स्थान	रोजगार की प्रकृति	श्रमिकों का प्रतिशत
सरकार द्वारा पंजीकृत कार्यालयों और कारखानों में	संगठित	15
औपचारिक अधिकार-पत्र सहित बाजारों में अपनी दुकान, कार्यालय और क्लिनिक	संगठित	15
सड़कों पर काम करते लोग निर्माण श्रमिक, घरेलू श्रमिक	असंगठित	20
छोटी कार्यशालाओं में काम करते लोग, जो प्रायः सरकार द्वारा पंजीकृत नहीं हैं	असंगठित	50

इस शहर में असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों की प्रतिशतता 70 है।

6. क्या आप मानते हैं कि आर्थिक गतिविधियों का प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र में विभाजन की उपयोगिता है? व्याख्या कीजिए कि कैसे?

उत्तर :

आर्थिक गतिविधियों का प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र में किया गया विभाजन बहुत उपयोगी है। इससे हमें पता चल जाता है कि किस क्षेत्र में कितने लोग लगे हुए हैं। विभिन्न क्षेत्रकों में लोगों के लगे होने की संख्या के आधार पर हम अर्थव्यवस्था के स्वरूप का पता लगा सकते हैं। प्रायः अल्पविकसित अर्थव्यवस्थाओं में अधिकतर लोग प्राथमिक क्षेत्र के कार्यों में लगे होते हैं जबकि विकसित अर्थव्यवस्थाओं में अधिकतर लोग तृतीयक क्षेत्र की सेवाओं में लगे होते हैं।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

7. इस अध्याय में आए प्रत्येक क्षेत्रक को रोजगार और सकल घरेलू उत्पाद (स.घ.उ.) पर ही क्यों केंद्रित करना चाहिए? क्या अन्य वाद-पदों का परीक्षण किया जा सकता है? चर्चा करें।

उत्तर :

इस अध्याय में आए प्रत्येक क्षेत्र को रोजगार और सकल घरेलू उत्पाद पर ही केंद्रित करना चाहिए क्योंकि ये दोनों रोजगार और सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। यही हमारी पंचवर्षीय योजनाओं के प्राथमिक लक्ष्य भी रहे हैं। हमने जाना कि तीनों क्षेत्रों का सकल घरेलू उत्पाद और रोजगार में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। समय के साथ-साथ तीनों क्षेत्रों के योगदान में वृद्धि हुई है। परन्तु सकल घरेलू उत्पाद में सबसे अधिक योगदान तृतीयक क्षेत्र का रहा है। हम जानते हैं कि रोजगार सभी क्षेत्रों में बढ़ा है किन्तु अभी भी भारत की लगभग 60% जनता प्राथमिक क्षेत्रों में लगी हुई है। यह सारी जानकारी हमें तभी मिल पाई है जब हमने उनका सकल घरेलू उत्पाद तथा रोजगार के क्षेत्र में मूल्यांकन कर लिया है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक क्षेत्र को सकल घरेलू उत्पाद और रोजगार से जोड़कर कई लक्ष्य प्राप्त किए जा सकते हैं। जैसे-गरीबी निवारण आधुनिक तकनीक का विकास तथा आर्थिक क्षेत्र में विकास की असमानताओं को कम करना आदि।

8. जीविका के लिए काम करने वाले अपने आस-पास के वयस्कों के सभी कार्यों की लंबी सूची बनाइए। उन्हें आप किस तरीके से वर्गीकृत कर सकते हैं? अपने चयन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

जीविका के लिए काम करने वाले आस-पास के वयस्कों को हम निम्नलिखित आधार पर वर्गीकृत कर सकते हैं-

1. कार्य की प्रकृति के आधार पर वर्गीकरण-

1. **प्राथमिक क्षेत्र**-वे सभी आर्थिक क्रियाएँ जो प्राकृतिक संसाधनों के प्रयोग द्वारा की जाती हैं उन्हें प्राथमिक क्षेत्र में रखा जाता है, जैसे-कृषि कार्य, खनन कार्य, मत्स्य पालन आदि।
2. **द्वितीयक क्षेत्र**-इस क्षेत्र में प्राथमिक क्षेत्र से प्राप्त विभिन्न उत्पादों का प्रयोग करके विभिन्न उपयोगी वस्तुओं का निर्माण किया जाता है, जैसे-कपास से कपड़ा बनाना, गन्ने से चीनी बनाना आदि।
3. **तृतीयक क्षेत्र**-इस क्षेत्र में किसी वस्तु का निर्माण नहीं किया जाता बल्कि सेवाएँ प्रदान की जाती हैं। ये सेवाएँ प्राथमिक तथा द्वितीयक क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके अंतर्गत बैंकिंग, बीमा, रेलवे संचार एवं परिवहन आदि को शामिल किया जाता है।

2. रोजगार की दशाओं के आधार पर वर्गीकरण- रोजगार की दशाएँ किस प्रकार की हैं इस आधार पर हम इसे दो भागों में बाँट सकते हैं-

1. **संगठित क्षेत्र**-इसमें वे गतिविधियाँ आती हैं जिनमें रोजगार की अवधि नियमित होती है तथा इन्हें सरकारी नियमों को मानना पड़ता है।

2. **असंगठित क्षेत्र**-ये क्षेत्र सरकारी नियंत्रण से बाहर होता है। इसमें रोजगार की अवधि तथा नियम, उपनियम आदि निश्चित नहीं होते।

3. **उद्योगों के स्वामित्व के आधार पर वर्गीकरण-** विभिन्न औद्योगिक इकाइयाँ किसके स्वामित्व में हैं इस आधार पर इनका वर्गीकरण सार्वजनिक तथा निजी उद्योगों में किया जा सकता है। उपरोक्त आधारों पर हम अपने आस-पास के लोगों को इस प्रकार से सूचीबद्ध कर सकते हैं-

1.	किसान	प्राथमिक क्षेत्र
2.	सरकारी स्कूल के अध्यापक	तृतीयक, संगठित, सार्वजनिक क्षेत्र
3.	वकील	तृतीयक, संगठित, सार्वजनिक क्षेत्र
4.	दर्जी	तृतीयक, असंगठित, सार्वजनिक क्षेत्र
5.	धोबी	तृतीयक, असंगठित, निजी क्षेत्र
6.	डाकिया	तृतीयक, संगठित, सार्वजनिक क्षेत्र
7.	श्रमिक	तृतीयक, संगठित, निजी क्षेत्र
8.	लिपिक	तृतीयक, संगठित, सार्वजनिक क्षेत्र

9. तृतीयक क्षेत्रों अन्य क्षेत्रों से कैसे भिन्न हैं? सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रों में किसी वस्तु का निर्माण किया जाता है, जबकि तृतीयक क्षेत्र में किसी वस्तु का उत्पादन नहीं किया जाता बल्कि सेवाएँ प्रदान की जाती हैं। तृतीयक क्षेत्र की गतिविधियाँ प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रों के विकास में मदद करती हैं। जैसे-प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रों में उत्पादित वस्तुओं को ट्रकों और ट्रेनों द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना तथा बाजार में बेचना आदि तृतीयक क्षेत्रों के द्वारा किया जाता है। प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रों की क्रियाओं में बैंकों, टेलीफोन, बीमा कंपनियों की आवश्यकता होती है। ये सभी तृतीयक क्षेत्रों के उदाहरण हैं। इस प्रकार तृतीयक क्षेत्रों सेवाएँ प्रदान करता है जिनका उपयोग प्राथमिक व द्वितीयक क्षेत्रों की क्रियाओं के विकास के लिए किया जाता है।

10. प्रचन्न बेरोजगारी से आप क्या समझते हैं? शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से उदाहरण देकर व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

प्रचन्न बेरोजगारी-विकासशील देशों या अल्पविकसित देशों में अधिकतर लोग कृषि कार्यों में लगे होते हैं जिसके कारण इन देशों में छिपी हुई या प्रचन्न बेरोजगारी पाई जाती है। यह स्थिति तब उत्पन्न होती है जब किसी विशेष क्षेत्र या कार्य में जनसंख्या का भार जरूरत से अधिक बढ़ने लगता है। यदि

किसी क्षेत्र में काम में लगे मजदूरों में से कुछ श्रमिक हटा भी दिए जाएँ तो वस्तु के उत्पादन पर कोई फर्क नहीं पड़ता। इस प्रकार होने वाली बेरोजगारी प्रच्छन्न बेरोजगारी कहलाती है।

1. **शहरी क्षेत्रों से उदाहरण-** एक किराने की दुकान है। उस दुकान पर परिवार के 4 सदस्य काम करते हैं। यदि वहाँ पर परिवार के दो सदस्य काम करें और दो अन्य सदस्य किसी कारखाने या कार्यालय में नौकरी करने लगे तो इससे दुकान की बिक्री पर भी कोई असर नहीं पड़ेगा और दो सदस्यों के वेतन के रूप में परिवार को भी अधिक आय हासिल होगी।
2. **ग्रामीण क्षेत्रों से उदाहरण-** लक्ष्मी के पास एक दो एकड़ का खेत है। इस खेत पर परिवार के पाँच सदस्य काम करते हैं। सिंचाई की सुविधा न होने के कारण वे खेत में ज्वार एवं अरहर की फसलें बीजते हैं। एक भू-स्वामी सुखराम अपनी जमीन पर काम करने के लिए लक्ष्मी के परिवार के दो सदस्यों को भाड़े पर ले जाता है। इससे लक्ष्मी के खेतों के उत्पादन पर कोई विपरीत असर नहीं पड़ता और परिवार को मजदूरी के द्वारा कुछ अतिरिक्त आय भी प्राप्त होती है।

11. खुली बेरोजगारी और प्रच्छन्न बेरोजगारी के बीच विभेद कीजिए।

उत्तर :

1. **खुली बेरोजगारी-** वह परिस्थिति जिसमें किसी देश में श्रम शक्ति तो अधिक होती है किंतु औद्योगिक ढाँचा छोटा होता है, वह सारी श्रम शक्ति को नहीं खपा पाता अर्थात् श्रमिक काम करना चाहता है किंतु उसे काम नहीं मिलता। यह बेरोजगारी भारत के अधिकतर औद्योगिक क्षेत्रों में पाई जाती है।
2. **प्रच्छन्न या गुप्त बेरोजगारी-** वह परिस्थिति जिसमें व्यक्ति काम में लगे हुए दिखाई देते हैं किंतु वास्तव में वे बेरोजगार होते हैं। जैसे-भूमि के टुकड़े पर आठ लोग काम कर रहे हैं किंतु उत्पादन उतना ही हो रहा है जितना पाँच लोगों के काम करने से होता है। ऐसे में तीन अतिरिक्त व्यक्ति जो काम में लगे हैं वह छुपे हुए बेरोजगार हैं क्योंकि उनके काम से उत्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

12. भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में तृतीयक क्षेत्रक कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभा रहा है। क्या आप इससे सहमत हैं? अपने उत्तर के समर्थन में कारण दीजिए।

उत्तर :

नहीं, हम इस कथन से बिल्कुल भी सहमत नहीं हैं कि भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में तृतीयक क्षेत्रक कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभा रहा है। इसके समर्थन में निम्नलिखित तर्क दिए जा सकते हैं-

1. **रोजगार के क्षेत्र में-** 1973 के आँकड़ों के अनुसार, तृतीयक क्षेत्रक में केवल 15% लोग कार्यरत थे जबकि 2000 में यह संख्या बढ़कर 25% हो गई थी।
2. **उत्पादन में हिस्सेदारी-** जी.डी.पी. के सन् 2003 के

आँकड़ों के अनुसार देश के उत्पादन में प्राथमिक क्षेत्रक का योगदान लगभग 30 प्रतिशत, द्वितीयक क्षेत्रक का योगदान लगभग 20 प्रतिशत और तृतीयक क्षेत्रक का योगदान लगभग 50 प्रतिशत था।

3. **राष्ट्रीय आय में योगदान-** जी.डी.पी. के सन् 2003 के आँकड़ों के अनुसार राष्ट्रीय आय में प्राथमिक क्षेत्रकों का योगदान ₹50,000 करोड़, द्वितीयक क्षेत्रक का योगदान भी ₹50,000 करोड़ था जबकि तृतीयक क्षेत्रक का योगदान ₹1,10,000 करोड़ था।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

13. भारत में सेवा क्षेत्रक दो विभिन्न प्रकार के लोग नियोजित करता है। ये लोग कौन हैं?

उत्तर :

भारत में सेवा क्षेत्रक दो विभिन्न प्रकार के लोग नियोजित करते हैं। ये हैं-संगठित क्षेत्रक के लोग और असंगठित क्षेत्रक के लोग।

1. **संगठित क्षेत्रक-** संगठित क्षेत्रक में रोजगार की अवधि नियमित होती है और काम करने के घंटे तय होते हैं। ये क्षेत्रक सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं और इन्हें सरकारी नियमों का पालन करना होता है।
2. **असंगठित क्षेत्रक-** असंगठित क्षेत्रक में रोजगार की अवधि अनियमित होती है और काम करने के घंटे भी तय नहीं हैं। इस क्षेत्रक पर सरकारी नियंत्रण नहीं होता। इन क्षेत्रकों में सवेतन छुट्टी, अवकाश, बीमारी के कारण छुट्टी इत्यादि का कोई प्रावधान नहीं होता।

14. असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों का शोषण किया जाता है। क्या आप इस विचार से सहमत हैं? अपने उत्तर के समर्थन में कारण दीजिए।

उत्तर :

यह बात बिल्कुल सही है कि असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों का शोषण किया जाता है। इसके समर्थन में निम्नलिखित तर्क दिए जाते हैं-

1. असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों के लिए नौकरी की सुरक्षा नहीं होती है, क्योंकि उन्हें बिना किसी कारण नौकरी से निकाला जा सकता है।
2. उन्हें कम छुट्टियाँ दी जाती हैं तथा बीमारी आदि की छुट्टियों के लिए भुगतान नहीं किया जाता है।
3. उन्हें अतिरिक्त समय लगाना पड़ता है, जिसके लिए उन्हें कोई भुगतान नहीं किया जाता है।
4. सामान्यतया, असंगठित क्षेत्रक में लोगों को अनियमित कार्य प्राप्त होता है तथा जब कार्य अधिक नहीं होता है, तो नियोक्ता (Employer) श्रमिकों को नौकरी से निकाल देता है।
5. बहुत से लोग नियोक्ता की पसंद पर निर्भर रहते हैं।

15. अर्थव्यवस्था में गतिविधियाँ रोजगार की परिस्थितियों के आधार पर कैसे वर्गीकृत की जाती हैं?

उत्तर :

रोजगार की परिस्थितियों के आधार पर आर्थिक गतिविधियों को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है—

1. **संगठित क्षेत्रक**—संगठित क्षेत्रक में वे उद्यम अथवा कार्यस्थल आते हैं, जहाँ रोजगार की अवधि नियमित होती है। ये क्षेत्रक सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं। उन्हें सरकारी नियमों और विनियमों का पालन करना होता है। इसे संगठित क्षेत्रक कहते हैं। इसमें कर्मचारियों को रोजगार सुरक्षा के लाभ मिलते हैं। उनसे एक निश्चित समय तक ही काम करने की आशा की जाती है। यदि वे अधिक काम करते हैं तो उन्हें अतिरिक्त वेतन दिया जाता है। वे सवेतन छुट्टी, अवकाश काल में भुगतान, भविष्य निधि, सेवानुदान पाते हैं। वे सेवानिवृत्ति पर पेंशन भी प्राप्त करते हैं।
2. **असंगठित क्षेत्रक**—असंगठित क्षेत्रक छोटी-छोटी और बिखरी इकाइयों से निर्मित होता है। ये इकाइयाँ अधिकांशतः सरकारी नियंत्रण से बाहर होती हैं। इसमें नियमों और विनियमों का पालन नहीं होता। यहाँ कम वेतनवाले रोजगार हैं और प्रायः नियमित नहीं हैं। यहाँ अतिरिक्त समय में काम करने, सवेतन छुट्टी, अवकाश, बीमारी के कारण से छुट्टी इत्यादि का कोई प्रावधान नहीं है। रोजगार में भारी अनिश्चितता है। श्रमिकों को बिना किसी कारण के काम से हटाया जा सकता है। इस रोजगार में संरक्षण नहीं है तथा कोई लाभ नहीं है।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

16. संगठित और असंगठित क्षेत्रकों में विद्यमान रोजगार-परिस्थितियों की तुलना करें।

उत्तर :

संगठित और असंगठित क्षेत्रकों की रोजगार परिस्थितियों में बहुत अंतर पाया जाता है। इन दोनों क्षेत्रकों की तुलना निम्नलिखित प्रकार से कर सकते हैं—

क्र.सं.	संगठित क्षेत्रक	असंगठित क्षेत्रक
1.	ये क्षेत्रक सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं।	ये क्षेत्रक सरकार द्वारा पंजीकृत नहीं होते हैं।
2.	इसमें सरकारी नियमों, विनियमों का पालन किया जाता है।	इसमें सरकारी नियमों, विनियमों का पालन नहीं किया जाता है।
3.	यहाँ रोजगार की अवधि नियमित होती है।	यहाँ रोजगार की अवधि नियमित नहीं होती है।

क्र.सं.	संगठित क्षेत्रक	असंगठित क्षेत्रक
4.	इस क्षेत्रक में कर्मचारियों को रोजगार-सुरक्षा के लाभ मिलते हैं। उन्हें सवेतन छुट्टी, भविष्य निधि, सेवानुदान आदि प्राप्त होता है।	इस क्षेत्रक में कर्मचारियों को रोजगार-सुरक्षा नहीं मिलती। यहाँ सवेतन छुट्टी, भविष्य निधि, सेवानुदान आदि का कोई प्रावधान नहीं होता है।
5.	सरकारी संस्थानों, सरकारी सहायता प्राप्त संस्थाओं तथा बड़ी-बड़ी कंपनियों में काम करना इसके उदाहरण हैं।	इसमें भूमिहीन श्रमिक, छोटे किसान, सड़कों पर विक्रय करने वाले, श्रमिक तथा कबाड़ उठाने वाले लोग शामिल हैं।

17. मनरेगा 2005 (MGNREGA, 2005) के उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

भारतीय केन्द्रीय सरकार ने हाल ही में भारत के 200 जिलों में कार्य करने के अधिकार से संबंधित कानून बनाया है। इस कानून को राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार आश्वासन अधिनियम 2005 कहते हैं। आगे इसका नाम बदलकर महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम कर दिया गया है। इस कानून को बनाने का उद्देश्य उन लोगों को जो कार्य करने योग्य हैं तथा जिन्हें कार्य की आवश्यकता है, सरकार द्वारा एक वर्ष में 100 दिनों का रोजगार का आश्वासन देना है। यदि सरकार इस उद्देश्य की प्राप्ति में असफल रहती है, तो वह लोगों को रोजगार छूट देगी।

18. अपने क्षेत्र से उदाहरण लेकर सार्वजनिक और निजी क्षेत्रक की गतिविधियों एवं कार्यों की तुलना तथा वैषम्य कीजिए।

उत्तर :

1. **सार्वजनिक क्षेत्रक**— वे उद्योग जो सरकारी तंत्र के अधीन होते हैं सार्वजनिक क्षेत्रक कहलाते हैं, जैसे—भारतीय रेल, लोहा-इस्पात उद्योग, जहाज निर्माण आदि। सार्वजनिक क्षेत्र में ऐसी वस्तुओं या सेवाओं का निर्माण होता है जो लोगों के लिए कल्याणकारी है। इनका उद्देश्य निजी हित या लाभ कमाना नहीं होता बल्कि सार्वजनिक लाभ इनका उद्देश्य होता है। इस क्षेत्र में वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमत का निर्धारण सरकार द्वारा किया जाता है।
2. **निजी क्षेत्रक**—वे उद्योग जो निजी व्यक्तियों के स्वामित्व में होते हैं, निजी क्षेत्रक कहलाते हैं। इसमें वे उद्योग आते हैं जो आम जनता की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं जैसे—टेलीविजन, एयर कंडीशन, फ्रिज आदि बनाने वाले उद्योग। ये गतिविधियाँ निजी लाभ कमाने के उद्देश्य से की जाती हैं। निजी क्षेत्र कल्याणकारी कार्य करने के

लिए बाध्य नहीं हैं। यदि वह ऐसा कोई काम करता भी है तो उसकी अधिक कीमत लेता है जैसे-निजी विद्यालय सरकारी विद्यालयों से अधिक फीस वसूलते हैं। निजी क्षेत्र के उद्योगों में वस्तुओं की कीमतों का निर्धारण बाजारी शक्तियों द्वारा होता है।

19. अपने क्षेत्र से एक-एक उदाहरण देकर निम्न तालिका को पूरा कीजिए और चर्चा कीजिए-

क्षेत्रक	सुव्यवस्थित प्रबंध वाले संगठन	कुव्यवस्थित प्रबंध वाले संगठन
सार्वजनिक क्षेत्रक		
निजी क्षेत्रक		

उत्तर :

क्षेत्रक	सुव्यवस्थित प्रबंध वाले संगठन	कुव्यवस्थित प्रबंध वाले संगठन
सार्वजनिक क्षेत्रक	डाकघर	राज्य परिवहन
निजी क्षेत्रक	रिलायंस इंडस्ट्रीज	कृषि

कोई भी संगठन तब तक प्रभावी रूप से कार्य नहीं कर सकता जब तक उस संगठन को चलाने के लिए सुयोग्य नेतृत्व, कुशल तकनीक और पर्याप्त मात्रा में पूँजी की उपलब्धता न हो। इन तत्वों के अभाव में संगठन की गतिविधियाँ अव्यवस्थित हो जाती हैं।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

20. सार्वजनिक क्षेत्रक की गतिविधियों के कुछ उदाहरण दीजिए और व्याख्या कीजिए कि सरकार द्वारा इन गतिविधियों का कार्यान्वयन क्यों किया जाता है?

उत्तर :

सार्वजनिक क्षेत्रक की गतिविधियाँ-

1. रेलवे
2. डाकघर
3. सार्वजनिक क्षेत्रक के बैंक
4. रक्षा उत्पादन करने वाले उद्योग
5. भारत संचार निगम लिमिटेड
6. पुलिस
7. न्यायपालिका
8. भारतीय खाद्य निगम।

सरकार द्वारा संचालन के कारण-सार्वजनिक क्षेत्रक की गतिविधियों का मुख्य उद्देश्य सामाजिक हित का ध्यान रखना है। इन सेवाओं का संचालन समाज के अधिकतर लोगों को लाभ पहुँचाने के लिए किया जाता है। इन क्षेत्रकों में सरकार उत्पादन लागत का अधिकतर भार स्वयं वहन करती है और लोगों को कम कीमत पर सेवाएँ उपलब्ध कराती है। यदि ये सेवाएँ निजी क्षेत्रक के हाथों में सौंप दी जाएँ तो इनका मूल्य बहुत अधिक बढ़ जाएगा और लोगों को उस बढ़े मूल्य का भुगतान करना होगा।

21. व्याख्या कीजिए कि एक देश के आर्थिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्रक कैसे योगदान करता है?

उत्तर :

किसी देश के आर्थिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्रक का महत्वपूर्ण योगदान होता है क्योंकि सार्वजनिक क्षेत्रक का उद्देश्य लाभ कमाना नहीं होता। सभी महत्वपूर्ण गतिविधियों का संचालन सार्वजनिक क्षेत्रक के द्वारा किया जाता है।

ऐसी गतिविधियाँ जिनकी आवश्यकता समाज के सभी सदस्यों को होती है, जैसे सड़कों, पुलों, रेलवे, पत्तनों, बिजली आदि का निर्माण और बाँध आदि से सिंचाई की सुविधा उपलब्ध कराना सार्वजनिक क्षेत्रक का काम है। सरकार ऐसे भारी व्यय स्वयं उठाती है। सरकार किसानों को उचित मूल्य दिलाने के लिए गेहूँ और चावल खरीदती है। इसे अपने गोदामों में भंडारित करती है और राशन की दूकानों के माध्यम से उपभोक्ताओं को कम मूल्य पर बेचती है। इस प्रकार सरकार किसानों और उपभोक्ताओं दोनों को सहायता पहुँचाती है।

सभी के लिए स्वास्थ्य और शिक्षा सुविधाएँ उपलब्ध कराना जैसे प्राथमिक कार्य भी सार्वजनिक क्षेत्रक में आते हैं। समुचित ढंग से विद्यालय चलाना और गुणात्मक शिक्षा उपलब्ध कराना सरकार का कर्तव्य है। इस प्रकार किसी देश के आर्थिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्रक का योगदान महत्वपूर्ण है।

22. असंगठित क्षेत्रक के श्रमिकों को निम्नलिखित मुद्दों पर संरक्षण की आवश्यकता है- मजदूरी, सुरक्षा और स्वास्थ्य। उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

असंगठित क्षेत्र के मजदूरों को मजदूरी, सुरक्षा और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर संरक्षण की आवश्यकता है। इसे निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है-

1. **मजदूरी-** असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों का काम करने का समय निश्चित नहीं है। उन्हें 10 से 12 घंटे तक बिना ओवरटाइम के कार्य करना पड़ता है। इन श्रमिकों में प्रायः रोजगार सुरक्षा का अभाव पाया जाता है। गरीबी के कारण ये प्रायः कम मजदूरी दरों पर काम करने को तैयार हो जाते हैं। इसलिए इन्हें इस सन्दर्भ में सुरक्षा दी जानी चाहिए। इनके भी काम करने के घंटे तथा मजदूरी निश्चित होनी चाहिए।
2. **सुरक्षा-** असंगठित क्षेत्रक के श्रमिकों को किसी प्रकार का संरक्षण और सुरक्षा प्राप्त नहीं है। सभी श्रमिकों को रोजगार की सुरक्षा होनी चाहिए। ऐसा न हो कि मालिक जब चाहे श्रमिकों को काम से बाहर निकाल दें। यदि किन्हीं कारणों से श्रमिकों को नौकरी से बाहर निकालना भी पड़ता है तो भी उनकी क्षतिपूर्ति होनी चाहिए। कारखाने में काम करते समय या इयूटी पर आते समय या घर लौटते समय यदि किसी श्रमिक के साथ कोई दुर्घटना घट जाती है तो भी उसकी क्षतिपूर्ति होनी चाहिए।

3. **स्वास्थ्य**– असंगठित क्षेत्रक के श्रमिकों को स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी संरक्षण मिलना चाहिए। उनके काम करने के स्थानों पर सभी चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए। प्रत्येक कर्मचारी को चिकित्सा भत्ता उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

23. अहमदाबाद में किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि नगर के 15,00,000 श्रमिकों में से 11,00,000 श्रमिक असंगठित क्षेत्रक में काम करते थे। वर्ष 1997-98 में नगर की कुल आय 600 करोड़ रुपये थी इसमें से 320 करोड़ रुपये संगठित क्षेत्रक से प्राप्त होती थी। इस आँकड़े को तालिका में प्रदर्शित कीजिए। नगर में और अधिक रोजगार-सृजन के लिए किन तरीकों पर विचार किया जाना चाहिए?

उत्तर :

अहमदाबाद में श्रमिक और उनकी आय

अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक	संगठित	असंगठित	कुल
श्रमिक	400000	1100000	1500000
कुल आय (1997-98) (मिलियन ₹ में)	32000	28000	60000

इन आँकड़ों के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि संगठित क्षेत्र में असंगठित क्षेत्र की तुलना में कम श्रमिक लगे हैं किंतु उनकी आय असंगठित क्षेत्र से ज्यादा है। इसका यह अर्थ हुआ कि असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिकों को बहुत कम वेतन मिलता है। नगर में और अधिक रोजगार-सृजन के लिए निम्नलिखित तरीकों पर विचार किया जाना चाहिए–

- सार्वजनिक क्षेत्र, निजी क्षेत्र, संयुक्त क्षेत्रों में नए-नए उद्योग लगाए जाने चाहिए।
- कम ब्याज पर दीर्घकालीन पर्याप्त ऋण शहर में रहने वाले लोगों को दिए जाने चाहिए ताकि वह स्वयं ही अपने लिए रोजगार और धंधे जुटा सकें।
- निर्माण गतिविधियाँ हर क्षेत्र में तेज की जानी चाहिए; जैसे रिहायशी बस्तियाँ बनाना, व्यावसायिक कॉम्प्लेक्स बनाना, अस्पताल बनाना, स्कूल बनाना इत्यादि।
- उद्योग संरक्षण की नीति के अंतर्गत सभी बंद पड़ी औद्योगिक इकाइयों को सरकारी सहायता उपलब्ध कराकर पुनर्जीवित करना चाहिए।
- लघु और कुटीर उद्योगों को अधिक-से-अधिक बढ़ावा देना चाहिए।

24. निम्नलिखित तालिका में तीनों क्षेत्रों का सकल घरेलू उत्पाद (स. घ. उ.) रुपये (करोड़) में दिया गया है:

वर्ष	प्राथमिक	द्वितीयक	तृतीयक
2000	52,000	48,500	1,33,500

वर्ष	प्राथमिक	द्वितीयक	तृतीयक
2013	8,00,500	10,74,000	38,68,000

- वर्ष 2000 एवं 2013 के लिए स. घ. उ. में तीनों क्षेत्रों की हिस्सेदारी की गणना कीजिए।
- इन आँकड़ों को अध्याय में दिए आलेख-2 के समान एक दंड-आलेख के रूप में प्रदर्शित कीजिए।
- दंड-आलेख से हम क्या निष्कर्ष प्राप्त करते हैं?

उत्तर :

1. 2000 की हिस्सेदारी–

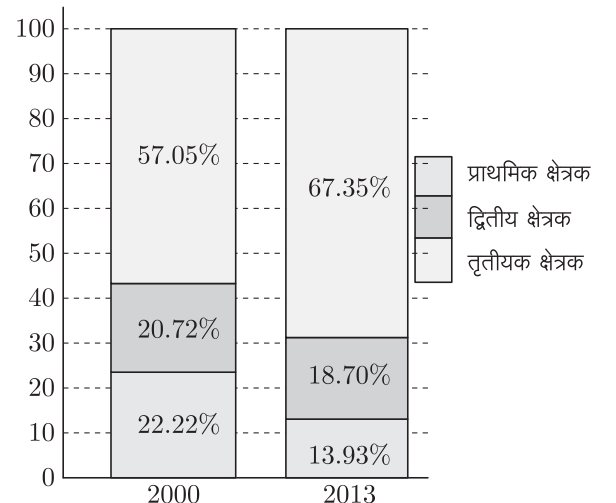
- प्राथमिक क्षेत्रक = $\frac{52000}{234000} \times 100 = 22.22\%$
- द्वितीयक क्षेत्रक = $\frac{48500}{234000} \times 100 = 20.72\%$
- तृतीयक क्षेत्रक = $\frac{133500}{234000} \times 100 = 57.05\%$

GDP (करोड़ रुपये में)				
वर्ष	प्राथमिक	द्वितीयक	तृतीयक	कुल
2000	52000	48500	133500	234000
2013	800500	1074000	3868000	5742500

2013 की हिस्सेदारी–

- प्राथमिक क्षेत्रक = $\frac{800500}{5742500} \times 100 = 13.93\%$
- द्वितीयक क्षेत्रक = $\frac{1074000}{5742500} \times 100 = 18.70\%$
- तृतीयक क्षेत्रक = $\frac{3868000}{5742500} \times 100 = 67.35\%$

2. Share of Sectors in GDP (%)



- हम उपर्युक्त GDP से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि तृतीयक क्षेत्रक में 10% की वृद्धि हुई है तथा प्राथमिक क्षेत्र में लगभग 10% की कमी व द्वितीयक क्षेत्र में 2% की कमी हुई है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. मुद्रा का कार्य है-

- (a) वस्तुओं को बेचने में सहायक
- (b) वस्तुओं व सेवाओं को खरीदने में सहायक
- (c) साख निर्माण
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

2. ऋण विकास के क्षेत्र में कैसी भूमिका अदा करता है?

- (a) सकारात्मक
- (b) नकारात्मक
- (c) सामान्य
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) सकारात्मक

3. आवश्यकताओं के दोहरे संयोग का अंग है-

- (a) बेचना
- (b) खरीदना
- (c) आवश्यकता
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

4. किस मुद्रा का संबंध प्राचीन काल से नहीं है?

- (a) कागज के नोट
- (b) सोने के सिक्के
- (c) चाँदी के सिक्के
- (d) ताँबे के सिक्के

उत्तर (a) कागज के नोट

5. सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा आदि धातुओं से बनी मुद्रा को कहते हैं।

- (a) साख मुद्रा
- (b) पत्र मुद्रा
- (c) धातु-मुद्रा
- (d) मुद्रा

उत्तर (c) धातु-मुद्रा

6. औपचारिक ऋण स्रोतों की विशेषता है-

- (a) सरकारी नियंत्रण
- (b) अधिक ब्याज दर
- (c) मनमानी करना

(d) किसी समर्थक ऋणाधार की आवश्यकता नहीं

उत्तर (a) सरकारी नियंत्रण

7. किस चीज को बैंक निक्षेप कहते हैं?

- (a) बैंक में जमा मुद्रा
- (b) घर पर रखी मुद्रा
- (c) बैंक कर्मचारी
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) बैंक में जमा मुद्रा

8. अरुण एक मध्यवर्गीय किसान है। वह कहाँ से ऋण प्राप्त करता है?

- (a) महाजन
- (b) कृषि व्यापारी
- (c) बैंक
- (d) बड़े भू-स्वामी

उत्तर (c) बैंक

9. भारत में करेंसी कौन जारी करता है?

- (a) वित्त मंत्रालय
- (b) प्रधानमंत्री
- (c) रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया
- (d) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया

उत्तर (c) रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया

10. भारतीय करेंसी में शामिल हैं-

- (a) कागज के नोट
- (b) धातु के सिक्के
- (c) सोने के सिक्के
- (d) a और b दोनों

उत्तर (d) a और b दोनों

11. भारत का केन्द्रीय बैंक है-

- (a) ग्रामीण बैंक
- (b) व्यापारिक बैंक
- (c) भारतीय स्टेट बैंक
- (d) रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया

उत्तर (c) भारतीय स्टेट बैंक

12. सोनपुर गाँव में ऋण का स्रोत है-

- (a) महाजन
- (b) कृषि व्यापारी
- (c) बैंक
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

13. अनौपचारिक ऋण स्रोत है-

- (a) महाजन या साहूकार (b) कृषि व्यापारी
(c) रिश्तेदार या मित्र (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

14. अनौपचारिक ऋण स्रोत की विशेषता है-

- (a) सरकारी नियंत्रण से परे (b) ऊँची ब्याज दर
(c) कठोर ऋण शर्तें (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

15. समर्थक ऋणाधार में कौन-सी चीज आती है?

- (a) मकान (b) भूमि
(c) पशु (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

16. गरीब परिवार किन स्रोतों से ऋण लेते हैं?

- (a) औपचारिक
(b) अनौपचारिक
(c) a और b दोनों
(d) उन्हें किसी भी स्रोत से ऋण नहीं मिलता है

उत्तर (b) अनौपचारिक

17. अमीर परिवार किस स्रोत से ऋण लेते हैं?

- (a) औपचारिक
(b) अनौपचारिक
(c) a और b दोनों
(d) उन्हें किसी भी स्रोत से ऋण नहीं मिलता है

उत्तर (a) औपचारिक

18. सन् 2006 के नोबल पुरस्कार प्राप्तकर्ता निम्न में से कौन थे?

- (a) डॉ. मनमोहन सिंह
(b) प्रो. मोहम्मद युनूस
(c) बिल गेट्स
(d) अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश

उत्तर (b) प्रो. मोहम्मद युनूस

19. औपचारिक ऋण सबसे अधिक किस वर्ग के लोगों को मिलता है?

- (a) गरीब परिवार (b) अमीर परिवार
(c) कम संपत्ति वाले परिवार (d) समृद्ध परिवार

उत्तर (b) अमीर परिवार

20. भारत में अन्य बैंकों की कार्यप्रणाली को कौन नियंत्रित करता

है?

- (a) राष्ट्रपति (b) प्रधानमंत्री
(c) रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (d) केन्द्र सरकार

उत्तर (c) रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया

21. एक रुपये का नोट कैसी मुद्रा है?

- (a) वास्तविक (b) सहायक
(c) सांकेतिक (d) ऐच्छिक

उत्तर (a) वास्तविक

22. बांग्लादेश ग्रामीण बैंक के संस्थापक निम्न में से कौन हैं?

- (a) तस्लीमा नसरीन
(b) प्रो. मोहम्मद युनूस
(c) शेख हसीना
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (b) प्रो. मोहम्मद युनूस

23. व्यावसायिक बैंक ग्रामीण परिवारों को कितना प्रतिशत ऋण उपलब्ध करा पाते हैं?

- (a) 20% (b) 22%
(c) 25% (d) 33%

उत्तर (c) 25%

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

24. विभिन्न प्रकार के ऋणों के वर्गों का उल्लेख कीजिए।

- (a) औपचारिक और अनौपचारिक ऋण
(b) साहूकारों का ऋण और व्यापारियों का ऋण
(c) रिश्तेदारों का ऋण और दोस्तों का ऋण
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) औपचारिक और अनौपचारिक ऋण

25. सहकारी समितियाँ ग्रामीण परिवारों को कितना प्रतिशत ऋण उपलब्ध करा पाती हैं?

- (a) 25% (b) 27%
(c) 30% (d) 33%

उत्तर (b) 27%

26. ऋण (उधार) क्या है?

- (a) ऋण से तात्पर्य एक सहमति से है जहाँ साहूकार कर्जदार को धन, वस्तुएँ या सेवाएँ मुहैया कराता है और बदले में भविष्य में कर्जदार से भुगतान करने का वादा लेता है
(b) दुकानदारों से लिया गया उधार सामान

(c) कंपनियों से लिया गया उधार सामान

(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) ऋण से तात्पर्य एक सहमति से है जहाँ साहूकार कर्जदार को धन, वस्तुएँ या सेवाएँ मुहैया कराता है और बदले में भविष्य में कर्जदार से भुगतान करने का वादा लेता है।

27. जब दोनों पक्ष एक-दूसरे से वस्तुएँ खरीदने और बेचने पर सहमत हों तो उसे कहते हैं-

(a) आवश्यकताओं का दोहरा संयोग

(b) क्रेता-विक्रेता

(c) व्यापार

(d) अर्थव्यवस्था

उत्तर (a) आवश्यकताओं का दोहरा संयोग

28. ऋण के औपचारिक स्रोत क्या हैं?

(a) बैंक व सहकारी समितियाँ

(b) साहूकार व व्यापारी

(c) मालिक व रिश्तेदार

(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) बैंक व सहकारी समितियाँ

29. उस प्रणाली का नाम बताएँ जिसमें आवश्यकताओं का दोहरा संयोग एक महत्वपूर्ण लक्षण है-

(a) विनिमय प्रणाली

(b) मुद्रा अर्थव्यवस्था

(c) वैश्विक

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (a) विनिमय प्रणाली

30. वर्ष 2003 में भारत में ग्रामीण परिवारों को सबसे अधिक ऋण कहाँ से प्राप्त होता था?

(a) साहूकार से

(b) व्यापारी से

(c) रिश्तेदार और दोस्त से

(d) व्यावसायिक बैंक से

उत्तर (a) साहूकार से

31. निम्नलिखित में से कौन मुद्रा को विनिमय के माध्यम के रूप में इस्तेमाल करने की वैधता प्रदान करता है?

(a) भारतीय रिजर्व बैंक

(b) स्वयं सहायता समूह

(c) केन्द्रीय सरकार

(d) भारत का राष्ट्रपति

उत्तर (a) भारतीय रिजर्व बैंक

32. वस्तुओं और सेवाओं के बदले में लोगों द्वारा सामान्य रूप से

स्वीकार की जाने वाली को कहा जाता है-

(a) मुद्रा

(b) विनिमय

(c) साख

(d) ऋण

उत्तर (a) मुद्रा

33. औपचारिक स्रोत अभी भी ग्रामीण परिवारों की कुल ऋण जरूरतों का कितना प्रतिशत पूरा कर पाते हैं?

(a) 42%

(b) 45%

(c) 48%

(d) 50%

उत्तर (d) 50%

34. शहरी क्षेत्रों के निर्धन परिवारों के कर्जों की 85% जरूरतें किस स्रोत से पूरी होती हैं?

(a) औपचारिक स्रोत

(b) अनौपचारिक स्रोत

(c) स्वयं सहायता समूह

(d) उपरोक्त सभी

उत्तर (b) अनौपचारिक स्रोत

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

35. ऋण की शर्तें कौन-सी होती हैं?

(a) ब्याज दर

(b) आवश्यक कागजात और भुगतान के तरीके

(c) समर्थक ऋणाधार

(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

36. भारत में बैंक जमा का कितने प्रतिशत भाग नकद के रूप में अपने पास रखते हैं?

(a) 10%

(b) 15%

(c) 20%

(d) 25%

उत्तर (b) 15%

37. स्वयं सहायता समूहों में बचत ऋण क्रियाओं के संबंध में अधिकतर निर्णय किसके द्वारा लिए जाते हैं?

(a) बैंक

(b) सदस्य

(c) गैर-सरकारी संगठन

(d) साहूकार

उत्तर (b) सदस्य

38. बैंक ऋण नहीं देते हैं-

(a) छोटे किसानों को

(b) हाशिए के किसानों को

(c) उद्योगों को

(d) बिना समर्थक ऋणाधार तथा आवश्यक कागजात को

उत्तर (d) बिना समर्थक ऋणाधार तथा आवश्यक कागजात को

39. अनौपचारिक क्षेत्र के साख में किससे ऋण लेना शामिल है?

- (a) साहूकार (b) स्वयं सहायता समूह
(c) सहकारी समितियाँ (d) बैंक

उत्तर (c) सहकारी समितियाँ

40. प्रारंभिक काल में भारतीय किन वस्तुओं का मुद्रा के रूप में प्रयोग करते थे?

- (a) अनाज, पशु (b) सोना, चाँदी
(c) ताँबे (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

41. औपचारिक स्रोतों की कार्यप्रणाली पर कौन निगरानी रखता है?

- (a) भारत सरकार (b) भारतीय स्टेट बैंक
(c) भारतीय रिजर्व बैंक (d) योजना आयोग

उत्तर (c) भारतीय रिजर्व बैंक

42. बांग्लादेश के ग्रामीण बैंक की स्थापना कब और किसके द्वारा की गई थी?

- (a) 1962 ई. में मुहम्मद कुरैशी ने
(b) 1965 ई. में मोहम्मद आरीफ ने
(c) 1970 ई. में प्रो. मोहम्मद यूनुस ने
(d) 1972 ई. में राशिद अल्वी ने

उत्तर (c) 1970 ई. में प्रो. मोहम्मद यूनुस ने

43. वस्तु विनिमय प्रणाली की असुविधा के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा सही नहीं है?

- (a) आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की कमी
(b) विभाज्यता की कमी
(c) संपत्ति जमा करने में मुश्किल
(d) विनिमय के माध्यम के रूप में धन की उपलब्धता

उत्तर (d) विनिमय के माध्यम के रूप में धन की उपलब्धता

44. माँग जमा क्या है?

- (a) बैंकों में जमा धन को माँग कहा जाता है क्योंकि यह धन माँग के द्वारा निकाला जा सकता है
(b) बैंकों से जो कर्ज लिया जाता है
(c) बैंकों में व्यापारियों द्वारा जमा की गई फिक्स डिपोजिट
(d) उपरोक्त सभी

उत्तर (a) बैंकों में जमा धन को माँग कहा जाता है क्योंकि यह धन माँग के द्वारा निकाला जा सकता है

45. भारत में रुपये के प्रयोग को वैधता कैसे प्रदान की गई है?

- (a) कानून द्वारा
(b) संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा
(c) विश्व बैंक द्वारा
(d) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा

उत्तर (a) कानून द्वारा

46. मुद्रा के आधुनिक रूप कौन-से हैं?

- (a) करेन्सी-कागज के नोट, सिक्के
(b) सोना-चाँदी
(c) चेक-ड्राफ्ट
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) करेन्सी-कागज के नोट, सिक्के

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. बिना मुद्रा का प्रयोग किए वस्तुओं का क्रय-विक्रय करना कहलाता है। (वस्तु विनिमय, साख)

उत्तर : वस्तु विनिमय

2. भारत में मुद्रा जारी करता है। (RBI, SBI)

उत्तर : RBI

3. सहकारी समितियाँ ऋण स्रोत का उदाहरण हैं। (औपचारिक, अनौपचारिक)

उत्तर : औपचारिक

4. स्वयं सहायता समूह में बचत और ऋण से संबंधित अधिकतर निर्णय द्वारा लिए जाते हैं। (सदस्यों/बैंक)

उत्तर : सदस्यों

5. सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा आदि धातुओं से बनी मुद्रा को कहते हैं। (पत्र-मुद्रा, धातु-मुद्रा)

उत्तर : धातु-मुद्रा

6. जमा का बड़ा हिस्सा बैंकों द्वारा के लिए उपयोग किया जाता है।

उत्तर : विस्तारित ऋण

7. मुद्रा के आधुनिक रूपों में शामिल हैं।

उत्तर : कागजी नोट

8. माँग पर वापस लिए गए बैंक खातों में जमा को कहा जाता है।

उत्तर माँग जमा

9. भारत में बैंक इन दिनों नकदी के रूप में अपनी जमा राशि का % रखते हैं।

उत्तर 15

10. चूँकि मुद्रा विनिमय प्रक्रिया में मध्यवर्ती के रूप में कार्य करती है, इसलिए इसे कहा जाता है।

उत्तर विनिमय का माध्यम

11. को नकदी के विकल्प के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

उत्तर क्रेडिट कार्ड

सही या गलत बताइए

1. एक रुपये का नोट वास्तविक मुद्रा है।

उत्तर : सही

2. बांग्लादेश बैंक 1960 में शुरू हुआ।

उत्तर : गलत

3. भारत में 500 रुपये के नोट रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया जारी करती है।

उत्तर : सही

4. गरीब परिवार औपचारिक स्रोतों से ऋण लेते हैं।

उत्तर : गलत

5. अमीर परिवार औपचारिक स्रोतों से ऋण लेते हैं।

उत्तर : सही

6. 'ऋण जाल' का अर्थ है, तब तक अत्यधिक खर्च करना, जब तक कोई पैसा न बचा हो।

उत्तर गलत

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

7. ग्रामीण बैंक बांग्लादेश में उचित दर पर गरीबों की ऋण जरूरतों को पूरा करने वाली सफलता की कहानी है।

उत्तर सही

8. बैंकों के लिए आय का मुख्य स्रोत जमा पर ब्याज है।

उत्तर गलत

9. संपार्श्विक माँग जिसके आधार पर उधारदाता ऋण देते हैं, उधारदाता के वाहन और भवन हैं।

उत्तर सही

10. एक SHG में, बचत और ऋण गतिविधियों के बारे में अधिकांश निर्णय सरकार द्वारा लिए जाते हैं।

उत्तर गलत

अति लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. मुद्रा का अर्थ बताएँ।

उत्तर :

ऐसी वस्तु जिसे सामान्य रूप से विनिमय का माध्यम, मूल्य की इकाई तथा मूल्य संचय के साधन के रूप में स्वीकार किया जाता है।

2. औपचारिक ऋण किसे कहते हैं?

उत्तर :

ऐसे ऋण जो बैंकों तथा सहकारी समितियों द्वारा दिए जाते हैं।

3. सिक्कों के प्रयोग से पहले कौन-सी दो वस्तुओं को मुद्रा के रूप में प्रयोग किया जाता था?

उत्तर :

1. अनाज तथा

2. पशु।

4. चेक का क्या अर्थ है?

उत्तर :

ऐसा पत्र जिसके द्वारा जमाकर्ता अपने खाते में से निश्चित राशि निकलवाने का आदेश देता है।

5. भारत में विनिमय माध्यम के रूप में कौन-सी करेंसी का प्रयोग किया जाता है?

उत्तर :

रुपया।

6. बैंकों में जमा राशियाँ किस प्रकार बैंकों की आय का स्रोत बनती हैं?

उत्तर :

बैंक जमा राशि के एक बड़े भाग को ऋण देने के लिए इस्तेमाल करते हैं। कर्जदारों से लिए गए ब्याज और जमाकर्ताओं को दिये गये ब्याज के बीच का अन्तर बैंकों की आय का प्रमुख स्रोत है।

7. SHG क्या है?

उत्तर :

स्वयं सहायता समूह।

8. धनी परिवारों के लिए साख का कौन-सा मुख्य स्रोत है?

उत्तर :

औपचारिक क्षेत्रक।

9. ऋण की शर्तों का क्या अभिप्राय है?

उत्तर :

ब्याज दर, सम्पत्ति तथा इनके दस्तावेजों की माँग, ऋण भुगतान विधि आदि को ऋण सम्बन्धी शर्तें कहा जाता हैं।

10. करेंसी किसे कहते हैं?

उत्तर :

मुद्रा के आधुनिक रूपों में प्रचलित रूप जैसे कि कागज के नोट और सिक्के इत्यादि शामिल हैं। उन्हें करेंसी कहा जाता हैं।

11. आवश्यकताओं के दोहरे संयोग से क्या अभिप्राय हैं?

उत्तर :

वस्तु विनिमय प्रणाली, जहाँ मुद्रा का उपयोग किए बिना वस्तुएँ सीधे आदान-प्रदान की जाती हैं, वहाँ एक व्यक्ति जो बेचने की इच्छा रखता है, तो दूसरे व्यक्ति की खरीदने की इच्छा से बिल्कुल मेल खाना चाहिए। इसे ही आवश्यकताओं का दोहरा संयोग कहते हैं।

12. वस्तु विनिमय प्रणाली का क्या अर्थ हैं?

उत्तर :

वस्तुओं के बदले वस्तुओं के लेन-देन की प्रणाली को वस्तु विनिमय प्रणाली कहते हैं।

13. उस स्थिति की पहचान कीजिए जब किसी वस्तु विनिमय अर्थव्यवस्था में दोनों पक्ष एक-दूसरे से चीजें खरीदने और बेचने पर सहमति रखते हों। इसे क्या कहा जाता हैं?

उत्तर :

इस स्थिति को आवश्यकताओं का दोहरा संयोग कहा जाता हैं।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. भारत की अर्थव्यवस्था में बैंक किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं? स्पष्ट कीजिए

उत्तर :

भारत की अर्थव्यवस्था में बैंक की अहम भूमिका हैं। आधुनिक समय में प्रतिदिन आर्थिक कार्यों और राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की दृष्टि से बैंकों की जरूरत होती हैं।

भूमिका-

1. यह लोगों में बचत की भावना पैदा करता हैं।
2. यह बचत को सुरक्षित रखता हैं।
3. यह बचत पर उचित ब्याज देता हैं।
4. जरूरत पड़ने पर बैंक हमें अपनी जमाराशि निकालने की सुविधा देता हैं।
5. जरूरत पड़ने पर यह व्यापारियों को ऋण देता हैं।

2. ग्रामीण भारत में ऋण के औपचारिक स्रोतों के विस्तार की महती आवश्यकता को एक तर्क देकर सिद्ध कीजिए।

उत्तर :

ग्रामीण भारत में ऋण के औपचारिक स्रोतों के विस्तार की महती आवश्यकता के पक्ष में तर्क-साहकारों, जमींदारों जैसे

अनौपचारिक साख स्रोतों द्वारा किए जाने वाले अपमान, उत्पीड़न और क्लेश से ऋणियों को छुटकारा मिलेगा।

3. मुद्रा आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या को किस तरह सुलझाती है? अपनी ओर से उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर :

1. जिस व्यक्ति के पास मुद्रा है, वह उसका विनिमय किसी भी वस्तु या सेवा खरीदने के लिए आसानी से कर सकता है।
2. इसलिए सभी लोग मुद्रा के रूप में भुगतान लेना पसंद करते हैं, फिर उस मुद्रा का प्रयोग अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ खरीदने के लिए करता है।
3. मान लीजिए, आप अपनी शर्ट खरीदने बाजार गए। शर्ट के विनिमय के रूप में आपने दुकानदार को जूते का जोड़ा दिया। दुकानदार को जूते की आवश्यकता नहीं होने पर वह उसे लेने से मना कर सकता है। अतः आवश्यकताओं का दोहरा संयोग होना आवश्यक है।
4. मुद्रा आवश्यकताओं को दोहरे संयोग की समस्या को समाप्त कर सकती है।
5. एक बार जब किसी वस्तु के लिए पैसे ले लिए जाते हैं, तो आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या समाप्त हो जाती है।

4. मुद्रा के कार्यों का वर्गीकरण करें।

उत्तर :

मुद्रा के कार्य- मुद्रा के कार्यों को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है-

1. **प्राथमिक कार्य-**

- (क) विनिमय का माध्यम,
- (ख) मूल्य का मापन।

2. **द्वितीयक कार्य-**

- (क) मूल्य का संचय,
- (ख) आस्थगित भुगतान का मानक,
- (ग) मूल्य का अंतरण।

3. **आकस्मिक कार्य-**

- (क) साख का आधार,
- (ख) पूँजी की तरलता में वृद्धि,
- (ग) संसाधनों का अधिकतम कुशल उपयोग,
- (घ) शोधन क्षमता की गारण्टी,
- (ङ) राष्ट्रीय आय का वितरण।

5. उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए कि ऋण किस प्रकार विकास के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और सकारात्मक भूमिका निभाता हैं?

उत्तर :

किसी भी देश के विकास के लिए धन की आवश्यकता होती है। एक व्यक्ति उद्योग लगाने का इच्छुक हैं, उसे ज्ञान भी है परन्तु धन नहीं है। अतः वह असमर्थ है। ऐसे समय में वह औपचारिक या अनौपचारिक विधि/स्रोत से ऋण लेकर उद्योग स्थापित कर

सकता है। वर्तमान युग में कोई भी व्यक्ति या परिवार ऐसा नहीं है जो समय पड़ने पर धन की उपयुक्त मात्रा को जुटा पाये। अतः उसे अपना रोजगार चलाने के लिए किसी भी स्रोत से धन ऋण के रूप में लेना ही पड़ता है। उधार या साख या ऋण देने वाले स्रोत अधिक हैं। अतः वे अपना धन कुछ ब्याज लेकर ऋण के रूप में देना चाहते हैं। आजकल धनी परिवार विशाल स्तर पर नया रोजगार स्थापित करने या पुराने रोजगार का विस्तार करने के लिए औपचारिक स्रोत से लिखित शर्तों पर ऋण लेते हैं। रोजगार प्रक्रिया से वे धन अर्जित करके ऋण चुका देते हैं, अपना जीवन स्तर ऊँचा करते हैं तथा देश की बेरोजगार श्रम शक्ति को रोजगार प्रदान करके राष्ट्र के स्तर को विकसित करने में योगदान करते हैं। इस प्रकार से ऋण देश के विकास के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण तथा सकारात्मक भूमिका निभाता है।

6. सस्ता और सामर्थ्य के अनुकूल कर्ज ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में गरीब परिवारों के लिए अति आवश्यक है। इस कथन के संदर्भ में इससे जुड़े सामाजिक और आर्थिक मूल्यों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

भारत एक विकासशील देश है। देश के स्तर को अधिक खुशहाल बनाने के लिए यह आवश्यक है कि यहाँ बेरोजगारी को समाप्त किया जाये तथा गरीबी दूर की जाये। इन समस्याओं को हल करने हेतु गरीब तथा बेरोजगारों को छोटे रोजगार लगाने की सलाह दी जानी चाहिए तथा उन्हें सस्ता और सामर्थ्य के अनुकूल कर्ज दिलाया जाये। ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे किसानों को तथा शहरी क्षेत्रों में बेरोजगार गरीब लोगों को उचित एवं सामर्थ्य के अनुसार कम ब्याज पर ऋण दिलाया जाये।

ग्रामीण छोटे किसानों तथा शहरी गरीब लोगों को रोजगार आदि के लिए सस्ती ब्याज दर पर बैंक तथा सहकारी समितियाँ ऋण देती हैं। किसान कृषि की आवश्यक वस्तुओं खाद, बीज, कीटनाशी आदि को खरीदकर उपज को बढ़ाकर अपना जीवन स्तर बढ़ाते हैं। शहरों में लोग छोटे उद्योग लगाकर अपना जीवन स्तर ऊँचा करते हैं। इससे देश की गरीबी तथा बेरोजगारी की समस्या का निदान सरलता से हो जाता है।

7. मुद्रा का उपयोग विनिमय के रूप में किस प्रकार किया जाता है? उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

मुद्रा को विनिमय का माध्यम इसलिए स्वीकार किया जाता है क्योंकि देश की सरकार इसे प्राधिकृत करती है।

मनुष्य अपनी आवश्यकता की वस्तुओं को मुद्रा की सहायता से विनिमय द्वारा प्राप्त करता है। मुद्रा वस्तु का मूल्य निर्धारित करती है। मुद्रा विनिमय प्रक्रिया में मध्यस्थता का काम करती है। इसीलिए मुद्रा को विनिमय का माध्यम कहा जाता है।

उदाहरणार्थ-

1. यदि किसी वस्तु को क्रेता को खरीदना हो तो उत्पादक एवं बाजार इसका मूल्य मुद्रा के रूप में निर्धारित करते हैं।
2. बैंकों में भी लोग अपना खाता खोलकर मुद्रा को जमा करते हैं तथा उसी निश्चित राशि को ब्याज सहित आवश्यकतानुसार वापिस ले सकते हैं।

8. लोग बैंकों के साथ किस प्रकार जुड़े होते हैं? उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

वास्तव में बैंक एक ऐसी संस्था है जो व्यक्ति के सच्चे मित्र के रूप में कार्य करती है। मानव बैंक से निम्न प्रकार से जुड़ा होता है।

1. **ऋण का औपचारिक स्रोत-**व्यक्ति आवश्यकता पड़ने पर बैंक से ऋण ले सकता है। यहाँ ऋण पर निश्चित ब्याज की दर ऋण लेने वाले से प्राप्त की जाती है। कर्जा लेने वाले पर किसी प्रकार ऋण वापसी का दबाव नहीं होता। ऋण आवश्यकतानुसार कितना भी किसी भी कार्य के लिए लिया जा सकता है।
2. भविष्य के लिए कोई भी व्यक्ति अपना खाता खुलवाकर अपना अतिरिक्त बचा धन बैंक में जमा करवा सकता है और आवश्यकता पड़ने पर कभी भी पुनः प्राप्त कर सकता है। साथ ही बैंक संचित धन पर ब्याज भी देता है।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

9. मुद्रा का आधुनिक रूप क्या है? **रुपये** को व्यापक रूप में विनिमय का माध्यम क्यों स्वीकार किया गया है? दो कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

करेंसी- कागज के नोट और सिक्के, मुद्रा के आधुनिक रूप हैं।

रुपये को व्यापक रूप में विनिमय का माध्यम इसलिए स्वीकार किया गया है क्योंकि यह विनिमय प्रक्रिया में सरलता से प्रयोग किया जा सकता है। लोग रुपये (मुद्रा) के माध्यम से कुछ भी खरीद सकते हैं। अब विनिमय के लिए किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं रह गई है।

उदाहरण के लिए-आज हम यह देखते हैं कि जूतों का एक विनिर्माता अपनी गेहूँ की जरूरत के लिए ऐसे किसान को ढूँढ़ने नहीं जाता है जिसको जूतों की जरूरत हो और इसके बदले में गेहूँ देने का इच्छुक हो।

इसके विपरीत वह एक दुकान खोल लेता है तथा मुद्रा या रुपये से जूतों की बिक्री करता है। इन रुपयों को लेकर वह किराने (खाद्यान्न भंडार) की दुकान में जाता है और रुपये देकर गेहूँ खरीद लेता है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि मुद्रा के प्रचलन ने अब आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या समाप्त कर दी है।

मानव आवश्यकताओं की सभी चीजें बाजार में उपलब्ध हैं और प्रत्येक चीज को रुपयों से खरीदा जा सकता है।

10. गाँव के छोटे भूमिहीन कृषि मजदूरों तथा मध्यम किसानों के लिए ऋण की शर्तों की तुलना कीजिए।

उत्तर :

गाँव के लोगों के लिए साख के तीन मुख्य स्रोत हैं—

1. ग्रामीण बैंक,
2. साख समितियाँ,
3. साहूकार (महाजन)।

गाँव के छोटे भूमिहीन कृषि मजदूरों को कोई बैंक ऋण नहीं देता। इसके निम्नलिखित कारण हैं—

1. कृषि मजदूर की आय का कोई नियमित स्रोत नहीं होता।
2. वह किसी संस्था का वैधानिक/स्थायी कर्मचारी नहीं होता।
3. उसके पास भूखण्ड, आवास या आभूषण नहीं होता।
4. वह मानसिक रूप से अस्वस्थ होता है।
5. संभव है कि वह पहले से ही किसी ऋणदाता का ऋणी हो और उसका ऋण चुकाने में असमर्थ हो।
6. संभव है कि उसने पहले इस संस्था से ऋण लिया हो जो अभी भी शेष हो।

11. व्यापार में ऋण की सकारात्मक भूमिका को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. समानता एवं आर्थिक न्याय स्थापित करने के लिए।
2. समांतर मुद्रा या काले धन के विकास की संभावना को समाप्त करने के लिए।
3. समाज के सभी वर्गों में एकता एवं समरसता सुनिश्चित करने के लिए।
4. समाज में गरीबों तथा अमीरों के बीच विभाजन को रोकने के लिए तथा संपूर्ण मानव विकास को प्रोत्साहित करने के लिए।
5. भ्रष्ट आचरण एवं व्यवहार पर रोक लगाने के लिए तथा देश के समग्र विकास के लिए।

12. दैनिक जीवन में मुद्रा का किस प्रकार उपयोग किया जाता है? उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

मुद्रा सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त निश्चित मूल्य दर्शाने वाली वस्तु है। वर्तमान युग में क्रय-विक्रय हेतु इसका उपयोग किया जाता है।

1. किसी वस्तु को खरीदते समय मुद्रा उसके मूल्य को निर्धारित करने में सहयोग करती है। मुद्रा का रूप सुक्ष्मतम एक पैसे से लेकर 1000 रुपये तक प्रचलन में है। अतः यह वस्तु के अंश में भी क्रय-विक्रय करने में सहायता प्रदान करती है।
2. श्रमिकों एवं अन्य कर्मचारियों के मासिक वेतन का निर्धारण

करने में मुद्रा सरलता एवं सहयोग प्रदान करती है।

3. मुद्रा को भविष्य के लिए घर तथा बैंकों में संचित किया जा सकता है।
4. मुद्रा को सरलता से देश-विदेशों में भी भेजा जा सकता है।
5. मुद्रा के आधार पर व्यक्ति की निजी संपत्ति का मूल्यांकन किया जा सकता है। इससे समाज में उसके स्थान तथा अस्तित्व को भी आँका जा सकता है।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

13. विनिमय की प्रक्रिया में मुद्रा किस प्रकार माध्यम का काम करती है?

उत्तर :

विनिमय की प्रक्रिया में मुद्रा विनिमय का माध्यम तथा मूल्य का मापक है। मुद्रा एक साधन है साध्य नहीं, मुद्रा पर सरकारी नियंत्रण रहता है। मुद्रा को सबसे ज्यादा तरल माना जाता है। इसलिए मुद्रा को विनिमय के रूप में स्वीकार किया जाता है।

14. वस्तु विनिमय प्रणाली की कोई तीन सीमाएँ लिखें।

उत्तर :

वस्तु विनिमय प्रणाली की तीन सीमाएँ—

1. वस्तु विनिमय तभी संभव है जब आवश्यकता का दोहरा संयोग पाया जाए।
2. वस्तु विनिमय प्रणाली में धन या मूल्य के संचय में कठिनाई होती है।
3. कुछ वस्तुएँ अविभाज्य होती हैं अतः कुछ आवश्यकताएँ पूरी नहीं की जा सकती।
4. वस्तुओं का भंडारण लम्बे समय के लिए नहीं किया जा सकता।

15. बैंकों और सहकारी समितियों को अपनी गतिविधियों को ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ाने की आवश्यकता क्यों है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

बैंकों और सहकारी समितियों को अपनी गतिविधियों को ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ाने की आवश्यकता है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में—

1. साहूकार ब्याज की ऊँची दर लेते हैं।
2. साहूकार अपना पैसा वापिस लेने के लिए अनुचित साधनों का प्रयोग करते हैं।
3. ग्रामीण विकास के लिए सस्ता और सामर्थ्य के अनुकूल कर्ज होना चाहिए।
4. सस्ता कर्ज उत्पादन की लागत में कमी करता है।

16. आधुनिक मुद्रा को, जिसका अपना कोई उपयोग नहीं है, विनिमय का माध्यम क्यों स्वीकार किया जाता है? कारण ज्ञात कीजिए।

उत्तर :

भारत में मुद्रा के आधुनिक रूपों में करेंसी, कागज के नोट और सिक्के शामिल हैं। आधुनिक मुद्रा को विनिमय का माध्यम स्वीकार किया गया है क्योंकि—

1. किसी देश की सरकार इसे प्राधिकृत करती है।
2. भारतीय रिजर्व बैंक आधुनिक मुद्रा जारी करता है।
3. साख का आधार।
4. यह राष्ट्रीय आय का वितरण है।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. मुद्रा का आधुनिक रूप क्या है? रुपये को व्यापक रूप में विनिमय का माध्यम क्यों स्वीकार किया गया है? दो कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

करेंसी- कागज के नोट और सिक्के, मुद्रा के आधुनिक रूप हैं।

रुपये को व्यापक रूप में विनिमय का माध्यम इसलिए स्वीकार किया गया है क्योंकि यह विनिमय प्रक्रिया में सरलता से प्रयोग किया जा सकता है। लोग रुपये (मुद्रा) के माध्यम से कुछ भी खरीद सकते हैं। अब विनिमय के लिए किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं रह गई है।

उदाहरण के लिए-आज हम यह देखते हैं कि जूतों का एक विनिर्माता अपनी गेहूँ की जरूरत के लिए ऐसे किसान को ढूँढ़ने नहीं जाता है जिसको जूतों की जरूरत हो और इसके बदले में गेहूँ देने का इच्छुक हो।

इसके विपरीत वह एक दुकान खोल लेता है तथा मुद्रा या रुपये से जूतों की बिक्री करता है। इन रुपयों को लेकर वह किराने (खाद्यान्न भंडार) की दुकान में जाता है और रुपये देकर गेहूँ खरीद लेता है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि मुद्रा के प्रचलन ने अब आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या समाप्त कर दी है। मानव आवश्यकताओं की सभी चीजें बाजार में उपलब्ध हैं और प्रत्येक चीज को रुपयों से खरीदा जा सकता है।

2. साख की शर्तें क्या हैं?

उत्तर :

1. हर ऋण समझौते में एक विशेष ब्याज दर का उल्लेख होता है जिसे उधारकर्ता के मूलधन के भुगतान के समय चुकाना होता है।
2. इसके अतिरिक्त ऋणदाता गिरवी यानी एक ऐसी संपत्ति की माँग रख सकता है जो उधारकर्ता की अपनी हो एवं ऋण के भुगतान तक उसका गारण्टी के तौर पर इस्तेमाल किया जा सके।
3. उधारकर्ता यदि ऋण का भुगतान नहीं कर पाता है तो ऋणदाता को भुगतान पाने के लिए गिरवी को बेचने का अधिकार है।

4. साख की शर्तें में ब्याज दर, गिरवी दस्तावेज और भुगतान की तारीख अहम हैं।
5. साख की शर्तें एक साख से दूसरी साख में बदलती रहती हैं। वे उधारदाता और उधारकर्ता की प्रकृति के आधार पर बदलते रहते हैं।

3. कौन-सी संस्था ऋणों के औपचारिक स्रोतों की कार्य प्रणाली पर नजर रखती है? ऋण की किन्हीं चार शर्तों को उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

भारतीय रिजर्व बैंक ऋणों के औपचारिक स्रोतों की कार्यप्रणाली पर नजर रखता है।

ऋण की चार शर्तें निम्न प्रकार हैं—

1. **ब्याज दर**—हर ऋण समझौते में ब्याज दर निश्चित कर दी जाती है, जिसे कर्जदार मूल राशि के साथ अदा करता है।
2. **समर्थक ऋणाधार**—उधारदाता कोई समर्थक ऋणाधार (गिरवी रखने के लिए) की माँग कर सकता है। समर्थक ऋणाधार ऐसी संपत्ति है, जिसका मालिक कर्जदार है (जैसे—भूमि, इमारत, गाड़ी, पशु अथवा बैंकों में जमा पूँजी)।
3. **आवश्यक कागजात**—कागजातों में पहचान पत्र, राशन कार्ड इत्यादि की आवश्यकता होती है।
4. **भुगतान के तरीके**—इसका अर्थ है कि कर्जदार कर्ज को कितने वर्षों में, कितनी किस्तों में अदा करेगा तथा अदा करने का तरीका नकद होगा या चेक द्वारा भुगतान किया जाएगा।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

4. बैंकों की निक्षेप तथा ऋण संबंधी गतिविधियों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

बैंक वह संस्था है जो राज्य तथा केन्द्र सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है तथा जिसका उत्तरदायित्व सरकार पर ही है। बैंकों पर जनता को विश्वास भी है। सामान्यतः बैंक के दो प्रमुख कार्य हैं—

1. जनता के धन का निक्षेपण करना।
2. जनता को साख देना।

निक्षेप क्रिया—जनता अपनी बचत को चोरी से अथवा फिजूल खर्ची से बचाने के लिए बैंकों में निक्षेप कर देती है। इससे जनता को निम्नलिखित लाभ होते हैं—

1. जनता का कमाया गया धन अथवा उसका बचाया गया कुछ अंश बैंक में सुरक्षित रहता है।
2. व्यक्ति उसको आसानी से व्यय नहीं कर पाता क्योंकि इसे प्राप्त करने के लिए निश्चित समयावधि में बैंक जाकर उचित कार्यवाही करके ही प्राप्त किया जा सकता है।
3. निक्षेपित धन को चोर नहीं चुरा सकता।

निक्षेपित क्रिया के अतिरिक्त बैंक जनता को ऋण भी प्रदान करता है—

1. एक सामान्य व्यक्ति अपने व्यवसाय को प्रारम्भ करने

अथवा उसको निष्कासित करने के लिए बैंक से ऋण ले सकता है।

2. बैंक से ऋण लेने की प्रक्रिया सरल है तथा ऋण पर ब्याज भी कम देना पड़ता है। साथ ही ऋण के बदले में उसे अपना बहुमूल्य सामान जैसे सोने के आभूषण, भूखण्ड आदि को बैंक के पास गिरवी के रूप में भी नहीं रखना पड़ता।
3. समाज में ऋणग्राही का अपमान भी नहीं होता।
5. किसी देश की अर्थव्यवस्था में मुद्रा क्या भूमिका निभाती है?

उत्तर :

अर्थव्यवस्था में मुद्रा का कार्य/भूमिका-

1. एक देश की अर्थव्यवस्था में मुद्रा का महत्वपूर्ण कार्य है। जीवन के प्रत्येक कदम पर धन का ही प्रयोग होता है। वस्तुतः मुद्रा के बिना जीवित रहने की कल्पना करना भी कठिन है।
2. यह वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय को सुगम बनाती है अर्थात् व्यापार का संचालन करने में समय और परिश्रम की बर्बादी को न्यूनतम कर देती है।
3. वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय किए बिना कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता है। वस्तु विनिमय में कई समस्याएँ हैं अतः मुद्रा की अनुपस्थिति में लेन देन करना आसान नहीं है।
4. आधुनिक अर्थव्यवस्था अति विशिष्टीकरण वाली है। पूँजी की अलग-अलग किस्मों एवं बहुविधि उपयोग से फर्म, व्यापार, कारोबार में विशिष्टता आई है। ऐसा विशिष्टीकरण प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यता का अधिक से अधिक लाभ देने में सक्षम बनाता है। विनिमय और व्यापार की उच्च विकसित व्यवस्था न रहने की दशा में ऐसा विशिष्टीकरण लाना संभव नहीं होगा।
5. मुद्रा चार महत्वपूर्ण कार्यों को संपन्न करती है। ये कार्य हैं-
 1. मूल्य की एक इकाई,
 2. विनिमय का माध्यम,
 3. आस्थगित भुगतानों का एक मानक और
 4. मूल्य का संचय या संग्राहक।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

6. साख के स्रोतों के दो वर्ग कौन से हैं? प्रत्येक वर्ग की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :

साख एक ऐसी स्थिति है जिसके अंतर्गत ऋणदाता ऋणी को वस्तुएँ, मुद्रा अथवा सेवाएँ इस शर्त पर प्रदान करता है कि वह भविष्य में उसका भुगतान करेगा।

ऋणदाता को साख स्रोत भी कहते हैं। साख के स्रोतों को दो मुख्य वर्गों में विभाजित किया जाता है।

1. **साख के औपचारिक क्षेत्र-** इसके अंतर्गत बैंक तथा

सहकारी समितियाँ आती हैं।

2. **साख के अनौपचारिक क्षेत्र-** इसके अंतर्गत साहूकार, मित्र, संबंधी, व्यापारी आदि आते हैं।

साख के औपचारिक क्षेत्रों की विशेषताएँ-

1. ये स्रोत भारतीय रिजर्व बैंक के अधीन कार्य करते हैं। उसी के निर्देशानुसार जनता को ऋण देते हैं। वे निष्ठापूर्वक कार्य करते हैं।
2. इन स्रोतों की ब्याज की दर भी बहुत कम होती है।
3. ये स्रोत ऋणी व्यक्ति पर ऋण वापसी के लिए दबाव भी नहीं डालते तथा उनकी समाज में निंदा भी नहीं करते।

साख के अनौपचारिक स्रोतों की विशेषताएँ-

इस प्रकार के अनौपचारिक स्रोत ऋणी को निम्न शर्तों पर ऋण देते हैं-

1. वे ऋणी को, उसकी आय स्रोत को तथा उसकी आर्थिक स्थिति को भली प्रकार से जानते हों।
2. वे ऋणी को किसी भी समय आवश्यकतानुसार ऋण दे देते हैं।
3. वे ऋण देते समय ऋणी से ऋण राशि से अधिक मूल्य की वस्तु को गिरवी के रूप में अपने अधिकार में ले लेते हैं।

7. औपचारिक क्षेत्र के ऋणों को किस प्रकार गरीब किसानों और मजदूरों के लिए लाभकारी बनाया जा सकता है? कोई पाँच उपाय सुझाइये।

उत्तर :

1. बैंकों और सहकारी समितियों को गरीब किसानों तथा मजदूरों को ज्यादा ऋण देना चाहिए। इससे लोगों की आय बढ़ सकती है तथा बहुत से लोग अपनी विभिन्न जरूरतों के लिए सस्ता ऋण भी ले सकते हैं।
2. सस्ता और सामर्थ्य के अनुसार ऋण देश के विकास के लिए अति आवश्यक है। यह गरीब किसानों और मजदूरों के लिए लाभकारी साबित हो सकता है। वे नया उद्योग लगा सकते हैं अथवा वस्तुओं का व्यापार भी प्रारम्भ कर सकते हैं।
3. कुछ मामलों में ऋण की ऊँची ब्याज दरों के कारण कर्ज वापस करने की रकम कर्जदार की आय से अधिक हो जाती है। फलतः ऋण का बोझ बढ़ जाता है एवं व्यक्ति ऋण-जाल में फँस जाता है। औपचारिक स्रोत से प्राप्त ऋण लोगों को इस समस्या से उभार सकता है। उन्हें किसी नवीन कार्य प्रारम्भ करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
4. औपचारिक स्रोत के ऋणों के विस्तार के साथ यह आवश्यक है कि यह ऋण सभी को प्राप्त हो। अतः यह आवश्यक है कि औपचारिक ऋण का अधिक समान वितरण हो जिससे गरीब किसान और मजदूर वर्ग के लोग भी सस्ते ऋण का फायदा उठा सकें।
5. ऋण की ऊँची दर का मतलब हो सकता है जो धन

भुगतान किया जाना है वह उधारकर्ता की आय से ज्यादा होगी। इससे ऋण बढ़ेगा और व्यक्ति ऋण जाल में फँस जाएगा।

8. बचत एवं साख की अनौपचारिक संस्थाओं के रूप में जमींदारों की भूमिका का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर :

1. प्राचीन काल से ही भू-स्वामी अस्तित्व में आ चुके थे। ये भी गरीब लोगों की जमीन हड़पना चाहते थे लेकिन वे निर्दय नहीं थे। भारत के सभी ग्रामीण लोगों में भाईचारे की भावना होती थी। कुछ हिन्दुओं के बहुत संपत्तिवान मंदिर एवं शिल्पकारों तथा व्यापारियों की श्रेणियाँ या संघ भी स्थानीय ऋणदाताओं की भूमिका का निर्वाह किया करते थे। ये संगठन जरूरतमंद लोगों के बहुत ही मददगार होते थे।
2. मध्यकाल में भू-स्वामियों (जमींदारों) की संख्या बढ़ गई। कुछ राजपूत एवं मुस्लिम इकतादारों एवं मनसबदारों के रूप में मुगल सम्राटों के शासन काल में भी जमींदारों का एक शक्तिशाली वर्ग उभरकर आया। वे कस्बों तथा शहरों में रहने वाले थे और उनके साथ-साथ कुछ ग्रामीण क्षेत्रों के जमींदार भी रहते थे। इस काल में कुछ किसान एवं शहरों के निर्धन लोग अपनी जमीन या चाँदी के आभूषण ऋण (कर्ज) के बदले गिरवी रख देते थे। ब्रिटिश काल में इन नए जमींदारों ने पुराने जमींदारों को सहायता देने वाला रवैया (स्वभाव) छोड़ दिया। अंग्रेजी सरकार ने उनके पक्ष में कानूनों को बदल डाला क्योंकि वे अंग्रेजी राज के समर्थक निर्धन किसानों और शहरी लोगों का इन नए जमींदारों तथा महाजनों ने निर्दयतापूर्वक शोषण किया। भारत में अंग्रेजी शासन के दौरान औपचारिक साख के स्रोत नहीं थे।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

9. केन्द्रीय बैंक तथा वाणिज्यिक बैंक में अन्तर बताएँ।

उत्तर :

केन्द्रीय बैंक तथा वाणिज्यिक बैंक में अन्तर-

आधार	केन्द्रीय बैंक	वाणिज्यिक बैंक
1. अर्थ	यह देश के मौद्रिक और बैंककारी ढाँचे वाला एक शीर्ष संस्थान है।	लाभ कमाने के प्रयोजन से मुद्रा और साख में कार्य-व्यवहार करने वाला संस्थान है।
2. उद्देश्य	सामाजिक कल्याण को प्रोन्नत करना।	लाभ कमाना।
3. कार्य-क्षेत्र	लोगों के साथ सीधा सम्पर्क नहीं रहता।	लोगों के साथ सीधा संपर्क रहता है।

आधार	केन्द्रीय बैंक	वाणिज्यिक बैंक
4. प्रतिस्पर्धा	वाणिज्यिक बैंकों के साथ इसकी कोई प्रतिस्पर्धा नहीं होती।	संख्या में अनेक होने से इन बैंकों के बीच प्रतिस्पर्धा रहती है।
5. विदेशी विनिमय	देश की आरक्षित विदेशी मुद्रा का अभिरक्षक है।	ये केवल विदेशी मुद्रा में व्यवहार करते हैं।
6. नियंत्रण	सरकार के नियंत्रण में कार्य करता है।	सरकार या फिर निजी क्षेत्र के स्वामित्व वाला भी हो सकता है।

10. बैंक में पैसा जमा करवाने के लाभ लिखें।

उत्तर :

बैंक में पैसा जमा कराने के लाभ- बैंक में पैसे जमा कराने के निम्नलिखित लाभ हैं-

1. घर या कार्यस्थल की अपेक्षा बैंक में पैसा रखना अधिक सुरक्षित होता है।
2. लोगों को जमा राशि पर ब्याज मिलता है।
3. जब भी चाहे लोग बैंक से जमा राशि को निकलवा सकते हैं।

11. रुपये को विनिमय के माध्यम के रूप में स्वीकार किया जाता है। समझाइए।

उत्तर :

रुपये को विनिमय के माध्यम के रूप में स्वीकार करने के कारण- रुपये को विनिमय के माध्यम के रूप में स्वीकार करने के निम्नलिखित कारण हैं-

1. यह देश की सरकार द्वारा अधिकृत है।
2. भारत में भुगतान करने के लिये इसे कानूनी मान्यता है। भारत में लेन-देन में इसे इन्कार नहीं किया जा सकता।
3. भारत में प्रत्येक वस्तु या सेवा का मूल्य इसमें मापा जाता है।

12. ऋण की महत्वपूर्ण और सकारात्मक भूमिका का उदाहरणों सहित वर्णन कीजिए।

उत्तर :

1. विकास में ऋण की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि ऋण के माध्यम से व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं (घरेलू या व्यवसायिक) को पूरा कर सकता है।
2. विशेष रूप से औपचारिक स्रोतों से लिए गए ऋण के सकारात्मक प्रभाव होते हैं। इससे व्यक्ति अपनी आय में वृद्धि करने में सफल होता है और ठीक समय पर ऋण भी वापस कर देता है।
3. इससे व्यक्ति अपना जीवन स्तर सुधार लेता है और उन्नति व विकास करता है।
4. व्यक्ति की आय में वृद्धि से देश के विकास में भी सहायता मिलती है। इस प्रकार विकास में ऋण की महत्वपूर्ण

भूमिका हैं।

13. ग्रामीण क्षेत्र में साख के कौन से स्रोत हैं? उनमें से कौन-सा साख का सुविधाजनक स्रोत हैं?

उत्तर :

ग्रामीण क्षेत्र में साख के कई स्रोत हैं। इन स्रोतों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

1. **औपचारिक स्रोत**— औपचारिक स्रोतों में बैंक तथा सहकारी समितियाँ आदि हैं।
2. **अनौपचारिक स्रोत**— साहूकार, महाजन, व्यापारी, संबंधी, नियोक्ता, मित्र आदि हैं।

सुविधाजनक स्रोत—साख के अनौपचारिक स्रोत निम्नलिखित कारणों से सुविधाजनक है—

1. साख के अनौपचारिक स्रोत से ऋण प्राप्त करना बहुत सरल है। इनसे जरूरत के समय तत्काल ऋण लिया जा सकता है।
2. साख के औपचारिक स्रोत की अपेक्षा साख के अनौपचारिक स्रोत से ऋण लेने में कम गारण्टी की आवश्यकता होती है।
3. किसी ऋणाधार की जरूरत नहीं होती क्योंकि ऋणदाता उधारकर्ता को व्यक्तिगत रूप से जानता है।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

NCERT पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

1. जोखिम वाली परिस्थितियों में ऋण कर्जदार के लिए और समस्याएँ खड़ी कर सकता है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

यह तथ्य बिल्कुल सही है कि जोखिम वाली परिस्थितियों में ऋण कर्जदार के लिए और समस्याएँ खड़ी कर सकता है। इसके समर्थन में निम्नलिखित तर्क दिए जा सकते हैं—

1. स्वप्ना साहूकार से ऋण लेकर अपने 3 एकड़ के खेत में मूँगफली बीजती है लेकिन कीटनाशकों से उसकी फसल बर्बाद हो जाती है। अतः वह साहूकार का कर्जा नहीं उतार सकी। अगली फसल की बिजाई करने के लिए उसे साहूकार से पुनः कर्जा लेना पड़ा। अगली बार भी उसकी फसल कोई खास नहीं हुई और वह कर्जा नहीं उतार सकी। अतः स्वप्ना की कमाई बढ़ने की बजाय उसकी स्थिति बदतर होती चली गई और वह कर्ज-जाल में फँस गई।
2. इसी प्रकार से यदि कोई व्यापारी अपना मकान गिरवी रखकर ऋण लेता है और उससे कोई व्यवसाय शुरू करता है। यदि व्यवसाय न चले और व्यापारी बैंक का पैसा लौटाने की स्थिति में न हो तो बैंक उसका मकान नीलाम कर देता है।

2. मुद्रा आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या को किस तरह सुलझाती है? अपनी ओर से उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर :

मुद्रा विनिमय प्रणाली वस्तु विनिमय प्रणाली से अधिक उत्तम है। आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या वस्तु विनिमय की सबसे कठिन समस्या है। यदि दो व्यक्तियों की आवश्यकता सम्बन्धी वस्तुएँ नहीं मिल पाती हैं, तो विनिमय होना असम्भव है। उदाहरणार्थ, यदि किसी जूते निर्माता को गेहूँ की आवश्यकता है तो उसे पहले ऐसा गेहूँ वाला ढूँढना होगा जिसके पास न केवल गेहूँ हो बल्कि उसे जूते भी चाहिए हों। मुद्रा का उपयोग करके इस समस्या का तुरन्त समाधान किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप, यदि किसी व्यक्ति के पास अतिरिक्त (Surplus) जूते हैं एवं वह इसके बदले गेहूँ या कोई अन्य वस्तु चाहता है, तो वह बाजार में जूते बेचकर प्राप्त मुद्रा से कोई भी अपनी आवश्यकता सम्बन्धी वस्तु खरीद सकता है।

3. अतिरिक्त मुद्रा वाले लोगों और जरूरतमन्द लोगों के बीच बैंक किस तरह मध्यस्थता करते हैं?

उत्तर :

अतिरिक्त मुद्रा वाले व्यक्ति अपनी मुद्रा को बैंकों में अपने नाम से खाता खोलकर जमा कर देते हैं। बैंक ये निक्षेप स्वीकार करते हैं और इस पर सूद (ब्याज) भी देते हैं। इस तरह लोगों की मुद्रा बैंकों के पास सुरक्षित रहती है और इस पर ब्याज भी मिलता है। लोगों को इसमें से जब चाहे मुद्रा निकालने की सुविधा भी प्रदान की जाती है। बैंक इस जमा राशि का केवल 15% हिस्सा नकद के रूप में अपने पास रखते हैं। बैंक जमा राशि के प्रमुख भाग को कर्ज देने के लिए इस्तेमाल करते हैं। विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के लिए कर्ज की बहुत माँग रहती है। बैंक लोगों को कर्ज देता है और उन पर ब्याज लगाता है। इस प्रकार बैंक दो गुटों के बीच मध्यस्थता का काम करते हैं।

4. 10 रुपए के नोट को देखिए। इसके ऊपर क्या लिखा है? क्या आप इस कथन की व्याख्या कर सकते हैं?

उत्तर :

इस नोट पर लिखा हुआ है—**मैं धारक को दस रुपए अदा करने का वचन देता हूँ—इसके नीचे रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया के गवर्नर के हस्ताक्षर हैं।**

इस कथन का अर्थ है कि रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया के गवर्नर को भारत सरकार की ओर से मुद्रा जारी करने का अधिकार दिया गया है। आर.बी.आई. के गवर्नर का यह वादा धारकों के मन में मुद्रा के प्रति विश्वसनीयता पैदा करता है।

5. हमें भारत में ऋण के औपचारिक स्रोतों को बढ़ाने की क्यों जरूरत है?

उत्तर :

भारत में ऋण के औपचारिक स्रोत बैंक और सहकारी समितियाँ हैं। ऋण के औपचारिक स्रोत अर्थात् बैंक और सहकारी समितियाँ रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया की निगरानी में कार्य करते हैं। इनके द्वारा दिए जाने वाले ऋणों पर ब्याज की दरें रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया के द्वारा तय की जाती हैं। औपचारिक ऋण

स्रोतों से लिए गए ऋण पर ब्याज की दर कम होती है, ऋण वापसी की शर्तें अधिक स्पष्ट और सुगम होती हैं।

औपचारिक ऋण स्रोत आर्थिक क्षेत्र के उत्पादकों के लिए एक सुरक्षित ऋण का सबसे अच्छा साधन हो सकते हैं। भारतीय जनसंख्या का एक बड़ा भाग निर्धन है। गरीब लोग साहूकार या महाजन से ऊँची ब्याज दरों पर ऋण लेकर काम-धंधा शुरू करने में असमर्थ होते हैं। अतः सामाजिक और आर्थिक हितों को बढ़ावा देने के लिए औपचारिक ऋण स्रोतों को बढ़ाने की जरूरत है।

6. गरीबों के लिए स्वयं सहायता समूहों के संगठनों के पीछे मूल विचार क्या हैं? अपने शब्दों में व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

गरीबों के लिए स्वयं सहायता समूहों के संगठनों के पीछे मूल विचार यह है कि उन्हें महाजनों और साहूकारों के कर्ज-जाल से मुक्त कराया जा सके। स्वयं सहायता समूह का उद्देश्य इसके सदस्यों के लिए स्वरोजगार के अवसर पैदा करना है। स्वयं सहायता समूहों की योजना विशेषकर महिलाओं को छोटे-छोटे स्वयं सहायता समूहों में संगठित करने और उनकी बचत पूँजी को इकट्ठा करने पर आधारित है। एक विशेष स्वयं सहायता समूह में एक-दूसरे के पड़ोसी 15-20 सदस्य होते हैं, जो नियमित रूप से मिलते हैं और बचत करते हैं। प्रति व्यक्ति बचत ₹25 से लेकर ₹100 या इससे अधिक हो सकती है। यह परिवारों की बचत करने की क्षमता पर निर्भर होता है। सदस्य अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए छोटे ऋण समूह से ही ऋण ले सकते हैं। समूह इन ऋणों पर ब्याज लेता है लेकिन यह साहूकार द्वारा लिए जाने वाले ब्याज से कम होता है।

7. क्या कारण है कि बैंक कुछ कर्जदारों को कर्ज देने के लिए तैयार नहीं होते?

उत्तर :

निम्नलिखित कारणों से बैंक कुछ कर्जदारों को कर्ज देने के लिए तैयार नहीं होते हैं-

1. कुछ लोगों के पास बैंक में गिरवी रखने के लिए कोई सम्पत्ति नहीं होती है।
 2. कुछ लोग इस अवस्था में नहीं होते हैं कि ऋण का भुगतान कर सकें।
 3. कुछ लोग पहले से ही उधारी के पंजों में जकड़े होते हैं, इसीलिए बैंक उन लोगों को और ऋण देना नहीं चाहता है।
8. भारतीय रिजर्व बैंक अन्य बैंकों की गतिविधियों पर किस तरह नजर रखता है? यह जरूरी क्यों है?

उत्तर :

भारतीय रिजर्व बैंक ऋणों के औपचारिक स्रोतों की कार्यप्रणाली पर नजर रखता है। उदाहरण के लिए, बैंक अपनी जमा का एक न्यूनतम नकद हिस्सा अपने पास रखते हैं। आर.बी.आई. नजर रखता है कि बैंक वास्तव में नकद शेष बनाए हुए हैं।

आर.बी.आई. इस पर भी नजर रखता है कि बैंक केवल लाभ प्राप्त करने वाले व्यवसायियों और व्यापारियों को ही ऋण नहीं दिलवा रहे, बल्कि छोटे किसानों, छोटे उद्योगों, छोटे कर्जदारों इत्यादि को भी ऋण दे रहे हैं। समय-समय पर, बैंकों द्वारा आर.बी.आई. को यह जानकारी देनी पड़ती है कि वे कितना और किसे ऋण दे रहे हैं और उसकी ब्याज की दरें क्या हैं?

आर.बी.आई. बैंकों और सहकारी समितियों की कार्यप्रणाली पर नजर रखने तथा उनके लिए नए दिशा-निर्देश जारी करने का कार्य करता है। यदि इन औपचारिक ऋण संस्थाओं पर नियंत्रण रखने वाली रिजर्व बैंक जैसी कोई संस्था न हो तो ये भी अनौपचारिक ऋण स्रोतों की भाँति मनमानी करने लग जाएँगे।

9. विकास में ऋण की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :

विकास में ऋण की एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है। ऋण के माध्यम से उत्पादक पूँजी प्राप्त करता है और बिना पूँजी के विकास असंभव है। किसी भी स्रोत से ऋण लेकर किसान अपने खेत में फसल बीजता है, उसमें कीटनाशकों और खरपतवारनाशकों का छिड़काव करता है। यदि फसल अच्छी हो जाती है तो वह कर्ज भी उतार देता है और अपने परिवार के लिए अनाज का उत्पादन भी कर लेता है। इसी प्रकार से एक उद्यमी अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए ऋण लेकर कच्चा माल और नई मशीनें खरीदता है और उत्पादन करके लाभ अर्जित करता है। अतः ऋण विकास का एक महत्वपूर्ण तत्व है।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

10. मानव को एक छोटा व्यवसाय करने के लिए ऋण की जरूरत है। मानव किस आधार पर यह निश्चित करेगा कि उसे यह ऋण बैंक से लेना चाहिए या साहूकार से? चर्चा कीजिए।

उत्तर :

मानव निम्नलिखित बातों के आधार पर तय करता है कि उसे ऋण बैंक से लेना चाहिए अथवा साहूकार से।

1. **समर्थक ऋणाधार-** सबसे पहले मानव यह देखता है कि उसे किस पार्टी से ऋण लेने के लिए किस समर्थक ऋणाधार की आवश्यकता है। अधिकतर साहूकार लोग बिना समर्थक ऋणाधार के भी ऋण दे देते हैं। यही कारण है कि गरीब लोग उनसे ऊँची ब्याज दरों पर भी ऋण ले लेते हैं।
2. **ब्याज दर-** कोई भी व्यक्ति बैंक और साहूकार की ब्याज दरों की गणना करने के उपरांत ही इस बात का निर्णय लेता है कि उसे कहाँ से ऋण लेना चाहिए।
3. **कागजी कार्रवाई-** कई बार बैंकों से ऋण लेने के लिए व्यक्ति को बहुत लंबी-चौड़ी कागजी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है इसलिए वह ऋण के अन्य स्रोतों के विकल्पों पर भी विचार करता है।

4. **अन्य शर्तें**— अन्य शर्तें जिनमें ऋण की वापसी की अवधि और ऋण भुगतान की बातों का वर्णन किया गया होता है, व्यक्ति के ऋण लेने के विकल्पों को प्रभावित करती हैं।

11. भारत में 80 प्रतिशत किसान छोटे किसान हैं, जिन्हें खेती करने के लिए ऋण की जरूरत होती है।

1. बैंक छोटे किसानों को ऋण देने से क्यों हिचकिचा सकते हैं?
2. वे दूसरे स्रोत कौनसे हैं, जिनसे छोटे किसान कर्ज ले सकते हैं।
3. उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए कि किस तरह ऋण की शर्तें छोटे किसानों के प्रतिकूल हो सकती हैं?
4. सुझाव दीजिए कि किस तरह छोटे किसानों को सस्ता ऋण उपलब्ध कराया जा सकता है?

उत्तर :

1. बैंक छोटे किसानों को ऋण देने से इसलिए हिचकते हैं क्योंकि बैंकों को पता होता है कि छोटे किसान के पास आय का एकमात्र स्रोत उसकी भूमि का वह छोटा-सा टुकड़ा है जिस पर वह खेती करता है। यदि किसी कारणवश उसकी फसल खराब हो गई तो वह मूलधन तो दूर ब्याज भी नहीं चुका पाएगा। अतः छोटे किसानों को ऋण देने में बैंकों को अपनी रकम डूबने का जोखिम रहता है।
2. साहूकार, नियोक्ता, स्वयं सहायता समूह एवं जमींदार आदि वे अन्य स्रोत हैं, जिनसे छोटे किसान ऋण ले सकते हैं।
3. यदि छोटा किसान अपनी जमीन के टुकड़े या घर को गिरवी रखकर ऋण लेता है और दुर्भाग्यवश वह उस ऋण को लौटा नहीं सका तो ऐसी स्थिति में उसकी हालत बहुत ही दयनीय हो जाएगी। उसे अपने भूमि के टुकड़े या घर से बेदखल तक होना पड़ सकता है।
4. छोटे किसानों को ऋण देने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में सहकारी समितियाँ खोली जानी चाहिए। इन सहकारी समितियों में ब्याज की दर कम रखी जानी चाहिए। यदि कभी कोई प्राकृतिक आपदा के कारण फसल खराब हो जाती है तो उस फसल अवधि के ब्याज को सरकार द्वारा माफ कर दिया जाना चाहिए ताकि किसान कर्ज-जाल में फँसने से बच सकें।

12. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें—

1. परिवारों की ऋण की अधिकांश जरूरतें अनौपचारिक स्रोतों से पूरी होती हैं।
2. ऋण की लागत ऋण का बोझ बढ़ाती है।
3. केंद्रीय सरकार की ओर से करेंसी नोट जारी करता है।
4. बैंक पर देने वाले ब्याज से ऋण पर अधिक ब्याज लेते हैं।
5. संपत्ति है जिसका मालिक कर्जदार होता है जिसे वह ऋण लेने के लिए गारंटी के रूप में इस्तेमाल करता है, जब तक ऋण चुकता नहीं हो जाता।

उत्तर :

1. गरीब
2. उच्च
3. भारतीय रिज़र्व बैंक
4. जमा राशि
5. समर्थक ऋणाधार

13. सही उत्तर का चयन करें—

1. स्वयं सहायता समूह में बचत और ऋण संबंधित अधिकतर निर्णय लिए जाते हैं—
(a) बैंक द्वारा (b) सदस्यों द्वारा
(c) गैर सरकारी संस्था द्वारा

उत्तर (b) सदस्यों द्वारा

2. ऋण के औपचारिक स्रोतों में शामिल नहीं है—

- (a) बैंक
- (b) सहकारी समिति
- (c) नियोक्ता

उत्तर (c) नियोक्ता

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

WWW.CBSE.ONLINE

वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. आज के विश्व में उपभोक्ताओं के पास वस्तुओं और सेवाओं के कैसे विकल्प हैं?

- (a) सीमित (b) विस्तृत
(c) बहुत कम (d) सामान्य

उत्तर (b) विस्तृत

2. बीसवीं शताब्दी के मध्य तक उत्पादन की क्या विशेषता थी?

- (a) यह देशों की सीमाओं के अंदर ही सीमित था
(b) यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक फैल चुका था
(c) यह केवल गाँवों तक ही सीमित था
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) यह देशों की सीमाओं के अंदर ही सीमित था

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

3. बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ किस स्थान पर अपने उद्योग स्थापित करती हैं?

- (a) जो बाजार के नजदीक हो
(b) जहाँ कम लागत पर कुशल और अकुशल श्रम उपलब्ध हो
(c) जिस देश की सरकारी नीतियाँ उनके हितों के अनुकूल हों
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

4. बहुराष्ट्रीय कंपनियों के निवेश का सबसे आम रास्ता है—

- (a) स्थानीय कंपनियों को खरीदना
(b) नई कंपनियाँ स्थापित करना
(c) वितरण प्रणाली को मजबूत करना
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) स्थानीय कंपनियों को खरीदना

5. फोर्ड मोटर्स किस देश की कंपनी है?

- (a) चीन (b) अमेरिका
(c) भारत (d) इंग्लैंड

उत्तर (b) अमेरिका

6. फोर्ड मोटर्स कंपनी का विश्व के कितने देशों में प्रसार है?

- (a) 20 (b) 26
(c) 30 (d) 36

उत्तर (b) 26

7. भारत के बाजारों में किस देश में बने खिलौनों की भरमार है?

- (a) चीन (b) मैक्सिको
(c) अमेरिका (d) इंग्लैंड

उत्तर (a) चीन

8. अतीत में देशों को जोड़ने वाला मुख्य माध्यम क्या था?

- (a) धर्म (b) लड़ाइयाँ
(c) व्यापार (d) वैश्वीकरण

उत्तर (c) व्यापार

9. वर्तमान समय में देशों को जोड़ने वाला मुख्य माध्यम है—

- (a) उदारीकरण (b) निजीकरण
(c) वैश्वीकरण (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (c) वैश्वीकरण

10. बहुराष्ट्रीय कंपनियों का सबसे अधिक लाभ किसे हुआ?

- (a) शहरी क्षेत्र के धनी उपभोक्ताओं को
(b) मजदूरों को
(c) किसानों को
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) शहरी क्षेत्र के धनी उपभोक्ताओं को

11. संचार प्रौद्योगिकी का रूप है—

- (a) इंटरनेट (b) ई-बैंकिंग
(c) ई-मेल (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

12. 26 जून, 2014 में विश्व व्यापार संगठन के सदस्य देशों की

संख्या है-

- (a) 129 (b) 139
(c) 160 (d) 159

उत्तर (c) 160

13. वैश्वीकरण से किस वर्ग को नुकसान हुआ है?

- (a) धनी उपभोक्ता को
(b) कुशल, शिक्षित एवं धनी उत्पादक को
(c) छोटे उत्पादक को
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (c) छोटे उत्पादक को

14. वैश्वीकरण का तत्व है-

- (a) विदेशी निवेश (b) विदेश व्यापार
(c) a और b दोनों (d) उपर्युक्त से कोई नहीं

उत्तर (c) a और b दोनों

15. न्यायसंगत वैश्वीकरण किस वर्ग के लिए अवसरों का सृजन करता है?

- (a) धनी उपभोक्ता
(b) कुशल, शिक्षित एवं धनी उत्पादक
(c) छोटा उत्पादक एवं श्रमिक
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

16. निम्नलिखित में से कौन-सी भारतीय कंपनी नहीं है?

- (a) कारगिल फूड्स (b) टाटा मोटर्स
(c) इंफोसिस (d) सुंदरम फास्नर्स

उत्तर (a) कारगिल फूड्स

17. विगत 20 वर्षों में बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत में अपने निवेश में की है।

- (a) वृद्धि (b) कमी
(c) न वृद्धि और न ही कमी (d) स्थिति स्पष्ट नहीं

उत्तर (a) वृद्धि

18. आयात पर कर किसका उदाहरण है?

- (a) उदारीकरण (b) निजीकरण
(c) वैश्वीकरण (d) व्यापार अवरोधक

उत्तर (d) व्यापार अवरोधक

19. वैश्वीकरण का एक बुरा प्रभाव कौन-सा है?

- (a) बढ़ती प्रतियोगिता व छोटे विनिर्माताओं को हानि

(b) प्रौद्योगिकी का विकास

(c) परिवहन का विकास

(d) औद्योगिक विकास

उत्तर (a) बढ़ती प्रतियोगिता व छोटे विनिर्माताओं को हानि

20. विश्व के 26 देशों में प्रसार के साथ विश्व की सबसे बड़ी मोटर गाड़ी निर्माता कंपनी फोर्ड मोटर्स भारत में कब आई?

- (a) 1992 ई. में (b) 1994 ई. में
(c) 1995 ई. में (d) 1997 ई. में

उत्तर (c) 1995 ई. में

21. कॉल सेंटर किस प्रकार की सेवा उपलब्ध कराता है?

- (a) ग्राहकों को सूचना उपलब्ध कराना एवं मदद करना
(b) वस्तुओं को खरीदने-बेचने में मदद करना
(c) सेवाओं के आदान-प्रदान करने में मदद करना
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) ग्राहकों को सूचना उपलब्ध कराना एवं मदद करना

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

22. वर्ष 2017 तक फोर्ड मोटर्स ने भारतीय बाजारों में कितनी कारें बेची?

- (a) 25000 (b) 88000
(c) 30000 (d) 32000

उत्तर (b) 88000

23. भारतीय खिलौना निर्माताओं पर चीनी खिलौनों का क्या प्रभाव पड़ा?

- (a) कोई प्रभाव नहीं
(b) लाभ कमाया
(c) नुकसान हुआ
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (c) नुकसान हुआ

24. बहुराष्ट्रीय कंपनियों की उत्पादन प्रक्रिया विश्वभर में क्यों फैली हुई है?

- (a) ताकि उत्पादन की लागत कम हो और बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अधिक लाभ कमा सकें।
(b) प्रौद्योगिकी की लागत वसूल सकें।
(c) ताकि विश्व में एकाधिकार कायम कर सकें।
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) ताकि उत्पादन की लागत कम हो और बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अधिक लाभ कमा सकें।

25. भारत में केन्द्र और राज्य सरकारों ने विदेशी कंपनियों को आकर्षित करने के लिए कौन से कदम उठाए हैं?

- (a) विश्वस्तरीय बिजली, पानी, परिवहन आदि की सुविधाएँ प्रदान करना
- (b) प्रथम पाँच वर्ष में कोई कर न देना
- (c) श्रम कानूनों को लचीला करना
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

26. अमेरिका के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का हिस्सा कितना है?

- (a) 1% (b) 2%
- (c) 3% (d) 5%

उत्तर (a) 1%

27. निम्नलिखित में से किस क्षेत्र ने भारत में वैश्वीकरण के कारण लाभ नहीं उठाया है?

- (a) औद्योगिक क्षेत्र (b) व्यापारिक क्षेत्र
- (c) कृषि क्षेत्र (d) परिवहन क्षेत्र

उत्तर (c) कृषि क्षेत्र

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

28. 70-80% प्रतिशत दुकानों में भारतीय खिलौनों के स्थान पर किस देश के खिलौनों की भरमार हो गई है?

- (a) अमेरिका (b) जापान
- (c) चीन (d) थाईलैंड

उत्तर (c) चीन

29. न्यायसंगत वैश्वीकरण के लिए कौन-से उपाय किए जा सकते हैं?

- (a) श्रमिक कानूनों का उचित कार्यान्वयन
- (b) छोटे उत्पादकों के कार्य निष्पादन के लिए सहायता प्रदान करना
- (c) आवश्यकता पड़ने पर व्यापार अवरोधकों का प्रयोग करना
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

30. विश्व व्यापार संगठन क्या है?

- (a) विश्व व्यापार संगठन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से संबंधित नियमों को निर्धारित करता है तथा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के अवरोधों को खत्म करता है
- (b) विश्व व्यापार संगठन विश्व के व्यापारियों का संगठन है

(c) विश्व व्यापार संगठन आयात-निर्यात के नियमों को बनाता है

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (a) विश्व व्यापार संगठन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से संबंधित नियमों को निर्धारित करता है तथा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के अवरोधों को खत्म करता है

31. निम्नलिखित में से कौन-सा व्यापार अवरोधकों का लक्षण नहीं है?

- (a) सरकार विदेश व्यापार को नियमित करने के लिए व्यापार अवरोधकों का प्रयोग कर सकती है
- (b) सरकार यह निर्णय ले सकती है कि देश में किस प्रकार की वस्तुएँ कितनी मात्रा में आयातित होनी चाहिए
- (c) विश्व व्यापार संगठन व्यापार अवरोधकों को बढ़ावा देता है
- (d) अधिकतर देश व्यापार अवरोधकों का प्रयोग अपने घरेलू उद्योग की सुरक्षा के लिए करते हैं

उत्तर (c) विश्व व्यापार संगठन व्यापार अवरोधकों को बढ़ावा देता है

32. भारत में लघु उद्योगों में कितने लोग कार्यरत है?

- (a) 1.39 करोड़ (b) लगभग 2 करोड़
- (c) 2.32 करोड़ (d) 2.59 करोड़

उत्तर (b) लगभग 2 करोड़

33. निम्नलिखित में से कौन-सी भारतीय कंपनी बहुराष्ट्रीय कंपनी के रूप में उभर चुकी है?

- (a) एशियन पेन्ट्स (b) रैनबैक्सी
- (c) टाटा मोटर्स (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

34. भारत सरकार ने उदारीकरण की प्रक्रिया किस वर्ष प्रारंभ की थी?

- (a) 1991 ई. में (b) 1993 ई. में
- (c) 1995 ई. में (d) 1997 ई. में

उत्तर (a) 1991 ई. में

35. अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनी कारगिल फूड्स ने कौन-सी भारतीय कंपनी को खरीदा है?

- (a) कैम्पा-कोला कंपनी (b) परख फूड्स
- (c) रैनबैक्सी (d) एशियन पेन्ट्स

उत्तर (b) परख फूड्स

36. विदेशी व्यापार से क्या तात्पर्य है?

- (a) दो देशों के बीच आयात और निर्यात का होना
- (b) एक देश में दूसरे देशों द्वारा किए जाने वाले निवेश
- (c) अनेक देशों के किए जाने वाले व्यापारिक समझौते
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) दो देशों के बीच आयात और निर्यात का होना

37. एक कंपनी जो एक से अधिक देशों में उत्पादन पर नियंत्रण अथवा स्वामित्व रखती है, कहलाती है-

- (a) निगमित कंपनियाँ
- (b) अनिगमित कंपनियाँ
- (c) बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (c) बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ

38. घरेलू बाजार में बहुराष्ट्रीय कंपनियों का आगमन किसके लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है?

- (a) बड़े पैमाने के उत्पादक
- (b) घरेलू उत्पादक
- (c) कम गुणवत्ता वाले घरेलू उत्पादक
- (d) छोटे पैमाने के उत्पादक

उत्तर (c) कम गुणवत्ता वाले घरेलू उत्पादक

39. परिसंपत्तियों जैसे-भूमि, भवन, मशीन और अन्य उपकरणों की खरीद में व्यय की गई मुद्रा को क्या कहते हैं?

- (a) निवेश
- (b) परिसंपत्ति
- (c) उत्पादन
- (d) वितरण

उत्तर (a) निवेश

40. बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा किए गए निवेश को क्या कहते हैं?

- (a) व्यय
- (b) विदेशी निवेश
- (c) उत्पादन
- (d) वितरण

उत्तर (b) विदेशी निवेश

41. 2018 तक कितने देश विश्व व्यापार संगठन के सदस्य थे?

- (a) 139
- (b) 164
- (c) 159
- (d) 169

उत्तर (b) 164

42. विभिन्न देशों के बीच संबंध और तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया कहलाती है-

- (a) उदारीकरण
- (b) निजीकरण
- (c) वैश्वीकरण
- (d) अंतर्राष्ट्रीयकरण

उत्तर (c) वैश्वीकरण

43. सरकार द्वारा व्यापार अवरोधकों तथा प्रतिबंधों को हटाने की प्रक्रिया कहलाती है-

- (a) वैश्वीकरण
- (b) निजीकरण
- (c) उदारीकरण
- (d) अंतर्राष्ट्रीयकरण

उत्तर (c) उदारीकरण

44. सरकार द्वारा आयात होने वाली वस्तुओं की संख्या सीमित करना कहलाता है-

- (a) कोटा
- (b) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार
- (c) प्रतिबंध
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) कोटा

45. आयात पर प्रतिबंध के रूप में कुछ कर लगाया जाए तो उसे क्या कहते हैं?

- (a) व्यापार अवरोधक
- (b) कोटा
- (c) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) व्यापार अवरोधक

46. वैश्वीकरण को संभव बनाने वाले कारक कौन-से हैं?

- (a) परिवहन
- (b) प्रौद्योगिकी
- (c) सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. विश्व व्यापार संगठन की स्थापना में हुई।
(1994/1995)

उत्तर : 1995

2. सरकार द्वारा अवरोधों और प्रतिबंधों को हटाने की प्रक्रिया को कहते हैं।
(वैश्वीकरण/उदारीकरण)

उत्तर : उदारीकरण

3. अपने देश से दूसरे देशों को बेचे जाने वाले माल को कहते हैं।
(आयात/निर्यात)

उत्तर : निर्यात

4. आयात पर कर का उदाहरण है।
(व्यापार अवरोधक/वैश्वीकरण)

उत्तर : व्यापार अवरोधक

5. वैश्वीकरण से वर्ग को नुकसान हुआ है।
(धनी उपभोक्ता/छोटे उत्पादक)

उत्तर : छोटे उत्पादक

6. एक से अधिक राष्ट्रों में उत्पादन का स्वामित्व या नियंत्रित करता है।

उत्तर एमएनसी

7. विश्व बैंक का एक अन्य नाम है।

उत्तर बीआरडी

8. विशेष आर्थिक क्षेत्र और सरकारों द्वारा स्थापित किए जा रहे हैं।

उत्तर केंद्र, राज्य

9. 1985 में 60% की तुलना में निर्यात अब 80% से अधिक को वित्त प्रदान करता है, यह स्थिति के कारण है।

उत्तर वैश्वीकरण

10. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार के उदारीकरण की निगरानी करता है।

उत्तर डब्ल्यूटीओ

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

सही या गलत बताइए

1. भारत में उदारीकरण की नीतियों को सन् 1992 में अपनाया गया।

उत्तर : गलत

2. फोर्ड मोटर्स कंपनी अमेरिका की है और इसका 26 देशों में प्रसार है।

उत्तर : सही

3. विदेशी व्यापार, विदेशी निवेश और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी वैश्वीकरण के रूप हैं।

उत्तर : सही

4. दो देशों के बीच बिना किसी प्रतिबंध के होने वाले व्यापार को मुक्त व्यापार कहते हैं।

उत्तर : सही

5. सरकार द्वारा अवरोधों और प्रतिबंधों को हटाने की प्रक्रिया वैश्वीकरण है।

उत्तर : गलत

6. विदेशी व्यापार खुदरा विक्रेताओं के लिए घरेलू बाजारों से आगे पहुँचने का अवसर बनाता है।

उत्तर गलत

7. बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने बाजारों के निकटता के आधार पर उत्पादन इकाइयाँ स्थापित कीं।

उत्तर सही

8. उत्पादकों के बीच वैश्वीकरण और प्रतिस्पर्धा सरकार के लिए फायदेमंद है।

उत्तर गलत

9. MNCs, SEZ में उत्पादन इकाइयाँ स्थापित करते हैं, तो उन्हें पहले पाँच वर्षों के लिए कर का भुगतान नहीं करना पड़ता है।

उत्तर सही

10. MNCs वैश्वीकरण प्रक्रिया में एक प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं।

उत्तर सही

अति लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. नई आर्थिक प्रणाली की मुख्य विशेषता क्या हैं?

उत्तर :

1. उदारीकरण
2. वैश्वीकरण
3. निजीकरण

2. बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपने कार्यालय तथा कारखाने उन क्षेत्रों में क्यों स्थापित करती हैं जहाँ उन्हें श्रम एवं अन्य संसाधन सस्ते मिलते हैं?

उत्तर :

उत्पादन लागत में कमी और अधिक लाभ कमाने के उद्देश्य से बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपने कार्यालय तथा कारखाने उन क्षेत्रों में स्थापित करती हैं जहाँ उन्हें श्रम एवं अन्य संसाधन सस्ते मिलते हैं।

3. बहुराष्ट्रीय कम्पनी किसे कहते हैं?

उत्तर :

ऐसी कम्पनी जो एक से अधिक देशों में उत्पादन तथा बिक्री पर नियंत्रण रखती है।

4. बहुराष्ट्रीय कम्पनी से क्या तात्पर्य है?

उत्तर :

वे उद्यम जिनका उद्योग एक देश में स्थापित नहीं होता, बल्कि अनेक देशों में स्थापित होता है, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ कहलाती हैं, जैसे- पेप्सी, कोका-कोला आदि।

5. उत्पादन लागत को कम करने और अधिक लाभ अर्जित करने के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ क्या करती हैं?

उत्तर :

1. वे बाजार के समीप अपनी उत्पादक इकाइयों की स्थापना करती हैं।

2. वे अपनी उत्पादक इकाइयाँ वहाँ स्थापित करती हैं जहाँ कम लागत पर कुशल तथा अकुशल श्रमिक उपलब्ध होते हैं।
3. जहाँ उत्पादन के अन्य साधन भी उपलब्ध हो।

6. भारत में नई आर्थिक नीति कब लागू की गई?

उत्तर :

1991 में।

7. दो बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के नाम बताओं।

उत्तर :

जानसन एण्ड जानसन, ग्लैक्सो, फाईजर आदि।

8. भारत में निजीकरण को कब अपनाया गया?

उत्तर :

1991 में।

9. आयात कोटा क्या होता है?

उत्तर :

जब आयातों की मात्रा निश्चित कर दी जाए ताकि देश का उद्योग विदेशी प्रतिस्पर्धा से बच सके।

10. वे कौन-से विभिन्न तरीके हैं, जिनके द्वारा देशों को परस्पर संबंधित किया जा सकता है?

उत्तर :

वस्तुओं तथा सेवाओं के अतिरिक्त विभिन्न देशों के पेशेवर लोगों के आवागमन से भी विभिन्न देशों को परस्पर जोड़ा जा सकता है जैसे भारत के सॉफ्टवेयर इंजीनियर अमेरिका में, भारतीय डॉक्टर इंग्लैण्ड में तथा भारत के चार्टर्ड एकाउंटेंट यूरोप में जाने से, भारत के सम्बन्ध इन देशों से बढ़े हैं।

11. वैश्वीकरण के द्वारा लोगों को आपस में जोड़ने का क्या परिणाम होगा?

उत्तर :

उत्पादकों में पहले से अधिक प्रतियोगिता।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

12. निम्न शब्दावली के पूरे रूप लिखें-

1. MNC
2. SEZ
3. I.T.

उत्तर :

1. Multinational Corporation
2. Special Economic Zones
3. Information Technology

13. वैश्वीकरण का लाभ अधिक लोगों को हो, इसके लिए सरकार क्या कदम उठा सकती है?

उत्तर :

1. श्रम नियमों का ठीक से पालन हो।

2. अपने निष्पादन को सुधारने के लिए छोटे उत्पादकों की सहायता करना।
3. यदि आवश्यक हो तो व्यापार तथा निवेश पर अवरोध लगाना।

14. विनिवेश का अर्थ बताइए।

उत्तर :

सार्वजनिक क्षेत्र की पूँजी के एक भाग की निजी क्षेत्र को बिक्री।

15. बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ किस प्रकार विश्व के देशों में निवेश करती हैं?

उत्तर :

स्थानीय कंपनियों के साथ साझेदारी करके।

16. विदेशी व्यापार के उदारीकरण से आप क्या समझते हैं?

उत्तर :

दूसरे देशों से होने वाले व्यापार पर अवरोधों या प्रतिबंधों को हटाना ही विदेशी व्यापार का उदारीकरण कहलाता है।

17. बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ विदेशों में निवेश क्यों करती हैं?

उत्तर :

अपनी परिसंपत्तियों को बढ़ाने के लिए।

18. निवेश और विदेशी निवेश में अंतर कीजिए

उत्तर :

1. **निवेश**- परिसंपत्तियों की खरीद में व्यय की गई मुद्रा को निवेश कहते हैं। उदाहरण के लिए, भूमि भवन, मशीन और अन्य उपकरण।
2. **विदेशी निवेश**- इसका संबंध भारत में उद्योग खोलने या भारतीय कंपनियों के अंशों को खरीदने में विदेशी मुद्रा का निवेश अर्थात् प्रत्यक्ष और परोक्ष या अंशों के निवेश से है।

19. पूँजी की उड़ान का क्या अर्थ है?

उत्तर :

एक देश में विदेशी निवेश द्वारा पूँजी निवेश पूँजी की उड़ान कहलाता है।

20. क्या वैश्वीकरण से भारत को लाभ हुआ है?

उत्तर :

हाँ। भारत के लिए वैश्वीकरण वरदान सिद्ध हुआ है। इससे आयातों, निर्यातों तथा देश की विकास दर में वृद्धि हुई है।

21. विश्व व्यापार संगठन क्या है?

उत्तर :

विश्व व्यापार संगठन एक ऐसा संगठन है जिसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को उदार बनाना है। वर्तमान में विश्व के 149 देश विश्व व्यापार संगठन के सदस्य हैं। विश्व व्यापार संगठन सभी देशों को मुक्त व्यापार की सुविधा उपलब्ध कराता है।

22. उदारीकरण से क्या तात्पर्य है?**उत्तर :**

सरकार द्वारा अवरोधों अथवा प्रतिबंधों को हटाने की प्रक्रिया उदारीकरण के नाम से जानी जाती है। दूसरे शब्दों में सरकार द्वारा लगाए गए प्रत्यक्ष या भौतिक नियंत्रणों से अर्थव्यवस्था की मुक्ति उदारीकरण कहलाती है।

23. न्यायसंगत वैश्वीकरण क्या है?**उत्तर :**

जब वैश्वीकरण से श्रमिकों, छोटे-बड़े उद्योगों तथा विकसित एवं विकासशील देशों को लाभ हो तो ऐसा विदेशी व्यापार, न्यायसंगत वैश्वीकरण होगा।

24. भारत की कुछ कंपनियों के नाम बताएँ, जो बहुराष्ट्रीय कंपनियों के रूप में उभर चुकी हैं।**उत्तर :**

टाटा मोटर्स (मोटर गाड़ियाँ), इंसोसिस (आई.टी.), रैनबैक्सी (दवाइयाँ), एशियन पेंट्स (पेंट), सुंदरम फासर्न्स (नट और बोल्ट) कुछ ऐसी भारतीय कंपनियाँ हैं जो बहुराष्ट्रीय कंपनियों के रूप में उभर चुकी हैं।

25. व्यापार अवरोधक से क्या तात्पर्य है?**उत्तर :**

सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की नीतियों को अपनाकर विदेशों से होने वाले आयात में अवरोध उत्पन्न करना ही व्यापार अवरोधक कहलाता है, जैसे- आयात कर, कोटा का उपयोग आदि।

26. वैश्वीकरण लाने में किस सबसे बड़ी संस्था का योगदान है?**उत्तर :**

बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का।

27. भारत में फोर्ड मोटर कंपनी कब आई?**उत्तर :**

1995 में।

28. सरकारें व्यापार अवरोध का प्रयोग क्यों करती हैं?**उत्तर :**

सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की नीतियाँ अपनाकर विदेशों से होने वाले आयात में अवरोध उत्पन्न करना ही व्यापार अवरोधक कहलाता है।

29. किसको वैश्वीकरण से सब से कम लाभ हुआ है?**उत्तर :**

कृषि क्षेत्रक।

30. स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने विदेश व्यापार एवं विदेशी निवेश पर प्रतिबंध क्यों लगाया था? कोई एक कारण लिखिए।**उत्तर :**

अंतर्राज्यीय (Inter-State) व्यापार को बढ़ावा देने अथवा घरेलू उद्योगों के विस्तार को बढ़ावा देने हेतु।

31. सेज (SEZ) क्या है?**उत्तर :**

विशेष आर्थिक क्षेत्र।

32. फोर्ड मोटर्स ने भारत में कितना निवेश किया?**उत्तर :**

1700 करोड़ रुपये।

33. बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारत में उपभोक्ता सेवा केन्द्र क्यों स्थापित कर रही हैं?**उत्तर :**

ताकि यह सस्ते, शिक्षित, अंग्रेजी बोलने वाले युवक उपलब्ध करवा सकें।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने उत्पाद की उत्पादन लागत कम बनाये रखने में किस प्रकार प्रबंधन करती हैं? उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।**उत्तर :**

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने उत्पाद की उत्पादन लागत कम बनाये रखने में निम्न प्रकार से प्रबंधन करती हैं-

1. बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ दूसरे देशों की स्थानीय कंपनियों के साथ संयुक्त रूप से उत्पादन करती हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के निवेश का सामान्य तरीका है-स्थानीय कंपनियों को खरीदना तथा उनका प्रसार करना एवं उत्पादन बढ़ाना।
2. विकसित देशों में बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ छोटे उत्पादकों को उत्पादन का आदेश देती हैं। वस्त्र, जूते, चप्पल एवं खेल के सामान ऐसे उद्योग हैं जहाँ विश्व भर में बड़ी संख्या में छोटे उत्पादकों द्वारा उत्पादन किया जाता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों को इन उत्पादों की आपूर्ति कर दी जाती है जो अपने ब्रांड नाम से ग्राहकों को बेचती हैं। इस प्रकार बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने उत्पाद पर नियंत्रण स्थापित करती हैं।
3. बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ बहुत बड़े पैमाने पर उत्पादन कार्य करती हैं जिससे प्रति इकाई उत्पादक लागत काफी कम होती है।

2. भारत सरकार विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए किस प्रकार प्रयास कर रही हैं? उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।**उत्तर :**

भारत एक विकासशील देश है। यहाँ व्यवसाय चलाने, उद्योग स्थापित करने तथा इमारतों के निर्माण हेतु बड़ी संभावनाएँ हैं। भारत में इन उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए धन की आवश्यकता होती है जिसका यहाँ अभाव है। इस अभाव की पूर्ति के लिए विदेशों को निवेश के लिए आकर्षित करने की

आवश्यकता है। इसके लिए हमारी सरकार निम्न प्रयास कर रही है—

1. विदेशों को निवेश के लिए ऊँची ब्याज दर का लालच देकर।
2. विदेशियों को यहाँ के उद्योगों में सहभागी बनाकर।
3. विदेशियों को उत्पादन का अधिकांश भाग देने का प्रस्ताव करके।
4. विदेशियों को उच्च पद प्रदान करके।
5. व्यापार अवरोधकों जैसे लाइसेंसिंग प्रणाली आदि का उन्मूलन करके।

सरकार ने विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए विशेष आर्थिक क्षेत्रों (SEZ) की स्थापना की है जिनके शुरुआती अवधि में कर आदि में छूट देकर विदेशी कंपनियों को निवेश के लिए प्रेरित किया जा रहा है। सरकार ने खुदरा व्यापार क्षेत्र में भी विदेशी निवेश को मंजूरी दे दी है जिसका कई राज्य सरकारों द्वारा विरोध भी किया जा रहा है।

3. तकनीकी ने किस प्रकार वैश्वीकरण की प्रक्रिया को प्रेरित किया?

अथवा

वैश्वीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने में प्रौद्योगिकी की भूमिका समझाएँ।

उत्तर :

प्रौद्योगिकी तथा वैश्वीकरण की प्रक्रिया— निम्न प्रकार से तकनीकी या प्रौद्योगिकी ने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को प्रेरित किया—

1. परिवहन तकनीक में कई सुधारों ने दूर-दूर स्थानों पर कम लागत पर वस्तुओं को भेजने में संभव बनाया है।
2. सूचना प्रौद्योगिकी में सुधार ने तो संसार के विभिन्न देशों को आपस में जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अब हम तुरन्त सूचना प्राप्त कर सकते हैं।
3. सूचना तथा संप्रेषण तकनीक ने सेवाओं के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उदाहरण के लिए इंटरनेट टेक्नोलॉजी द्वारा लंदन के पाठकों के लिए समाचार मैगजीन दिल्ली में मुद्रित की जा सकती है।
4. वैश्वीकरण और उत्पादकों के बीच बृहत्तर प्रतिस्पर्धा से उपभोक्ताओं को लाभ हुआ है। उदाहरणों सहित इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर :

वैश्वीकरण और उत्पादकों के बीच बृहत्तर प्रतिस्पर्धा से उपभोक्ताओं को लाभ हुआ है। यह कथन बिल्कुल सत्य है। वैश्वीकरण और उत्पादकों, स्थानीय एवं विदेशी दोनों के बीच बृहत्तर प्रतिस्पर्धा से उपभोक्ताओं, विशेषकर शहरी क्षेत्र में धनी वर्ग के उपभोक्ताओं को लाभ हुआ है। इन उपभोक्ताओं के सामने पहले से ज्यादा अवसर हैं और वे अब अनेक उत्पादों

की उत्कृष्ट गुणवत्ता और कम कीमत से काफी लाभान्वित हो रहे हैं। फलस्वरूप ये लोग पहले की तुलना में आज अपेक्षाकृत उच्च जीवन जी रहे हैं। उनके पास सभी सुविधाएँ हैं।

5. भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण के प्रभावों का उदाहरणों सहित वर्णन कीजिए।

उत्तर :

भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण के प्रभाव—

1. वैश्वीकरण के कारण उद्योगों में नई नौकरियों का सृजन हुआ है।
2. वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप कुछ भारतीय कंपनियाँ स्वयं बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ बन गई हैं। उदाहरण के लिए रैनबैक्सी, टाटा मोटर्स।
3. छोटे उत्पादकों व कुटीर उद्योगों को वैश्वीकरण से बहुत हानि हुई है। बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा के चलते ये छोटे उद्योग समाप्त होते जा रहे हैं।
4. छोटे उद्योगों में लगे श्रमिकों के सामने बेरोजगारी का खतरा मंडराने लगता है। इन उद्योगों के निरंतर बंद होने से अनेक श्रमिक बेरोजगार हैं।
5. बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों एवं इनसे संबंधित उद्योगों के श्रमिकों को न्यायसंगत हिस्सा नहीं दिया गया है जिससे इनके रोजगार पर सदा छँटनी की तलवार लटकती रहती है।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

6. वैश्वीकरण ने भारत को किस प्रकार लाभान्वित किया है? तीन उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

वैश्वीकरण का अर्थ है कि विश्व के सभी राष्ट्रों ने उन नियमों का निर्माण कर नियमित एवं कार्यान्वित किया जिनके अंतर्गत सभी राष्ट्र अपने उत्पादों को बिना किसी आदेश एवं आज्ञा के अन्य राष्ट्रों में निवेशित कर सकें। किसी भी राष्ट्र को अन्य देशों से सामान का आयात एवं अन्य देशों को निर्यात करने की अनुमति की आवश्यकता नहीं है।

1. वैश्वीकरण से राष्ट्र को अपनी पूँजी का निवेश अन्य देशों में करने का प्रावधान है। इसके अंतर्गत भारत में विदेशी निवेश की सीमा 40% से बढ़ा कर 51% कर दी गई है।
2. आर्थिक सुधारों में अपनायी जाने वाली वैश्वीकरण की नीति के अंतर्गत सरकार ने जुलाई 1991 में रुपये का औसतन अवमूल्यन 20% कर दिया।
3. भारतीय अर्थव्यवस्था को अधिक विस्तृत करने हेतु विदेशी निवेश एवं आधुनिक तकनीक के प्रयोग को प्रोत्साहन दिया गया।

7. बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ स्थानीय कम्पनियों के विकास में कैसे मदद करती हैं?

उत्तर :

1. **आधुनिक प्रौद्योगिकी तथा प्रबंधन की उपलब्धता**—स्थानीय कम्पनियों को आधुनिक प्रौद्योगिकी तथा प्रबंधन सेवाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। परिणामस्वरूप स्थानीय उद्यमियों की उत्पादकता बढ़ती है तथा संसाधनों का उपयोग हो जाता है।
2. **धन**—बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अतिरिक्त निवेश के लिए धन प्रदान कर सकती हैं, जैसे—तेजी से उत्पादन करने के लिए मशीनें तथा माल खरीदना।

8. बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ किन्हें कहते हैं? ये विश्वभर में उत्पादन को परस्पर जोड़ने में किस प्रकार सहायक हैं?

उत्तर :

बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ—वे उद्यम जिनका उद्योग एक देश में स्थापित नहीं होता, बल्कि अनेक देशों में स्थापित होता है, बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ कहलाती हैं, जैसे—पेप्सी, कोका—कोला आदि।

बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ विश्वभर में उत्पादन को परस्पर जोड़ने में सहायक—

1. बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ दूसरे देशों के कुछ स्थानीय कम्पनियों के साथ संयुक्त रूप से अर्थात् साझेदारी से उत्पादन प्रारम्भ करती हैं।
 2. वे स्थानीय कम्पनियों को खरीदकर अपने उत्पादन का विस्तार करती हैं।
 3. ये स्थानीय कम्पनियों से निकट प्रतिस्पर्धा करती हैं।
9. 1991 से पूर्व भारत द्वारा विकास की कौन—सी व्यूह रचना अपनाई गई थी?

उत्तर :

1991 से पूर्व विकास की निम्न व्यूह रचना अपनाई गई थी—

1. सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका का विस्तार किया गया।
 2. भारतीय अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र तथा सार्वजनिक क्षेत्र दोनों का अस्तित्व बनाया गया।
 3. विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को अनुमति देने के लिए सख्त कानून बनाए गए थे।
 4. निजी क्षेत्र के उद्योगों को स्थापित करने के लिए सरकार लाइसेंस लेना आवश्यक बना दिया था।
 5. आयातों पर भारी शुल्क लगाए गए तथा आयात का कोटा निर्धारित किया गया।
10. वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव की चर्चा करें।

उत्तर :

वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव निम्नलिखित हैं—

1. विदेशी प्रतियोगिता के कारण खिलौने, टायर, बैटरियाँ, दुग्ध उत्पाद, वनस्पति तेल आदि छोटे—छोटे निर्माताओं को काफी धक्का लगा।
2. विभिन्न इकाइयों के बंद होने पर हजारों अशिक्षित तथा अकुशल श्रमिक बेकार हो गए।

11. बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ किस प्रकार उत्पादन पर नियंत्रण करती हैं? कोई तीन बिन्दु समझाएँ।

उत्तर :

उत्पादन पर नियंत्रण करने की विधियाँ— बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ उत्पादन पर नियंत्रण करने के लिए कई विधियाँ अपनाती हैं। उनमें तीन विधियाँ निम्नलिखित हैं—

1. **संयुक्त उपक्रम विधि**—कई बार अंतर्राष्ट्रीय कम्पनियाँ कुछ स्थानीय कम्पनियों से मिल कर उत्पादन करती हैं। इससे स्थानीय कम्पनियों को भी लाभ होता है। संयुक्त उपक्रम से स्थानीय कम्पनियों को दो लाभ होते हैं—
 - i. अतिरिक्त निवेश के लिए बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ राशि उपलब्ध कराती हैं।
 - ii. बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपने साथ उत्पादन की आधुनिक तकनीक लाती हैं।
2. **स्थानीय कम्पनियों को क्रय करना**—बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का निवेश करने का दूसरा तरीका स्थानीय कम्पनियों को खरीदना है। स्थानीय कम्पनियों का क्रय करके वे उत्पादन को बढ़ाती हैं।
3. **छोटे उत्पादकों से माल खरीदना**—छोटे उत्पादकों से माल खरीद कर वे उत्पादन पर नियंत्रण करते हैं।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

12. प्रौद्योगिकी में तीव्र उन्नति वह मुख्य कारक है जिसने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को उत्प्रेरित किया है। व्याख्या करें।

अथवा

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने विभिन्न देशों में सेवाओं के उत्पादन का प्रसार करने में प्रमुख भूमिका निभाई। उचित उदाहरण देकर कथन की पुष्टि करें।

उत्तर :

1. विगत पचास वर्षों से परिवहन प्रौद्योगिकी में बहुत उन्नति हुई है। इसने लम्बी दूरियों तक वस्तुओं की तीव्रतर आपूर्ति को कम लागत पर संभव किया है।
2. वर्तमान समय में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर और इंटरनेट के क्षेत्र में विकास ने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहन दिया है। इन आधुनिक सुविधाओं के कारण दूरवर्ती क्षेत्रों में संपर्क करने, सूचनाओं को तत्काल प्राप्त करने में आसानी हो गई है। इंटरनेट के प्रयोग द्वारा बहुत कम लागत पर विश्व में संपर्क किया जा सकता है।

वैश्वीकरण में सूचना प्रौद्योगिकी के लाभ—

1. बहुत कम लागत पर विश्व भर में संपर्क करने में मदद।
2. आँकड़ों तथा अन्य जानकारी को कहीं भी भेजना संभव।
3. विभिन्न देशों में पैसे का भुगतान।
4. बाजारों का संबंध होना।
5. ग्राहक सेवा केन्द्रों की स्थापना।

13. बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ, अन्य कम्पनियों से किस प्रकार अलग हैं?

उत्तर :

बहुराष्ट्रीय कंपनी किसी अन्य कंपनी से निम्न प्रकार से भिन्न होती हैं-

बहुराष्ट्रीय कंपनी	अन्य कंपनी
1. यह एक से अधिक देशों में उत्पादन का स्वामित्व या नियंत्रण रखती हैं।	1. यह एक देश के भीतर ही उत्पादन का स्वामित्व या नियंत्रण रखती हैं।
2. यह उन देशों में उत्पादन हेतु कारखानों या कार्यालय स्थापित करती है जहाँ इसे श्रम एवं अन्य संसाधन सस्ते मिलते हैं।	2. इसके पास ऐसा कोई विकल्प नहीं होता है।
3. चूंकि बहुराष्ट्रीय कंपनी के लिए उत्पादन की लागत कम होती है, इसलिए यह अधिक लाभ कमाती हैं।	3. इसके पास अधिक लाभ कमाने के लिए ऐसी कोई संभावना नहीं होती है।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

14. विशेष आर्थिक क्षेत्र क्या हैं? उनकी स्थापना क्यों की गई?

उत्तर :

विशेष आर्थिक क्षेत्र वे उद्योग हैं जिनकी स्थापना विदेशी कंपनियों को भारत में निवेश करने के लिए आकर्षित करने के उद्देश्य से की गई है। इन विशेष आर्थिक क्षेत्रों में उच्च कोटि की विद्युत, पानी, परिवहन, भंडारण, मनोरंजन तथा शैक्षणिक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। इसके अतिरिक्त उन उद्योगों को जो अपनी इकाइयाँ इस क्षेत्र में स्थापित करते हैं, पहले पाँच वर्षों में करों में रियायत दी जाती है।

15. बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने उत्पादनों का दुनिया भर में किस प्रकार नियंत्रण और प्रसार कर रहीं हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ दूसरे देशों में निम्न प्रकार से उत्पादन या उत्पादन पर नियंत्रण स्थापित करती हैं-

1. बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ उत्पादन वहाँ प्रारम्भ करती हैं जहाँ-
 1. संभावित बाजार नजदीक हों।
 2. कम लागतों पर कुशल और अकुशल श्रमिक उपलब्ध हों।
 3. उत्पादन के अन्य कारकों की उपलब्धि सुनिश्चित हो।
 4. सरकारी नीतियाँ बहुराष्ट्रीय कंपनियों के अनुकूल हों।
2. बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ दूसरे देशों के कुछ स्थानीय कंपनियों

के साथ संयुक्त रूप से अर्थात् साझेदारी से उत्पादन प्रारम्भ करती हैं।

3. वे स्थानीय कंपनियों को खरीदकर अपने उत्पादन का विस्तार करती हैं।

16. सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को किस प्रकार उत्प्रेरित किया है? उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

प्राचीन काल में लोग सूचना तथा सामान को स्वयं पैदल चलकर अथवा पशुओं की कमर पर बैठकर एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचते थे। विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के विकास ने इस कार्य में तीव्रता ला दी है तथा संपूर्ण विश्व में जाल फैला कर उसको मानो एक मुट्ठी में कर दिया है।

1. आज एक देश में होने वाली घटना, शोधकार्य एवं खनन, जलवायु मौसम के संबंध में सूचना सरलता से रेडियों, टेलीविजन, फोन आदि के माध्यम से कुछ ही क्षणों में अन्यत्र किसी भी देश में पहुँचायी जा सकती है।
2. यदि किसी राष्ट्र में किसी वस्तु विशेष का उत्पादन हो रहा है तो उसका विज्ञापन संचार माध्यम से किया जा सकता है जिसका परिणाम यह होता है कि इस वस्तु के व्यापार में वृद्धि हो जाती है जिसमें उद्योग अधिक विकसित हो जाते हैं।
3. सूचना एवं संचार के माध्यम से किसी भी देश से वस्तुओं को इंटरनेट, मोबाइल फोन के माध्यम से मंगाया जा सकता है तथा उसका भुगतान भी किया जा सकता है।

17. वैश्वीकरण का प्रभाव एक समान नहीं है। उदाहरण की सहायता से प्रदर्शित कीजिए।

उत्तर :

जहाँ वैश्वीकरण अच्छे उपभोक्ताओं को और उत्पादकों को कौशल, शिक्षा और धन का लाभ देता है, वहीं छोटे उत्पादक और कर्मचारी बढ़ती प्रतियोगिता से पीड़ित होते हैं।

सरकार द्वारा व्यापार बाधाओं को हटाना और उदारीकरण नीतियाँ वैश्वीकरण को पोषित करती हैं जबकि इससे स्थानीय उत्पादकों और निर्माताओं का बहुत नुकसान होता है।

वैश्वीकरण और प्रतियोगिता का दबाव कर्मचारियों का जीवन बदल देता है। बढ़ती प्रतियोगिता के दबाव के कारण नियोजक कर्मचारियों को लचीले तौर पर नियुक्त करते हैं। जिसका अर्थ है कि कर्मचारियों का रोजगार सुरक्षित नहीं रहे।

18. बहुराष्ट्रीय कंपनियों के सहयोग से स्थानीय कंपनियाँ किस प्रकार लाभान्वित होती हैं? उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ मिलकर काम करने से स्थानीय कंपनियों को अनेक प्रकार से लाभ हो सकता है-

1. बहुराष्ट्रीय कंपनियों से उन्हें अतिरिक्त धन प्राप्त हो सकता

है जिससे वे अपनी गतिविधियों को पहले से कहीं अधिक बढ़ा सकती हैं।

2. वे बहुराष्ट्रीय कंपनियों की उन्नत तकनीक और अनुभव का लाभ उठाकर अपना उत्पाद बढ़ा सकती हैं।
3. विदेशों में स्थानीय कंपनियों के माल का निर्यात करने में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ उनकी विशेष सहायता कर सकती हैं।

19. हाल ही के वर्षों में हमारे बाजार किस प्रकार पूरी तरह परिवर्तित हो गये हैं? उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

हाल ही के वर्षों में भारतीय बाजारों में इतने अधिक परिवर्तन हो गये हैं कि वर्तमान में वे पूर्णतः परिवर्तित लगते हैं। पहले समय में उपभोक्ता अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति बड़ी मुश्किल से आवश्यक वस्तु पाकर करते थे। इसका कारण सभी प्रकार की वस्तुओं के उत्पादन का भारत में न होना था। बहुत सी वस्तुओं को विदेशों से आयात करके अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना पड़ता था।

1. आज विज्ञान ने तथा प्रौद्योगिकी की प्रगति ने सभी प्रकार के वस्तुओं के उत्पादन की युक्ति एवं क्षमता भारतीयों को प्राप्त हो गयी है।
2. वैश्वीकरण तथा उदारीकरण की नीति ने भारतीय बाजारों को अपने सामानों से भर दिया है। सभी प्रकार के प्रतिबंध हटने से हम बड़ी मात्रा में वस्तुओं का आयात तथा निर्यात करने लगे हैं। कुछ सामान को विनिमय भी करके पूरा करते हैं। इस प्रकार से आज भारतीय बाजारों की दशा पहले से पूर्णतः परिवर्तित हो चुकी है। इसे कुछ उदाहरणों द्वारा दर्शाया जा सकता है।

उदाहरण-विभिन्न कम्पनियों के मोबाइल फोन, टेलीविजन, विश्व के प्रख्यात निर्माताओं के डिजिटल कैमरे, प्रतिदिन नई कारों का बाजारों में आना, कई प्रकार के फल के रस, स्टेशनरी, कमीजें, सौन्दर्य प्रसाधन, फर्नीचर तथा बैंकिंग, बीमा, शिक्षा आदि की सेवाएँ आज भारत के बाजारों में उपलब्ध हैं।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. सरकार किस प्रकार वैश्वीकरण के लाभ समाज के सभी वर्गों को उपलब्ध करवा सकती है? कोई चार संभव चरण लिखें।

उत्तर :

सरकार निम्नलिखित विधियों से वैश्वीकरण के लाभ समाज के सभी वर्गों को उपलब्ध करवा सकती है-

1. सरकार यह देखे कि श्रम कानूनों को सही ढंग से लागू किया गया है और कर्मचारियों को समुचित अधिकार प्राप्त हैं।
2. सरकार छोटे उत्पादकों को अपने निष्पादन को सुधारने

में तब तक सहायता करे जब तक वे प्रतियोगिता करने में समर्थ नहीं हो जाते।

3. यदि आवश्यक हो तो सरकार निवेश तथा व्यापार पर अवरोध लगा सकती है।
4. अपने हितों की पूर्ति के लिए सरकार विश्व व्यापार से समझौते कर सकती है।

2. कोई ऐसी चार विधियाँ बताएँ जिनके अंतर्गत बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने उत्पादन तथा विश्व के विभिन्न देशों से अंतर्संबंध बढ़ाए हैं।

उत्तर :

निम्नलिखित विधियों से बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने उत्पादन तथा विश्व के विभिन्न देशों से अंतर्संबंध बढ़ाए हैं-

1. उत्पादन के लिए फैक्टरियों/कार्यालयों की प्रत्यक्ष स्थापना।
2. इन देशों की स्थानीय कंपनियों में संयुक्त रूप से उत्पादन करना।
3. स्थानीय कंपनियों को खरीदना और उनका विस्तार करना।
4. दूसरे देशों के छोटे उत्पादकों को उत्पादन के आर्डर (Order) देना।
3. विदेशी व्यापार विभिन्न देशों को आपस में जोड़ने में किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है? व्याख्या करें।

अथवा

किन्हीं तीन तरीकों का वर्णन करें जिनमें बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने अपने उत्पादन और अन्य देशों के स्थानीय उत्पादकों से सम्बन्ध बढ़ाए।

अथवा

उदाहरण देकर समझाएँ कि विदेशी व्यापार के खुलने के परिणामस्वरूप विभिन्न देशों के बाजारों का एकीकरण किस प्रकार हुआ?

अथवा

विदेशी व्यापार विश्व में विभिन्न देशों के बाजारों को जोड़ने का काम किस प्रकार करता है?

उत्तर :

1. यदि सरल शब्दों में कहा जाए तो विदेशी व्यापार घरेलू बाजारों अर्थात् अपने देश के बाजारों से बाहर के बाजारों में पहुँचने के लिए एक अवसर प्रदान करता है। उत्पादक केवल अपने देश के बाजारों में ही अपने उत्पाद नहीं बेच सकते हैं बल्कि विश्व के अन्य देशों के बाजारों में भी प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं।
2. इसी प्रकार दूसरे देशों में उत्पादित वस्तुओं के आयात से खरीदारों के समक्ष उन वस्तुओं के घरेलू उत्पादन के अन्य विकल्पों का विस्तार होता है।

3. सामान्यतः व्यापार के खुलने से वस्तुओं का एक बाजार से दूसरे बाजार में आवागमन होता है। बाजार में वस्तुओं के विकल्प बढ़ जाते हैं। दो बाजारों में एक ही वस्तु का मूल्य एक समान होने लगता है।
4. अब दो देशों के उत्पादन एक दूसरे से हजारों मील दूर होकर भी एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

4. वैश्वीकरण किसे कहते हैं? वैश्वीकरण की प्रक्रिया को प्रोन्नत करने में बहुराष्ट्रीय कंपनियों की भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

वैश्वीकरण का अर्थ-

1. देश के भीतर और बाहर वस्तुओं के स्वतंत्र आवागमन में बाधक व्यापार अवरोधों का हटाया जाना।
2. प्रौद्योगिकी का स्वतंत्र प्रवाह सुनिश्चित करना।
3. प्रेरणादायक वातावरण और प्रस्तावों की सहज स्वीकृति सुनिश्चित करते हुए दोनों तरह के विदेशी निवेश (सीधा और अंशों की खरीद वाला) का समर्थन करना।
4. श्रम तथा मानव-कौशल का मुक्त प्रवाह सुनिश्चित करना।

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ वैश्वीकरण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। अधिक विदेश व्यापार और अधिक विदेशी निवेश के परिणामस्वरूप विभिन्न देशों के बाजारों एवं उत्पादनों में एकीकरण हो रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों का उद्यम एक देश में न होकर अनेक देशों में होता है।

5. सतत आर्थिक विकास का क्या अभिप्राय है? इसे आर्थिक वृद्धि के लिए क्यों आवश्यक समझा जाता है?

उत्तर :

1. **सतत आर्थिक विकास का अर्थ-** इसका अर्थ है- पर्यावरण को किसी तरह की क्षति पहुँचाए बिना आर्थिक विकास की प्रक्रिया को निरंतर जारी रखना। वर्तमान काल के विकास की कीमत पर भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं के साथ किसी प्रकार का ऐसा समझौता नहीं करना चाहिए कि उनके हितों को नुकसान पहुँचे।
2. **आर्थिक वृद्धि के लिए सतत आर्थिक विकास का महत्व-**
 1. तेजी से होने वाले आर्थिक विकास और औद्योगिकरण ने प्राकृतिक संसाधनों (जैसे वन, वन्य जीव-जंतु, जल, खनिज संपत्ति इत्यादि) को अपूरणीय क्षति पहुँचाई है। यदि सीमित संसाधन पूर्णतया खत्म हो गए तो भविष्य में होने वाला देश का आर्थिक विकास खतरे में पड़ जाएगा।
 2. आज की दुनिया अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण पहले की तुलना में अधिक नजदीक आ गई है। विश्व के एक हिस्से में होने वाली घटना विश्व के अन्य भागों पर अपना तुरंत असर डालती है इसलिए विश्व स्तर

पर आर्थिक विकास की रणनीति को अपनाना सभी देशों के हित में है अर्थात् हर देश को पर्यावरण के प्रति मित्रवत् दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

3. जीवाश्म ईंधन और पेट्रोलियम जैसे विश्व को ऊर्जा प्रदान करने वाले संसाधनों के भंडार बहुत ही सीमित हैं। दुनिया में पेट्रोल का सर्वाधिक उपभोग करने वाले राष्ट्र विकसित देश ही हैं। इन देशों की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है कि वे इसका प्रयोग करते हुए पर्यावरण को प्रदूषण से बचायें क्योंकि प्रदूषित पर्यावरण सारी मानव जाति और बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों के लिए बहुत बड़ा खतरा पैदा कर सकते हैं।
4. आज अनेक महत्वपूर्ण समझौतों पर अनेक देश मिलकर अपनी सहमति देते हैं और समझौतों पर हस्ताक्षर करते हैं। वे सभी वायदा करते हैं कि पर्यावरण का संरक्षण करने में वह योगदान देंगे और जलवायु में ऐसा परिवर्तन नहीं आने देंगे कि वह विश्व स्तर पर मानव अस्तित्व और भावी विकास के लिए नकारात्मक चेतावनी देने वाला हो जाए। वस्तुतः इन सभी समझौतों का एक ही उद्देश्य है कि वर्तमान काल में सभी देशों का यथासंभव उचित आर्थिक विकास और वृद्धि हो लेकिन भावी पीढ़ी के हित भी सुरक्षित रहें।

6. प्रौद्योगिकी में हुई उन्नति ने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को किस प्रकार उत्प्रेरित किया है? पाँच उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. परिवहन तकनीक में कई सुधारों ने दूर-दूर स्थानों पर कम लागत पर वस्तुओं को भेजने में संभव बनाया है। प्रौद्योगिकी में हुई उन्नति ने तृतीयक क्षेत्र को सरल तथा सस्ता बनाकर वैश्वीकरण प्रक्रिया को उत्प्रेरित किया है।
2. सूचना प्रौद्योगिकी में हुए सुधार ने विश्व के सभी देशों में परस्पर जोड़ने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। किसी देश की किसी भी जानकारी को हम कम खर्च में तथा कम समय में प्राप्त कर सकते हैं।
3. सूचना तथा संप्रेक्षण तकनीक ने सेवाओं के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उदाहरणार्थ इंटरनेट तकनीकी द्वारा लंदन के पाठकों के लिए समाचार पत्रिकाएँ, मैगजीन आदि दिल्ली में मुद्रित होती हैं।
4. धन राशि को एक देश से विश्व के किसी भी देश में कम्प्यूटर की सहायता से बहुत कम व्यय में तथा कम समय में भेजा जा सकता है।
5. एक देश में निर्मित सामान को कम समय तथा कम व्यय में किसी भी अन्य देश में भेजा जा सकता है।
6. यही नहीं अपने ज्ञान में पारंगत श्रमिकों को भी बहुत कम समय में एक देश से दूसरे देशों में भेजा जा सकता है।
7. वैश्वीकरण की प्रक्रिया में बहुराष्ट्रीय कंपनियों की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

वैश्वीकरण का अर्थ है—

1. एक देश में निर्मित वस्तुओं को विश्व के अन्य सभी राष्ट्रों में निःसंकोच बेचना।
2. देश के अन्दर तथा बाहर वस्तुओं को बेचने पर लगे प्रतिबंधों को हटाकर उन्हें बेचना।
3. प्रौद्योगिकी का स्वतंत्र प्रवाह सुनिश्चित करना।
4. श्रम तथा मानव कौशल का मुक्त प्रवाह सुनिश्चित करना।
5. प्रेरणादायक वातावरण तथा प्रस्तावों की सहज स्वीकृति सुनिश्चित करना तथा देश-विदेश के निवेशों का समर्थन करना।

उपरोक्त वर्णित सभी कार्य वैश्वीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत आते हैं।

अमेरिका तथा कुछ अन्य विकसित देश कुछ कंपनियों को धन अर्जित करा कर विभिन्न देशों में व्यापार के लिए प्रेरित करती है तथा उन्हें स्थापित करती है। इन्हें ही बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ कहते हैं। इनकी शाखायें अनेकों राष्ट्रों में होती हैं जो आपस में संबंधित होती हैं।

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ जिस राष्ट्र में स्थापित हैं वहीं के नागरिकों को नौकरी कम वेतन पर दे देती है जिससे उन्हें सस्ते मूल्य पर श्रम उपलब्ध हो जाता है।

ये कंपनियाँ उसी देश के उत्पादन तथा निर्मित वस्तुओं को सस्ते मूल्य में खरीद कर अधिक मूल्य पर अन्य देशों में बेचती हैं। इससे अधिक लाभ अर्जित करती है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा एक राष्ट्र में निर्मित वस्तुएँ सभी राष्ट्रों में उपलब्ध हो जाती हैं जिससे संपूर्ण राष्ट्रों में समानता की भावना जागृत हो जाती है।

8. वैश्वीकरण उपभोक्ताओं के साथ-साथ उत्पादकों के लिए लाभकारी रहा है। इस कथन की पुष्टि उपयुक्त उदाहरणों द्वारा कीजिए।

उत्तर :

व्यापार वित्तीय प्रवाह, तकनीक एवं सूचना के जाल के माध्यम से विश्व की अर्थव्यवस्था का समन्वय एवं एकीकरण ही वैश्वीकरण कहलाता है। वैश्वीकरण उपभोक्ताओं तथा उत्पादकों दोनों के लिए लाभकारी निम्नलिखित प्रकार से सिद्ध हुआ है—

उपभोक्ताओं को लाभ—

1. वैश्वीकरण के कारण लोगों को अपनी आवश्यकता एवं इच्छा के अनुकूल वस्तुएँ प्राप्त हो रही हैं।
2. उपभोक्ता वस्तुओं में मूल्यों में भी तुलना करके कम मूल्य की श्रेष्ठ वस्तु का क्रय कर सकता है। इससे वह कम धन खर्च करके अधिक संतुष्टि प्राप्त कर सकता है।
3. उपभोक्ता को विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ निकट के बाजार में ही उपलब्ध हो जाती हैं। अतः उसे वस्तुओं की प्राप्ति

के लिए दूर भी नहीं जाना पड़ता। इससे धन, समय एवं शारीरिक शक्ति की बचत होती है।

4. संचार माध्यमों द्वारा विज्ञापनों के विषय में उपभोक्ता को अधिकतम जानकारी घर बैठे ही प्राप्त हो जाती है जो उसके लिए उपयोगी वस्तुओं के क्रय में सरलता एवं उपयुक्त मूल्य का ज्ञान कराता है।

उत्पादकों को लाभ—

1. किसी भी देश में विशिष्ट वस्तु का उत्पादन होता है। यदि वैश्वीकरण के माध्यम से अन्य देशों से वस्तु की माँग में वृद्धि होती है तो उत्पादकों को वस्तुओं का अधिक एवं निरन्तर उत्पादन करना पड़ेगा जिससे उन्हें अधिक लाभ प्राप्त होगा।
2. उत्पादक अधिक मात्रा में प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कच्चे माल के रूप में कर सकेंगे।
3. उत्पादकों को विश्व के अन्य देशों में प्रचलित तकनीक का ज्ञान भी इसी माध्यम से हो सकेगा।
4. देशों में इस माध्यम से बेरोजगारी की समस्या का निदान भी हो सकेगा।

उदाहरण—चीन दिन-प्रतिदिन अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में छा रहा है। वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र की वस्तुओं का निर्माण करके अन्य देशों में कम मूल्य पर निर्यात कर रहा है। इससे अन्य देश के उद्योगों को नई तकनीक का ज्ञान होता है तथा प्रतियोगिता में खड़े होकर उत्पादन में नवीनता एवं वृद्धि कर सकते हैं।

5. वैश्वीकरण से उत्पादन में वृद्धि हुई है तथा आयात-निर्यात भी बढ़ा है।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

NCERT पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

1. वैश्वीकरण से आप क्या समझते हैं? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

वैश्वीकरण का अर्थ एक ऐसी व्यवस्था से है जिसमें किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को विश्व की अन्य अर्थव्यवस्थाओं से विदेशी व्यापार एवं विदेशी निवेश द्वारा जोड़ा जाता है। वैश्वीकरण के कारण आज विश्व में विभिन्न देशों के बीच वस्तुओं, सेवाओं, तकनीकी तथा श्रम का आदान-प्रदान हो रहा है। इस कार्य में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं जब वे अपनी इकाइयाँ संसार के विभिन्न देशों में स्थापित करती हैं।

2. भारत सरकार द्वारा विदेश व्यापार एवं विदेशी निवेश पर अवरोधक लगाने के क्या कारण थे? इन अवरोधकों को सरकार क्यों हटाना चाहती थी?

उत्तर :

भारत सरकार ने स्वतंत्रता के बाद विदेश व्यापार एवं विदेशी निवेश पर प्रतिबन्ध लगा रखा था। देश के उत्पादकों की विदेशी प्रतिस्पर्धा से सुरक्षा के लिए इसे आवश्यक माना गया। 1950

एवं 1960 के दशक में उद्योगों की स्थापना हुई और इस अवस्था में इन नवोदित उद्योगों को आयात में प्रतिस्पर्धा करने की अनुमति नहीं दी गई। इसलिए भारत ने केवल अनिवार्य चीजों, जैसे-मशीनरी, उर्वरक और पेट्रोलियम के आयात की ही अनुमति दी।

सन् 1991 में आर्थिक नीति में परिवर्तन किया गया। सरकार ने निश्चय किया कि भारतीय उत्पादकों को विश्व के उत्पादकों के साथ प्रतिस्पर्धा करनी होगी जिससे देश के उत्पादकों के प्रदर्शन में सुधार होगा और वे अपनी गुणवत्ता में सुधार करेंगे। इसलिए विदेशी व्यापार एवं निवेश पर से अवरोधकों को काफी हद तक हटा दिया गया। इसका अर्थ है कि वस्तुओं का सुगमता से आयात किया जा सकेगा और विदेशी कंपनियाँ यहाँ अपने कार्यालय और कारखाने स्थापित कर सकेंगी। सरकार द्वारा अवरोधकों एवं प्रतिबंधों को हटाने की प्रक्रिया को ही उदारीकरण कहते हैं।

3. श्रम कानूनों में लचीलापन कंपनियों को कैसे मदद करेगा?

उत्तर :

श्रम कानूनों में लचीलेपन का अर्थ है श्रमिकों की नियुक्ति और वेतन से संबंधित बातों का नियोक्ताओं की मर्जी के अनुसार होना। विदेशी निवेश को आकर्षित करने हेतु सरकार ने श्रम कानूनों में लचीलेपन की इजाजत दी है। हाल के वर्षों में सरकार ने कंपनियों को अनेक नियमों से छूट लेने की इजाजत दे दी है। अब कंपनियाँ नियमित आधार पर श्रमिकों को रोजगार देने की अपेक्षा, जब काम का अधिक दबाव होता है, तो लोचदार ढंग से छोटी अवधि के लिए उन्हें काम पर रखती हैं। कंपनी की श्रम लागत में कटौती करने के लिए ऐसा किया जाता है। फिर भी, विदेशी कंपनियाँ अभी भी संतुष्ट नहीं हैं और श्रम कानूनों में और अधिक लचीलेपन की बात कर रही हैं।

4. दूसरे देशों में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ किस प्रकार उत्पादन या उत्पादन पर नियंत्रण स्थापित करती हैं?

उत्तर :

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ वे कंपनियाँ हैं जो एक से अधिक देशों में उत्पादन पर नियंत्रण अथवा स्वामित्व रखती हैं। ये कंपनियाँ उन देशों में अपने कारखाने स्थापित करती हैं जहाँ उन्हें सस्ता श्रम एवं अन्य साधन मिल सकते हैं। जहाँ सरकारी नीतियाँ भी उनके अनुकूल हों। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ इन देशों की स्थानीय कंपनियों के साथ संयुक्त रूप से उत्पादन करती हैं, लेकिन अधिकांशतः बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ स्थानीय कंपनियों को खरीदकर उत्पादन का प्रसार करती हैं। जैसे एक अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनी कारगिल फूड्स ने अत्यंत छोटी भारतीय कंपनी परख फूड्स को खरीद लिया है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ एक अन्य तरीके से उत्पादन नियंत्रित करती हैं। विकसित देशों में बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ छोटे उत्पादकों को उत्पादन का आदेश देती हैं। वस्त्र, जूते-

चप्पल एवं खेल के सामान ऐसे उद्योग हैं, जिनका विश्वभर में बड़ी संख्या में छोटे उत्पादकों द्वारा उत्पादन किया जाता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों को इनकी आपूर्ति कर दी जाती है, जो अपने ब्रांड नाम से इसे ग्राहकों को बेचती हैं।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

5. विकसित देश, विकासशील देशों से उनके व्यापार और निवेश का उदारीकरण क्यों चाहते हैं? क्या आप मानते हैं कि विकासशील देशों को भी बदले में ऐसी माँग करनी चाहिए?

उत्तर :

विकसित देश निम्नलिखित दो कारणों से विकासशील देशों से उनके व्यापार और निवेश का उदारीकरण चाहते हैं-

1. विकसित देश ऊँची दर का लाभ अर्जित करना चाहते हैं। इसलिए वे विकासशील देशों में अवरोधक रहित निवेश करना चाहते हैं।
2. विकसित देशों के अनुसार व्यापार अवरोधक हानिकारक होते हैं क्योंकि ये व्यापार और निवेश विरोधी होते हैं।

विकसित देश विकासशील देशों से तो व्यापार और निवेश के मार्ग में आने वाले अवरोधकों को दूर करने की बात करते हैं, लेकिन इन देशों ने अपने यहाँ व्यापार अवरोधकों को बरकरार रखा हुआ है जोकि सर्वथा अनुचित है। विकासशील देश समान हितों वाले अन्य विकासशील देशों के साथ मिलकर विकसित देशों के व्यापार के इन अवरोधकों का विरोध कर सकते हैं और इन्हें हटाने की माँग भी कर सकते हैं।

6. वैश्वीकरण का प्रभाव एक समान नहीं है। इस कथन की अपने शब्दों में व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

विश्व के विभिन्न देशों के मध्य आपसी सम्बन्ध और तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया को वैश्वीकरण कहते हैं। वैश्वीकरण का विश्व के सभी देशों पर व्यापक प्रभाव पड़ा, लेकिन यह प्रभाव एकसमान नहीं है। स्थानीय एवं विदेशी उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धाओं में संपन्न वर्ग के उपभोक्ताओं को लाभ हुआ है। इन उपभोक्ताओं के समक्ष पहले से अधिक विकल्प मौजूद हैं और वे अनेक उत्पादों की उत्कृष्टता, गुणवत्ता और कम कीमत से लाभान्वित हो रहे हैं। परिणामस्वरूप ये लोग पहले की अपेक्षा एक उच्चतर जीवनस्तर बिता रहे हैं।

वैश्वीकरण से बड़ी संख्या में छोटे उत्पादकों और कर्मचारियों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। बैटरी, प्लास्टिक, खिलौने, टायर, डेयरी उत्पाद एवं खाद्य तेल के उद्योग कुछ ऐसे उदाहरण हैं, जहाँ प्रतिस्पर्धा के कारण छोटे निर्माता टिक नहीं सके। कई इकाइयाँ बंद हो गईं जिसके चलते अनेक श्रमिक बेरोजगार हो गए। वैश्वीकरण और प्रतिस्पर्धा के दबाव ने श्रमिकों के जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित किया। बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण श्रमिकों को रोजगार लंबे समय के

लिए सुनिश्चित नहीं रहा। वैश्वीकरण के कारण मिले लाभ में श्रमिकों को न्यायसंगत हिस्सा नहीं मिला। ये सभी प्रमाण संकेत करते हैं कि वैश्वीकरण सभी के लिए लाभप्रद नहीं रहा है। शिक्षित, कुशल और संपन्न लोगों ने वैश्वीकरण से मिले नए अवसरों का सर्वोत्तम उपयोग किया है। दूसरी ओर अनेक लोगों को लाभ में हिस्सा नहीं मिला है।

7. व्यापार और निवेश नीतियों का उदारीकरण वैश्वीकरण प्रक्रिया में कैसे सहायता पहुँचाती है?

उत्तर :

व्यापार एवं निवेश नीतियों का उदारीकरण वैश्वीकरण प्रक्रिया में निम्नलिखित प्रकार से सहायता पहुँचाती है—

1. उदारीकरण उद्योगों को बाजार के अनुसार विस्तृत होने की छूट देता है। इससे वैश्वीकरण को सहायता प्राप्त होती है।
2. निवेश का उदारीकरण नए व्यवसायों की स्थापना करने में सहायता प्रदान करता है, जो कि वैश्वीकरण का ही एक भाग है।
3. व्यापार के उदारीकरण का अर्थ अनावश्यक व्यापारिक प्रतिबंधों को हटाने से है जिसके कारण देशों के बीच आयात-निर्यात सरल हो गया है। इसी से वैश्वीकरण का जन्म हुआ।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

8. विदेश व्यापार विभिन्न देशों के बाजारों के एकीकरण में किस प्रकार मदद करता है? यहाँ दिए गए उदाहरण से भिन्न उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

सूचना प्रौद्योगिकी और दूर-संचार ने आज विश्व के सभी देशों में बनने वाली चीजों या उत्पादों की जानकारी सार्वभौमिक या आम बना दी है। आज कश्मीर के दूरस्थ क्षेत्र में निवास करने वाला व्यक्ति भी जानता है कि पाश्चात्य देशों में कौन-कौन सी चीजों का उत्पादन होता है। नाना प्रकार के विज्ञापन और विदेशी वस्तुओं के बाजार आज प्रत्येक देश के अहम अंग बन गए हैं। उदाहरण के लिए भारत के सूती वस्त्र, ऊनी वस्त्र, कम्प्यूटर उपकरण, लोहा और इस्पात आदि का निर्यात विश्व के लगभग सभी देशों को होने लगा है और कच्चा तेल (पेट्रोलियम), प्राकृतिक तेल तथा औषधियों का विश्व के कोने-कोने से भारत में आयात किया जा रहा है। बाजार की माँग और पूर्ति शक्तियाँ मूल्य निर्धारण कर रही हैं, मानव-श्रम आदि सभी कुछ केवल वस्तु बनकर रह गया है। युगों-युगों से सत्कार का प्रथम प्रतीक समझे जाने वाले जल को भी आज बाजारों में बोतलों में भरकर बेचा जा रहा है। हिमालय की चोटी का गंगा जल आज सुदूर अमेरिका के बाजारों में बिकता हुआ देखा जा सकता है। सजीव और निर्जीव सभी चीजें वाणिज्य (बिकने वाली वस्तु) बन गई हैं। अतः बाजारों का एकीकरण होना एक सामान्य घटना है।

9. वैश्वीकरण भविष्य में जारी रहेगा। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि आज से बीस वर्ष बाद विश्व कैसा होगा? अपने उत्तर का कारण दीजिए।

उत्तर :

यदि अर्थव्यवस्था तक सीमित यह वैश्वीकरण भविष्य में भी इन्हीं लक्षणों के साथ चलता रहा और मानव के अंतःकरण का वैश्वीकरण (विश्वबंधुत्व की भावना आदि) न हो पाया तो मैं अनुमान लगा सकता हूँ कि बीस वर्ष बाद विश्व में केवल वही लोग जीवित रह पाएँगे जो दूसरों की हत्या, दमन और शोषण करने में सफल रहेंगे। यह डार्विन का सिद्धान्त है जो अमेरिका के वर्चस्व और पुँजीवाद के निरंतर बने रहने की दशा में पूरी तरह चरितार्थ हो जाएगा। विकसित देश सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी की तरह ही अपने नए किस्म के उपनिवेश स्थापित करेंगे जैसा कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों की वर्तमान धूर्त नीतियों और विकासशील देशों की सरकारों पर उनके दबाव और प्रभाव से स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है। अपने इस अनुमान का मैं निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर समर्थन करना चाहूँगा

1. प्रत्येक सरकार उदारीकरण और नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक तथा बाजार नीतियों को अपनाने की कोशिश कर रही है।
 2. बीस वर्ष के भीतर विश्व की महाशक्तियों, तृतीय विश्व के देशों द्वारा भी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ स्थापित कर ली जाएँगी।
 3. सभी विकासशील देश विदेशी पूँजी निवेश को विशेष स्थान देने लगेंगे।
 4. तृतीय विश्व के देशों की बौद्धिक संपदा (विशेषज्ञ, विद्वान, तकनीकीविद्) और श्रमिक पाश्चात्य देशों की ओर पलायन कर जाएँगे।
 5. सभी देशों के बीच सांस्कृतिक विनिमय होगा तथा लोगों की माँग नई खाद्य वस्तुओं, वस्त्रों, उत्कृष्ट परिवहन तथा संचार साधनों और सूचना प्रौद्योगिकी, मनोविनोद एवं संगीत आदि को पाने की दिशा में बढ़ेगी।
 6. इन सभी भौतिक या पदार्थपरक विकास के फलस्वरूप गूढ़ अपराध, जासूसी तथा विधिविरुद्ध कार्य चरम सीमा तक बढ़ेंगे लेकिन इनके समान्तर आगे आने वाले प्रतिरक्षण उपाय मनोरोग, उन्माद और मनोदैहिक रोगों के रूप स्वतः ही विकसित होने लगेंगे। उल्लेखनीय है कि प्रत्येक अपराध के साथ ही अपराधी के सूक्ष्म मन में अपराध-अनुभूति की ग्रंथि बनने लगती है और कालांतर में मनोदैहिक रोग उत्पन्न कर उसका स्वतः विनाश कर देती है।
10. मान लीजिए कि आप दो लोगों को तर्क करते हुए पाते हैं— एक कह रहा है कि वैश्वीकरण ने हमारे देश के विकास को क्षति पहुँचाई है, दूसरा कह रहा है कि वैश्वीकरण ने भारत के विकास में सहायता की है। इन लोगों को आप कैसे जवाब दोगे?

उत्तर :

वैश्वीकरण का भारतीय अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ा है। यह प्रभाव सकारात्मक भी रहा तथा नकारात्मक भी। इसलिए कुछ लोग मानते हैं कि वैश्वीकरण ने भारत के विकास में मदद पहुँचाई है तथा कुछ लोग मानते हैं कि वैश्वीकरण ने भारत के विकास को क्षति पहुँचाई। मेरा विचार है कि वैश्वीकरण से भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास हुआ है। लोगों को नई व उन्नत तकनीक की वस्तुएँ तथा बेहतर रोजगार के अवसर प्राप्त हुए हैं। लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है किंतु ये विकास असमान रहा अर्थात् इसने बड़े-बड़े उद्योगपतियों, शिक्षित व धनी उत्पादकों व धनी उपभोक्ताओं को तो लाभ पहुँचाया किंतु छोटे उद्योगपतियों, सुशीला जैसे श्रमिकों तथा विकासशील देशों को नुकसान पहुँचाया। वैश्वीकरण के कारण बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने भारत में कई लघु व कुटीर उद्योगों को लगभग नष्ट कर दिया है। श्रम कानूनों में, वैश्वीकरण के कारण बहुत लचीलापन आ गया जिससे लोगों का रोजगार अनिश्चित हो गया है।

अब जबकि वैश्वीकरण अनिवार्य विकल्प है तो सरकार द्वारा वैश्वीकरण को अधिक न्यायसंगत और सर्वव्यापी बनाने की आवश्यकता है ताकि इसका लाभ कुछ लोगों तक ही सीमित न रहे। सरकार को छोटे उद्योगपतियों को सस्ते दामों पर ऋण देकर, बेहतर बिजली की सुविधाएँ देकर विदेशी प्रतिस्पर्धा के योग्य बनाना चाहिए। विकासशील देशों को विकसित देशों पर अपने व्यापार और निवेश का उदारीकरण करने का दबाव डालना चाहिए।

11. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

दो दशक पहले की तुलना में भारतीय खरीददारों के पास वस्तुओं के अधिक विकल्प हैं। यह की प्रक्रिया से नजदीक से जुड़ा हुआ है। अनेक दूसरे देशों में उत्पादित वस्तुओं को भारत के बाजारों में बेचा जा रहा है। इसका अर्थ है कि अन्य देशों के साथ बढ़ रहा है। इससे भी आगे भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा उत्पादित ब्रांडों की बढ़ती संख्या हम बाजारों में देखते हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारत में निवेश कर रही हैं क्योंकि। जबकि बाजार में उपभोक्ताओं के लिए अधिक विकल्प इसलिए बढ़ते और के प्रभाव का अर्थ है उत्पादकों के बीच अधिकतम।

उत्तर :

वैश्वीकरण, व्यापार, यह उनके लिए लाभप्रद है, निवेश, नियंत्रण, प्रतिस्पर्धा।

12. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए-

(क)	बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ छोटे उत्पादकों से सस्ते दरों पर खरीदती हैं।	(अ)	मोटर गाड़ियों।
-----	-------------------------------------------------------------------	-----	----------------

(ख)	आयात पर कर और कोटा का उपयोग, व्यापार नियमन के लिए किया जाता है।	(ब)	कपड़ा, जूते-चप्पल, खेल के सामान के लिए किया जाता है।
(ग)	विदेशों में निवेश करने वाली भारतीय कंपनियाँ।	(स)	कॉल सेंटर।
(घ)	आई. टी. ने सेवाओं के उत्पादन के प्रसार में सहायता की है।	(द)	टाटा मोटर्स, इंफोसिस रैनबैक्सी।
(ङ)	अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने उत्पादन करने के लिए निवेश किया है।	(य)	व्यापार अवरोधक।

उत्तर (क)-(ब), (ख)-(य), (ग)-(द), (घ)-(स), (ङ)-(अ)।

13. सही विकल्प का चयन कीजिए-

1. वैश्वीकरण के विगत दो दशकों में द्रुत आवागमन देखा गया है-

- (a) देशों के बीच वस्तुओं, सेवाओं और लोगों का
- (b) देशों के बीच वस्तुओं, सेवाओं और निवेशों का
- (c) देशों के बीच वस्तुओं, निवेशों और लोगों का

उत्तर (b) देशों के बीच वस्तुओं, सेवाओं और निवेशों का

2. विश्व के देशों में बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा निवेश का सबसे अधिक सामान्य मार्ग है-

- (a) नए कारखानों की स्थापना
- (b) स्थानीय कंपनियों को खरीद लेना
- (c) स्थानीय कंपनियों से साझेदारी करना

उत्तर (b) स्थानीय कंपनियों को खरीद लेना

3. वैश्वीकरण ने जीवन-स्तर के सुधार में सहायता पहुँचाई है-

- (a) सभी लोगों के
- (b) विकसित देशों के लोगों के
- (c) विकासशील देशों के श्रमिकों के
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उपभोक्ता अधिकार

नोट: अध्याय 5 उपभोक्ता अधिकार परियोजना कार्य के रूप में किया जाएगा।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. बाजार में हमारी भागीदारी किस रूप में होती है?

- (a) उत्पादक के रूप में
- (b) उपभोक्ता के रूप में
- (c) निगरानी रखने वाली एजेंसी के रूप में
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

2. बाजार में शोषण का रूप है—

- (a) अधिक कीमत वसूलना
- (b) कम तोलना
- (c) मिलावटी माल बेचना
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

3. उपभोक्ता आंदोलन का आरंभ हुआ—

- (a) उत्पादकों के असंतोष के कारण
- (b) उपभोक्ताओं के असंतोष के कारण
- (c) सरकार के असंतोष के कारण
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (b) उपभोक्ताओं के असंतोष के कारण

4. किस दशक में भारत में उपभोक्ता आंदोलन का उदय हुआ?

- (a) 1940 का दशक
- (b) 1950 का दशक
- (c) 1960 का दशक
- (d) 1970 का दशक

उत्तर (c) 1960 का दशक

5. संयुक्त राष्ट्र ने उपभोक्ता सुरक्षा के दिशा-निर्देशों को कब अपनाया?

- (a) 1985 में
- (b) 1986 में
- (c) 1987 में
- (d) 1988 में

उत्तर (a) 1985 में

6. भारत ने उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम कब बनाया?

- (a) 1985 में
- (b) 1986 में
- (c) 1987 में
- (d) 1988 में

उत्तर (b) 1986 में

7. COPRA (कोपरा) क्या है?

- (a) उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम
- (b) उत्पादक संरक्षण अधिनियम
- (c) मूल्य नियंत्रण अधिनियम
- (d) राष्ट्रीय संरक्षण अधिनियम

उत्तर (a) उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम

8. निम्नलिखित में से कौन-सी चीज उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत आती है?

- (a) विवाह पंडाल
- (b) चिकित्सक
- (c) खाद्य तेल
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

9. उपभोक्ता को निम्नलिखित में से कौन-सा अधिकार प्राप्त है?

- (a) सुरक्षा का
- (b) जानकारी का
- (c) चुनने का
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

10. जन-सूचना अधिकार (RTI) एक्ट कब पास किया गया?

- (a) 2005 में
- (b) 2006 में
- (c) 2007 में
- (d) 2008 में

उत्तर (a) 2005 में

11. भारत में निम्नलिखित में से कौन-सा उपभोक्ता न्यायालय कार्यरत है?

- (a) राष्ट्रीय उपभोक्ता न्यायालय
- (b) राज्य उपभोक्ता न्यायालय
- (c) जिला उपभोक्ता फोरम
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

12. सामान खरीदते समय उपभोक्ता का मुख्य कर्तव्य है-

- (a) सामान की रसीद लेना
- (b) दुकानदार के घर का पता लेना
- (c) दुकानदार के साथ मोल-भाव करना
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) सामान की रसीद लेना

13. भारत में किस दिन को राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस के रूप में मनाया जाता है?

- (a) 24 अक्टूबर
- (b) 24 नवंबर
- (c) 24 दिसंबर
- (d) 24 जनवरी

उत्तर (c) 24 दिसंबर

14. खाद्य सामग्री के मानक निर्धारण करने वाली संस्था कौन-सी है?

- (a) आई.एस.आई.
- (b) एगमार्क
- (c) हॉलमार्क
- (d) आई.एस.ओ.

उत्तर (b) एगमार्क

15. आभूषणों के मानक निर्धारण करने वाली संस्था है-

- (a) ISO
- (b) ISI
- (c) हॉलमार्क
- (d) एगमार्क

उत्तर (c) हॉलमार्क

16. प्रत्येक उत्पाद पर MRP मूल्य लिखा होता है, इसका अर्थ है-

- (a) Minimum Retail Price
- (b) Maximum Retail Price
- (c) Market Reserve Price
- (d) Money Reserve Price

उत्तर (b) Maximum Retail Price

17. वस्तुओं को खरीदते समय क्रेता को किस प्रकार के चिह्न या लोगो पर ध्यान देना चाहिए?

- (a) बैच संख्या
- (b) निर्माण की तिथि
- (c) आई.एस.आई. और एगमार्क
- (d) प्रमाणक पत्र से उप

उत्तर (c) आई.एस.आई. और एगमार्क

18. उपभोक्ता निवारण प्रक्रिया में प्रमुख समस्या है-

- (a) खर्चीली होना
- (b) प्रमाण जुटाना आसान नहीं होता
- (c) अधिक समय लेना
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

19. गैस कनेक्शन लेते समय विक्रेता उपभोक्ता को अपना चूल्हा लेने के लिए किसके अंतर्गत विवश नहीं कर सकता?

- (a) सूचना के अधिकार के अंतर्गत
- (b) चुनने के अधिकार के अंतर्गत
- (c) शोषण के विरुद्ध कार्यवाई के अंतर्गत
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (b) चुनने के अधिकार के अंतर्गत

20. उपभोक्ता के किस अधिकार का उल्लंघन होता है, यदि उपभोक्ता को अनुचित सौदेबाजी और शोषण के विरुद्ध क्षतिपूर्ति नहीं की गई है?

- (a) क्षतिपूर्ति निवारण का अधिकार
- (b) चुनाव का अधिकार
- (c) सुनवाई का अधिकार
- (d) समानता का अधिकार

उत्तर (a) क्षतिपूर्ति निवारण का अधिकार

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

21. उपभोक्ता आंदोलन की शुरुआत किन कारणों से हुई?

- (a) अत्यधिक खाद्य की कमी
- (b) जमाखोरी, कालाबाजारी
- (c) खाद्य पदार्थों एवं खाद्य तेल में गिरावट
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

22. भारत में उपभोक्ता आंदोलन किस रूप में हुआ?

- (a) सामाजिक बल
- (b) उपभोक्ता जागरूकता
- (c) अनैतिक और अनुचित व्यवसाय
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) सामाजिक बल

23. निम्नलिखित में से कौन-सा उपभोक्ता शोषण का तरीका है?

- (a) कम माप-तौल करना
- (b) मिलावट करना

- (c) असली वस्तु के स्थान पर नकली वस्तु देना
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

24. बाजार में वस्तु के पैकेट आदि पर किस प्रकार की जानकारीयाँ दी जाती हैं?

- (a) वस्तु के अवयवों, मूल्य, बैच संख्या
(b) निर्माण की तिथि और प्रयोग की अंतिम तिथि
(c) वस्तु का उत्पादन करने वाले का नाम, पता और मात्रा
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

25. वर्तमान समय में भारत में कितने उपभोक्ता संगठन हैं?

- (a) 500 से अधिक (b) 603
(c) 689 (d) 700 से अधिक

उत्तर (d) 700 से अधिक

26. राष्ट्रीय स्तर की उपभोक्ता अदालत किस राशि तक का मुकदमा सुनती है?

- (a) 50 लाख से एक करोड़ तक के दावे
(b) 60 लाख से एक करोड़ तक के दावे
(c) 80 लाख से एक करोड़ तक के दावे
(d) एक करोड़ से ऊपर दावेदारी

उत्तर (d) एक करोड़ से ऊपर दावेदारी

27. कोपरा के अंतर्गत कैसा न्यायिक तंत्र स्थापित किया गया है?

- (a) त्रिस्तरीय न्यायिक तंत्र-जिला स्तर, राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर के न्यायालय
(b) दो स्तरीय न्यायिक तंत्र-उपभोक्ता मंच, सर्वोच्च उपभोक्ता मंच
(c) एक स्तरीय न्यायिक तंत्र-उपभोक्ता अदालत
(d) कई स्तरीय न्यायिक तंत्र

उत्तर (a) त्रिस्तरीय न्यायिक तंत्र-जिला स्तर, राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर के न्यायालय

28. भारत में उपभोक्ता आंदोलनों के कारण विभिन्न समूहों का गठन हुआ, जिन्हें स्थानीय रूप से कहा जाता है-

- (a) उपभोक्ता संरक्षण परिषद्
(b) उपभोक्ता अंतर्राष्ट्रीय परिषद्
(c) उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) उपभोक्ता संरक्षण परिषद्

29. कौन-सा दिन राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस के रूप में मनाया जाता है?

- (a) 5 दिसंबर (b) 15 दिसंबर
(c) 20 दिसंबर (d) 24 दिसंबर

उत्तर (d) 24 दिसंबर

30. एक ऐसा अधिनियम जो नागरिकों को सरकारी विभागों के कार्य-कलापों की सूचनाएँ पाने के अधिकार को सुनिश्चित करता है, कहलाता है-

- (a) चुनने का अधिकार
(b) सुनवाई का अधिकार
(c) सूचना पाने का अधिकार
(d) उपभोक्ता संगठन बनाने का अधिकार

उत्तर (c) सूचना पाने का अधिकार

31. भारत में उपभोक्ता संबंधी कौन-सा कानून कब पारित किया गया था?

- (a) 1986 में कोपरा कानून
(b) 1989 में उपभोक्ता अधिकार कानून
(c) उपभोक्ता निवारण कानून, 1991
(d) उपभोक्ता कल्याण कानून, 1921

उत्तर (a) 1986 में कोपरा कानून

32. हॉलमार्क किस वस्तु का प्रमाणक चिह्न है?

- (a) चाँदी का (b) सोने का
(c) घड़ी का (d) खाद्य पदार्थों का

उत्तर (b) सोने का

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

33. सूचना पाने का अधिकार अधिनियम कब पारित हुआ?

- (a) जनवरी-2002 में (b) मार्च-2004 में
(c) अक्टूबर-2005 में (d) जुलाई-2007 में

उत्तर (c) अक्टूबर-2005 में

34. एमार्क किन वस्तुओं के लिए प्रमाणक चिह्न है?

- (a) इलेक्ट्रिक सामान का (b) खाद्य पदार्थों का
(c) उत्पादित मशीन (d) सोना

उत्तर (b) खाद्य पदार्थों का

35. आई.एस.आई. किसका प्रमाणक चिह्न है?

- (a) खाद्य पदार्थों का
(b) सोना
(c) उत्पादित मशीनों आदि या गैर खाद्य वस्तुओं का

(d) मोटर-गाड़ियों का

उत्तर (c) उत्पादित मशीनों आदि या गैर खाद्य वस्तुओं का

36. उपभोक्ता जिला स्तर का न्यायालय किस राशि तक का मुकदमा सुनता है?

- (a) 10 लाख तक के दावे (b) 20 लाख तक के दावे
(c) 25 लाख तक के दावे (d) 30 लाख तक के दावे

उत्तर (b) 20 लाख तक के दावे

37. राज्य स्तरीय उपभोक्ता अदालतें किस राशि तक मुकदमा सुनती हैं?

- (a) 20 लाख से एक करोड़ तक के दावे
(b) 10 लाख से 50 लाख तक के दावे
(c) 25 लाख से 90 लाख तक के दावे
(d) 30 लाख से एक करोड़ तक के दावे

उत्तर (a) 20 लाख से एक करोड़ तक के दावे

38. हमारी जनसंख्या का अधिकतर भाग-

- (a) शिक्षित है (b) अशिक्षित है
(c) निरक्षर है (d) धनी है

उत्तर (b) अशिक्षित है

39. कोपरा किस पर लागू होता है?

- (a) सामानों पर (b) दुकानों पर
(c) मकानों पर (d) उपर्युक्त सभी पर

उत्तर (a) सामानों पर

40. एगमार्क क्या है?

- (a) राष्ट्रीय संस्था (b) अंतर्राष्ट्रीय संस्था
(c) निजी संस्था (d) सार्वजनिक संस्था

उत्तर (b) अंतर्राष्ट्रीय संस्था

41. उपभोक्ता संरक्षण परिषद् किस प्रकार का संगठन है?

- (a) सामाजिक (b) असामाजिक
(c) सार्वजनिक (d) अंतर्राष्ट्रीय

उत्तर (a) सामाजिक

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. भारतीय संसद ने को उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम पास किया था।

(24 दिसंबर, 1985; 24 दिसंबर, 1986)

उत्तर : 24 दिसंबर, 1986

2. ISI : Indian Standard

(Institute/Index)

उत्तर : Institute

3. बाजार में उपभोक्ताओं की सुरक्षा के लिए नियम एवं की आवश्यकता होती है।

(विनियमों/उद्देश्यों)

उत्तर : विनियमों

4. राष्ट्रीय उपभोक्ता आयोग की स्थापना करती है।

(केन्द्रीय सरकार/राज्य सरकार)

उत्तर : केन्द्रीय सरकार

5. विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस प्रति वर्ष को पूरे विश्व में मनाया जाता है।

(15 मार्च/15 अप्रैल)

उत्तर : 15 मार्च

सही या गलत बताइए

1. एगमार्क कृषि उत्पादों पर गुणवत्ता की मुहर लगाती है।

उत्तर : सही

2. अंतर्राष्ट्रीय मानक संगठन की स्थापना 1948 में हुई थी।

उत्तर : गलत

3. MRP- Maximum Retail Price को प्रदर्शित करता है।

उत्तर : सही

4. बाजार में हमारी भागीदारी उत्पादक और निवेशक दोनों रूपों में होती है।

उत्तर : गलत

5. जन-सूचना अधिकार एक्ट 1905 में पास किया गया।

उत्तर : सही

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

अति लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. किस देश में सबसे पहले उपभोक्ता आंदोलन आरंभ हुआ?

उत्तर :

इंग्लैंड।

2. विश्व में प्रथम बार उपभोक्ता अधिकारों की घोषणा कब की गई?

उत्तर :

1962

3. विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस कब मनाया जाता है?

उत्तर :

15 मार्च।

4. भारत में सर्वप्रथम उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम कब पारित हुआ ?
उत्तर :
 1996 में।
5. सूचना अधिकार अधिनियम कब पारित किया गया ?
उत्तर :
 अक्टूबर, 2005
6. भारत में उपभोक्ता परिषदों की कुल संख्या कितनी है ?
उत्तर :
 500
7. उपभोक्ता आंदोलन का जनक कौन है ?
उत्तर :
 राल्फ नडार।
8. एम.आर.पी. (MRP) का क्या अर्थ है ?
उत्तर :
 अधिकतम खुदरा मूल्य।
9. आई.एस.ओ. (ISO) की स्थापना कब हुई ?
उत्तर :
 1947 में।
10. ISO का मुख्य कार्यालय कहाँ स्थित है ?
उत्तर :
 जेनेवा।
11. भारत में राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस कब मनाया जाता है ?
उत्तर :
 24 दिसंबर।
12. उस संस्था को क्या कहते हैं जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खाद्य का मानकीकरण करती है ?
उत्तर :
 कोडेक्स अल्टीमेंटेरिस कमीशन।
कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।
13. आपने एक शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश लिया है और आपने सारे वर्ष की फीस दे दी है, परंतु आपको पता चलता है कि संस्थान ने जो कुछ उपलब्ध कराने का वायदा किया है, वह उपलब्ध नहीं करा रहा है। अब आप संस्था बदलना चाहते हैं, परंतु प्रबंधन ने आपकी फीस वापस करने से इंकार कर दिया है। आपके कौन से अधिकार की अवहेलना हो रही है ?
उत्तर :
 चयन का अधिकार।
14. संयुक्त राष्ट्र ने उपभोक्ता संरक्षण के लिए कब यू.एन. निर्देशन को अपनाया ?
उत्तर :
 1985 में।
15. एक प्रेशर कुकर खरीदते समय आप कौन-सा लोगो (Logo) देखोगे ?
उत्तर :
 ISI Mark
16. राज्य स्तर पर कितनी रकम के दावों का निर्णय किया जाता है ?
उत्तर :
 20 लाख से 1 करोड़ रुपए।
17. एक व्यक्ति जो अपनी आवश्यकताओं के अनुसार बाजार से वस्तुओं तथा सेवाओं का क्रय करता है, क्या कहलाता है ?
उत्तर :
 उपभोक्ता।
18. आई.एस.ओ. (ISO) का क्या अर्थ है ?
उत्तर :
 मानक का अंतर्राष्ट्रीय संगठन (International Standardisation Organisation)।
19. बाजार में शोषण के विभिन्न रूपों का उल्लेख कीजिए।
उत्तर :
 1. दुकानदार द्वारा उचित वजन से कम तोलना।
 2. दोषपूर्ण वस्तुएँ बेचना।
 3. मिलावटी सामान बेचना।
20. कल्पना कीजिए कि आपको अपनी यात्रा के दौरान पीने के लिए पानी की पैक बोतल खरीदनी पड़ी है। इसकी गुणवत्ता के प्रति आश्वस्त होने के लिए आप कौन सा शब्द चिह्न (लोगो) देखना चाहोगे ?
उत्तर :
 इसके लिए निम्नलिखित शब्द चिह्न या लोगो देखना चाहेंगे
 1. आई.एस.आई. और 2. एगमार्क।
21. बाजार में वस्तु के पैकेट पर कौन-सी जानकारी दी जाती है ?
उत्तर :
 ये जानकारीयाँ उस वस्तु के अवयवों, मूल्य, बैच संख्या, निर्माण की तिथि, खराब होने की अंतिम तिथि और वस्तु बनाने वाले के पते के बारे में होती है।
22. उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम COPRA किस वर्ष बनाया गया ?
उत्तर :
 वर्ष 1986 में।
23. क्षतिपूर्ति निवारण का अधिकार के अंतर्गत क्षतिपूर्ति किस आधार पर निश्चय की जाती है ?
उत्तर :
 क्षतिपूर्ति क्षति की मात्रा के आधार पर निश्चय की जाती है।

24. वस्त्र खरीदने पर कौन-से निर्देश लिखे होते हैं?

उत्तर :

धुलाई संबंधी निर्देश।

25. बाजार में हमारी भागीदारी किस प्रकार की होती है?

उत्तर :

बाजार में हमारी भागीदारी उत्पादक और उपभोक्ता के रूप में होती है।

26. सोने की वस्तुओं का प्रमाणक चिह्न क्या है?

उत्तर :

हॉलमार्क।

27. यदि व्यापारी द्वारा उपभोक्ता को कोई क्षति पहुँचाई गई है तो किस उपभोक्ता अधिकार के अन्तर्गत वह नुकसान की भरपाई के लिए उपभोक्ता न्यायालय जा सकता है?

उत्तर :

यदि व्यापारी द्वारा उपभोक्ता को कोई क्षति पहुँचाई जाती है तो उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम 1986 के तहत वह नुकसान की भरपाई के लिए उपभोक्ता न्यायालय जा सकता है।

28. एगमार्क किन वस्तुओं का प्रमाणक चिह्न है?

उत्तर :

खाद्य पदार्थों का।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. उपभोक्ता शोषण क्या है? बाजार में उपभोक्ताओं के शोषण की विभिन्न विधियाँ कौन-सी हैं?

उत्तर :

1. **उपभोक्ता शोषण**— उपभोक्ता शोषण उस स्थिति को कहते हैं, जिसमें व्यापारी उपभोक्ता को घटिया वस्तु देते हैं या खुदरा मूल्य से अधिक मूल्य लेकर उन्हें धोखा देते हैं।

2. **उपभोक्ता शोषण की विधियाँ**— उपभोक्ता के शोषण की प्रमुख विधियाँ निम्नलिखित हैं—

1. **कम तौलना एवं कम करना**— बाजार में बेचा गा सामान कभी-कभी सही ढंग से तौला अथवा मापा नहीं जाता।
2. **घटिया सामान**— कभी-कभी उत्पादक एवं व्यापारी उपभोक्ता को घटिया सामान दे देता है। अंतिम तिथि निकलजाने के पश्चात भी उपभोक्ताओं को दवाएँ बेचना तथा खराब घरेलू उपकरणों को बेचना ये सभी उपभोक्ता शोषण के अंतर्गत आते हैं।
3. **अधिक या भारी कीमतें**— प्रायः दुकानदार निर्धारित खुदरा मूल्य से अधिक ले लेते हैं।

4. **नकली माल**— असली वस्तुओं व पुर्जों के स्थान पर नकली माल बेच दिया जाता है।

5. **मिलावट व अशुद्धता**— अधिक लाभ कमाने के लोभ में महँगे खाद्य-पदार्थों जैसे घी, तेल और मसालों में मिलावट की जाती है।

6. **कृत्रिम अभाव**— कभी-कभी व्यापारी वस्तुओं का कृत्रिम अभाव पैदा कर देते हैं और उन वस्तुओं का कृत्रिम अभाव पैदा कर देते हैं और उन वस्तुओं की जमाखोरी करते हुए उन्हें अधिक व ऊँचे दामों में बेचते हैं।

7. **झूठी या अधूरी जानकारी**— व्यापारी वस्तुओं के विषय में झूठी व आधी-अधूरी जानकारी देकर उपभोक्ता को आसानी से धोखे में डाल देते हैं। सौंदर्य प्रसाधन, दवाइयाँ, विद्युत उपकरण आदि कुछ ऐसे सामान्य उदाहरण हैं जिन्हें खरीदते समय उपभोक्ता कठिनाई का सामना करते हैं।

8. **विक्रय पश्चात सेवा की असंतोषजनक सुविधा**— बहुत सी महँगी वस्तुओं जैसे-कार तथा बिजली व इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों को बिक्री के बाद भी रख-रखाव की पर्याप्त आवश्यकता पड़ती है। लेकिन भुगतान के पश्चात व्यापारी ऐसी सेवाओं को असंतोषजनक ढंग से प्रदान नहीं करते।

2. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 के अंतर्गत शिकायत करने की कानूनी विधि समझाइए।

उत्तर :

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 के अंतर्गत शिकायत करने की कानूनी विधि— उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 के अंतर्गत शिकायत करने की कानूनी विधि में निम्नलिखित चरण शामिल हैं—

1. अपनी शिकायतों को दूर करवाने के लिए उपभोक्ता जिला फोरम, राज्य आयोग तथा राष्ट्रीय आयोग को प्रार्थना-पत्र भेज सकता है। अपील करने की कोई फीस नहीं है। उपभोक्ता स्वयं या अपने प्रतिनिधि के माध्यम से अपील कर सकता है। वह प्रार्थना-पत्र डाक द्वारा भी भेज सकता है। परंतु सुनवाई के समय उपभोक्ता को स्वयं उपस्थित होना पड़ेगा।
2. शिकायत की पाँच प्रतियाँ भरनी होंगी।
3. प्रार्थना-पत्र पर शिकायत करने वाले अथवा अधिकृत प्रतिनिधि के हस्ताक्षर होने चाहिए।
4. प्रार्थना-पत्र में निम्नलिखित सूचनाएँ होनी चाहिए—
 1. सुनवाई का कारण।
 2. शिकायत का शीर्षक (यदि हो सके)।
 3. विरोधी दल/दलों के नाम, विवरण तथा पता ताकि उनकी आसानी से पहचान की जा सके।
 4. शिकायत करने वाले का नाम, विवरण तथा पता।

5. विरोधी दल के विरुद्ध क्या शिकायत है।
6. विरोधी दल पर लगाए गए आरोपों के दस्तावेजों की प्रतिलिपियाँ।
7. प्रार्थना-पत्र के साथ प्रलेखी की हस्ताक्षरित सूची भेजी जानी चाहिए।
8. मुआवजे की राशि जिसमें हानि की राशि, शिकायत के खर्चे भी शामिल हों।

3. उपभोक्ताओं के असंतोष के कारण उपभोक्ता आंदोलन का प्रारम्भ हुआ। तर्कों सहित कथन को न्यायोचित ठहराइये।

उत्तर :

1. उपभोक्ताओं की असंतुष्टि और बहुत से अनुचित व्यापार व्यवहारों पर उनकी प्रतिक्रिया।
2. अनुचित व्यापार व्यवहार में संलिप्त एक ब्राण्ड विशेष वाले उत्पाद या दुकान का परित्याग करना।
3. कारोबारियों द्वारा जानबूझकर एवं मुनाफाखोरी के लिए जमाखोरी, कालाबाजारी, अपमिश्रण और खाद्य पदार्थों का बाजार में अस्थायी अभाव उत्पन्न करने की कुचेष्टाओं का आश्रय लिया जाना।

आंदोलन का विकास- इस आंदोलन का व्यवस्थित रूप से उदय 1960 के दशक से हुआ। 1970 के दशक से यह आंदोलन अपनी तरुणता को प्राप्त हुआ। 1986 में उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम पारित हुआ।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

4. उपभोक्ता न्यायालय का क्या कर्तव्य है?

उत्तर :

उपभोक्ता न्यायालय उपभोक्ताओं द्वारा व्यापारियों एवं निर्माताओं के विरुद्ध प्रस्तुत की गई शिकायतों की सुनवाई करता है तथा व्यापारियों एवं निर्माताओं को आदेश देता है कि वे उनकी क्षतिपूर्ति करें।

5. सार्वजनिक वितरण प्रणाली का क्या लाभ है?

उत्तर :

1. सार्वजनिक वितरण प्रणाली निर्धन लोगों को सही समय तथा उचित कीमत पर सही गुणवत्ता की अनेक अनिवार्य वस्तुओं की आपूर्ति करने में सहायक है।
2. यह प्रणाली व्यापारियों एवं मुनाफाखोरों द्वारा जमाखोरी, कालाबाजारी एवं अधिक कीमतें ऐंठने से लोगों को बचाती है।

6. भारतीय मानक ब्यूरो का क्या काम है?

उत्तर :

आई.एस.आई. (भारतीय मानक संस्थान) को अब बी.आई.एस. के नाम से जाना जाता है। इसका मुख्य कार्य वैज्ञानिक आधार पर औद्योगिक व उपभोक्ता सामान के मानक निर्धारित करने का है। इसका काम उन वस्तुओं को प्रमाणित करने का भी है जो निर्धारित मानदंड पर खरे उतरें। आई.एस.आई. चिह्न

वाले प्रत्यक्ष सामान से हमें भरोसा हो जाता है कि हमने सही सामान खरीदा है।

7. उपभोक्ता संरक्षण परिषद तथा उपभोक्ता न्यायालय में क्या अंतर है?

उत्तर :

उपभोक्ता संरक्षण परिषद तथा उपभोक्ता न्यायालय में अंतर-

	उपभोक्ता संरक्षण परिषद	उपभोक्ता न्यायालय
1.	उपभोक्ता संरक्षण परिषदों का निर्माण उपभोक्ता आंदोलन के फलस्वरूप हुआ।	उपभोक्ता न्यायालय की स्थापना उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के प्रावधान के अंतर्गत की गई।
2.	ये परिषदें स्वैच्छिक संगठन हैं।	उपभोक्ता न्यायालय सरकारी तंत्र है।

8. बाजार में उपभोक्ताओं की सुरक्षा के लिए नियम और विनियमों की आवश्यकता होती है। इस कथन को न्यायोचित ठहराइये।

उत्तर :

बाजार में उपभोक्ताओं के हितों की सुरक्षा के लिए नियमों तथा विनियमों की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि व्यापारी, निर्माता, महाजन अपने-अपने प्रकार से उपभोक्ता का शोषण करते हैं। इसे निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा तर्क के साथ समझा जा सकता है-

1. महाजन (ऋणदाता) कर्जदार व्यक्ति को अपना उत्पादन कम मूल्य पर बेचने के लिए विवश करता है। जैसे- एक व्यक्ति भैंस खरीदने के लिए धन महाजन से ब्याज पर लेता है। महाजन उससे बाजार से कम कीमत पर, शुद्ध दूध तथा मात्रा में भी अधिक की माँग करता है।
2. असंगठित क्षेत्र में नियोक्ता मजदूर को कम वेतन या मजदूरी पर अधिक घंटे काम करने के लिए विवश करता है। यह उसके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध होता है।
3. बाजार में उपभोक्ताओं का शोषण किया जाता है। बाजार में दुकानदार उपभोक्ता को कम तोलकर, मिलावटी सामान बेचकर तथा अधिक मूल्य में वस्तु को बेचकर उसका शोषण करता है।
4. कभी-कभी दुकानदार माँग की अधिकता को देखते हुए वस्तुओं का भंडारण करके वस्तु की बाजार में अस्थायी आपूर्ति में कमी दर्शाता है और उपभोक्ताओं से अधिक मूल्य वसूलता है।
9. बाजार में नियमों और विनियमों की आवश्यकता क्यों होती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

बाजार में उपभोक्ताओं के हितों की सुरक्षा के लिए नियमों तथा विनियमों की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि व्यापारी, निर्माता, महाजन अपने-अपने प्रकार से उपभोक्ता का शोषण करते

हैं। इसे निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा तर्क के साथ समझा जा सकता है—

1. महाजन (ऋण दाता) कर्जदार व्यक्ति को अपना उत्पादन कम मूल्य पर बेचने के लिए विवश करता है। जैसे— एक व्यक्ति भैंस खरीदने के लिए धन महाजन से ब्याज पर लेता है। महाजन उससे बाजार से कम कीमत पर, शुद्ध दूध तथा मात्रा में भी अधिक की माँग करता है।
2. असंगठित क्षेत्र में नियोक्ता मजदूर को कम वेतन या मजदूरी पर अधिक घंटे काम करने के लिए विवश करता है। यह उसके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध होता है।
3. बाजार में उपभोक्ताओं का शोषण किया जाता है। बाजार में दुकानदार उपभोक्ता को कम तोलकर, मिलावटी सामान बेचकर तथा अधिक मूल्य में वस्तु को बेचकर उसका शोषण करता है।

कभी-कभी दुकानदार माँग की अधिकता को देखते हुए वस्तुओं का भंडारण करके वस्तु की बाजार में अस्थायी आपूर्ति में कमी दर्शाता है और उपभोक्ताओं से अधिक मूल्य वसूलता है।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

10. मानकीकरण क्या है? भारत में मानकीकरण उत्पाद के लिए दो एजेंसी के नाम लिखें।

उत्तर :

मानकीकरण— उत्पाद के मानकीकरण के अंतर्गत सरकार उत्पाद के लिए न्यूनतम मानक निर्धारित करती है। न्यूनतम मानक बनाए रखने के लिए सरकार ने कई संस्थाएँ बनाई हैं। मानकीकरण के माध्यम से सरकार उपभोक्ताओं को गुणवत्ता की कमी से बचाती है।

दो एजेंसियों के नाम—

1. BIS तथा
2. AGMARK

11. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 की प्रमुख विशेषताओं लिखें।

उत्तर :

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 की प्रमुख विशेषताएँ अग्रलिखित हैं—

1. यह अधिनियम सभी वस्तुओं तथा सेवाओं पर लागू होता है।
2. इसमें सभी क्षेत्रक चाहे वे सार्वजनिक हों, निजी हों या सहकारी हों, आते हैं।
3. यह उपभोक्ताओं को कई अधिकार प्रदान करता है।
4. इसने उपभोक्ताओं को कई अधिकारों की रक्षा करने तथा उनको बढ़ाने के लिए केंद्रीय और राज्य स्तर पर उपभोक्ता संरक्षण परिषदों की स्थापना की है।
5. इसमें राष्ट्रीय, राज्य और जिले स्तर पर तीन स्तरीय अर्ध-न्यायिक मशीनरी की स्थापना का प्रावधान किया

गया है।

12. भारत के उपभोक्ता आंदोलन को जन्म देने वाले किन्हीं तीन कारकों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

भारत के बाजारों में प्राप्त अनेकों वस्तुओं ने जो उपभोक्ता को अधिक मूल्य पर तथा पूर्णतः संतुष्ट न करने वाली तथा माँग से कम मात्रा में आदि कारणों ने उपभोक्ता आंदोलन को जन्म दिया।

वस्तुओं की माँग के अनुसार पूर्ति में कमी के कारण उनकी कीमतों में वृद्धि होना उपभोक्ता आंदोलन का कारण था।

वस्तुओं में मिलावट, आधी-अधूरी वस्तुओं की उपलब्धता तथा दुकानदारों का ग्राहकों के साथ दुर्व्यवहार, खराब वस्तु को बेचकर पुनः वापिस न लेना (बिका हुआ माल वापिस न होगा) तथा वस्तुओं का समय की गारंटी से पहले ही खराब हो जाना आदि समस्यात्मक कारकों ने उपभोक्ता आंदोलन को जन्म दिया।

13. उपभोक्ताओं का बाजार में किस प्रकार शोषण होता है? किन्हीं पाँच तथ्यों सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वस्तुओं का बाजार से क्रय करता है उसे उपभोक्ता कहते हैं। दुकानदार जो वस्तुओं का विक्रय करता है, उसे विक्रेता कहते हैं। विक्रेता क्रेता को अपनी मधुर भाषा से क्रेता को लुभाकर वस्तु का वास्तविक मूल्य से अधिक मूल्य वसूलता है और उसका शोषण करता है। वह क्रेता का निम्न प्रकार से शोषण करता है—

1. पुरानी तथा घटिया वस्तुओं को नये तथा सुन्दर डिब्बे में पैक करके बेचता है।
2. लोकल वस्तु को ब्रांडिड लेबल एवं मार्क लगाकर बेचता है।
3. वस्तु में उसी के आकर, रंग तथा रूप की निःशुल्क प्राप्त होने वाली अथवा बहुत कम मूल्य से मिलने वाली वस्तु को मिला कर ऊँचे मूल्य पर बेचता है।
4. वह वस्तु को बेचते समय विक्रय रसीद न देकर कर की चोरी करता है।
5. त्रुटिपूर्ण तराजू एवं बाटों का प्रयोग करके क्रेता का शोषण करता है।

14. उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए कि क्षतिपूर्ति निवारण के अधिकार का आप किस प्रकार उपयोग कर सकते हैं।

अथवा

कोई किस प्रकार अनुचित सौदेबाजी और शोषण के विरुद्ध क्षतिपूर्ति निवारण के अधिकार का उपयोग कर सकता है, एक उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. मुकदमों के दौरान सारी कागजी औपचारिकताएँ पूरी करनी होती हैं तथा ये मुकदमों अदालती कार्यवाहियों में शामिल होने और आगे बढ़ने आदि में काफी समय लेते हैं। कई बार उपभोक्ताओं को वकीलों का सहारा लेना पड़ता है। अतः उपभोक्ता निवारण प्रक्रिया जटिल, खर्चीली और समय साध्य साबित हो रही है।
2. अधिकांश मामलों में खरीददारी के समय रसीद नहीं दी जाती है। ऐसी स्थिति में प्रमाण जुटाना आसान नहीं होता है।
3. बाजार में अधिकांश खरीददारियाँ छोटी फुटकर दुकानों से होती हैं। दोषमुक्त उत्पादों से पीड़ित उपभोक्ताओं की क्षतिपूर्ति के मुद्दे पर मौजूदा कानून भी बहुत स्पष्ट नहीं है।
4. बाजारों के कार्य करने के लिए नियमों और विनियमों का प्रायः पालन नहीं होता है।
5. मौजूदा कानूनों को प्रभावी ढंग से लागू भी नहीं करवाया जा सका है।

उपभोक्ताओं को अनुचित सौदेबाजी और शोषण के विरुद्ध क्षतिपूर्ति निवारण का अधिकार है। यदि उपभोक्ता को कोई क्षति पहुँचाता है तो क्षतिपूर्ति की मात्रा के आधार पर उसे क्षतिपूर्ति का अधिकार होगा।

15. क्षतिपूर्ति निवारण के अधिकार की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

वर्तमान में उपभोक्ताओं को क्षतिपूर्ति निवारण का अधिकार प्राप्त है जो निम्न प्रकार से है—

यदि उपभोक्ता को किसी वस्तु या उपकरण का प्रयोग करने में हानि हुई है तो उसे हानि की मात्रा के आधार पर क्षतिपूर्ति पाने का अधिकार है। इसके अंतर्गत किसी भी सेवा जैसे डाक विभाग द्वारा मनीआर्डर देर से पहुँचने से उपभोक्ता को हानि होती है तो वह क्षतिपूर्ति की माँग कर सकता है।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 क्यों बनाया गया?

अथवा

उपभोक्ताओं के दावों का निपटारा करने के लिए तीन-स्तरीय अर्ध-न्यायिक तंत्र क्या है? उनके कार्य क्षेत्र भी लिखें।

उत्तर :

उपभोक्ताओं के हितों के संरक्षण तथा उनको व्यापारियों/उत्पादकों के शोषण से बचाने के लिए उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 बनाया गया है। इस अधिनियम के अंतर्गत ग्राहकों के हितों की रक्षा की जाती है। अधिनियम के अंतर्गत

ग्राहकों को खराब वस्तुएँ तथा खराब सेवाओं से उत्पादकों के शोषण आदि से बचाने का प्रावधान है।

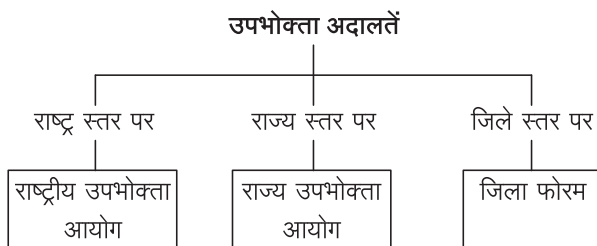
तीन स्तरीय अर्ध-न्यायिक तंत्र—उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 ने तीन स्तरीय उपचार तंत्र प्रदान किया है। जहाँ उपभोक्ता शिकायतें दर्ज करा सकता है। ये हैं—

1. **जिला फोरम**— उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के अनुसार, राज्य सरकार प्रत्येक जिले में एक या अधिक जिला फोरम स्थापित कर सकती है। जिला फोरम की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—
 1. इसमें एक अध्यक्ष सहित तीन सदस्य होते हैं जिनमें से एक महिला सदस्य होना अनिवार्य है। ये नियुक्ति राज्य सरकार करती है। अध्यक्ष के लिए व्यक्ति में जिला न्यायाधीश की योग्यता होना जरूरी है।
 2. जिला फोरम में 20 लाख रुपये से कम मूल्य के विवादों से संबंधित शिकायतों का समाधान किया जाता है।
 3. शिकायत उपभोक्ता द्वारा किसी रजिस्टर्ड उपभोक्ता संघ के माध्यम से की जा सकती है।
 4. शिकायत दर्ज होने पर इस बात की सूचना विरोधी पक्षकार को भेज दी जाती है।
 5. परीक्षण के बाद यदि यह सिद्ध हो जाए कि माल अथवा सेवा दोषपूर्ण है तो विरोधी पक्षकार को जिला फोरम निम्न में से एक या अधिक आदेश दे सकता है:
 - वस्तु के दोषों को दूर किया जाए।
 - दोषपूर्ण वस्तु के स्थान पर नई वस्तु दी जाए।
 - उपभोक्ता को माल का मूल्य लौटा दिया जाए।
 - क्षति के लिए उपभोक्ता को हर्जाने का भुगतान किया जाए।
2. **राज्य आयोग**—राज्य आयोग प्रत्येक राज्य में राज्य सरकार द्वारा स्थापित किया जाता है। इसकी मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—
 1. इसमें एक अध्यक्ष सहित तीन सदस्य होते हैं जिनमें से एक महिला सदस्य का होना अनिवार्य है। इनकी नियुक्ति राज्य सरकार करती है। अध्यक्ष केवल उसी व्यक्ति को नियुक्त किया जा सकता है जिसमें उच्च न्यायालय के न्यायाधीश की योग्यताएँ हों।
 2. राज्य आयोग में 20 लाख रुपये से 1 करोड़ रुपये तक के मूल्य विवादों से संबंधित शिकायतों का समाधान किया जाता है।
 3. शिकायत दर्ज होने पर इस बात की सूचना विरोधी पक्षकार को भेज दी जाती है।
3. **राष्ट्रीय आयोग**—राष्ट्रीय आयोग की स्थापना केंद्रीय सरकार द्वारा की जाती है। इसकी विशेषताएँ निम्न हैं—

1. इसमें एक अध्यक्ष सहित पाँच सदस्य होते हैं जिनमें से एक महिला सदस्य का होना अनिवार्य है। इसकी नियुक्ति केंद्रीय सरकार करती है।
 2. राष्ट्रीय आयोग में 1 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य के विवादों से संबंधित शिकायतों का समाधान किया जाता है
 3. शिकायत दर्ज होने पर इस बात की सूचना विरोधी पक्ष को भेज दी जाती है।
2. उस अधिनियम का नाम बताएँ जिसके अंतर्गत उपभोक्ता अदालतें स्थापित की गई हैं? इन अदालतों का क्या महत्व है?

उत्तर :

उपभोक्ता अदालतों की स्थापना उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 के अंतर्गत की गई है।



महत्व-

1. ये अदालतें व्यापारियों तथा निर्माताओं के विरुद्ध उपभोक्ताओं की शिकायतें सुनती हैं और उपभोक्ताओं को आवश्यक राहत तथा क्षतिपूर्ति उपलब्ध करवाती हैं।
 2. ये अदालतें तीन महीने के अंतर्गत ही प्रत्येक शिकायत को दूर करती हैं।
 3. ये अदालतें निम्न न्यायालय, उच्च न्यायालय तथा उच्चतम न्यायालय के भार को कम करती हैं।
3. निम्नलिखित उत्पादों/सेवाओं (आप सूची में नया नाम जोड़ सकते हैं) पर चर्चा करें और बताएँ कि इनमें उत्पादकों द्वारा किन सुरक्षा नियमों का पालन करना चाहिए?

1. एल.पी.जी. सिलिंडर,
2. सिनेमा थिएटर,
3. सर्कस,
4. दवाईयाँ,
5. खाद्य तेल,
6. विवाह पंडाल,
7. एक बहुमंजिली इमारत।

उत्तर :

1. **एल.पी.जी. सिलिंडर**—उत्पादक कंपनी द्वारा प्रत्येक सिलिंडर पर उसका कुल वजन अर्थात् सिलिंडर के वजन के साथ-साथ गैस का वजन लिखा जाना चाहिए क्योंकि सिलिंडर को भरते समय कंपनी के कर्मचारी गैस कम

या सामान्य वजन से ज्यादा भी कर सकते हैं। एल.पी.जी. सिलिंडर पर कीमत भी लिखी होनी चाहिए। गैस की आपूर्तिकर्ता को पहले ही यह जाँच कर लेनी चाहिए कि सिलिंडर तथा गैस का वजन, सिलिंडर पर लगी हुई सील आदि बिल्कुल ठीक हैं। सिलिंडर को ग्राहक के पास पहुँचाने वाला कर्मचारी इस बात की जाँच भी करे कि उपभोक्ता अपने स्तर पर रसोईघर में उन नियमों का पालन कर रहे हैं या नहीं जो सुरक्षा के अनिवार्य हैं।

2. **सिनेमा थिएटर**—सिनेमाघरों में लाइसेंस दिए जाने से पहले उसके नक्शे, उसके आकार आदि की स्थानीय निकाय या सरकार द्वारा पूरी जाँच कराई जाए।

सिनेमा के बाहर वाहनों की पार्किंग के लिए पर्याप्त स्थान तथा उचित व्यवस्था की जाए। उपहार नामक सिनेमा थिएटर में घटित इसी अव्यवस्था का परिणाम थी।

सिनेमाघर के अंदर बैठने की नक्शे के अनुसार व्यवस्था हो, प्रवेश और निकासी द्वार पर्याप्त हों। बिजली आपूर्ति एवं फिटिंग से संबंधित व्यवस्था की समय-समय पर पूर्णतया जाँच हो। दुर्भाग्यवश अचानक आग लग जाने पर उसको बुझाने के लिए अग्निशामक, रेत की बाल्टियाँ, जल और टैंक आदि की भी पर्याप्त व्यवस्था की जाए।

जो लोग सिनेमाघर में टिकट लेकर जा रहे हैं उनकी अच्छी प्रकार से जाँच पुलिस द्वारा होनी चाहिए ताकि कोई आतंकवादी या समाजविरोधी तत्व लोगों के जान-माल से खिलवाड़ न कर सके।

3. **सर्कस**—सर्कस में भी सिनेमा थिएटर की तरह सुरक्षा संबंधी सभी सावधानियों जैसे प्रवेश और निकासी की जाँच आग बुझाने के लिए रेत की बाल्टियाँ, जल टैंक और अग्निशामक गैस सिलिंडर आदि की व्यवस्था की जाए। सभी खतरनाक जंगली जानवरों जैसे—शेर, चीता, भालू आदि को मजबूत पिंजरों में रखा जाए। उन्हें करतब दिखाने के लिए पूर्ण प्रशिक्षित लोगों की निगरानी में ही पिंजरों से बाहर निकाला जाए। खेल दिखाने के बाद उन्हें तुरंत पिंजरों में बंद कर दिया जाए।

सर्कस के क्षेत्र को ढकने के लिए जो टेंट लगाया जाए उसका कपड़ा तुरंत आग या बिजली की चिंगारी को पकड़ने वाला न हो। ऐसा करने से हजारों लोगों की जान-माल का खतरा उत्पन्न नहीं होगा। सर्कस के मालिक और प्रबंधकर्ता का खेल दिखाने वाले लोगों की सुरक्षा का भी कुशल प्रबंध करना चाहिए।

4. **दवाईयाँ**—दवाई का नाम, कंपनी का व्यापार चिह्न, विनिर्माण और दवाई के प्रभाव की समाप्ति तारीख, अधिकतम खुदरा मूल्य तथा विक्रय कर की राशि उनके लेबिल पर अंकित की जाए। कैमिस्ट को यह निर्देश दिया जाए कि डॉक्टर द्वारा निर्देशित किए जाने पर ही वे उन्हें बेचें।

5. **खाद्य तेल**—सीलबंद पैकटों या बॉक्स तथा टिन में बंद

तेल ही बेचा जाए। सील बंद टिनों या बॉक्सों पर उसके विनिर्माण की तिथि, समाप्ति तिथि, फुटकर कीमत, आई. एस.आई. और ट्रेडमार्क आदि लिखा होना चाहिए।

6. **विवाह पंडाल**—नाइलॉन की चादर वाले विवाह पंडाल का प्रयोग न किया जाए। उसमें प्रवेश और निकासी का पर्याप्त चौड़ा मार्ग रखा जाए। बिजली का जेनरेटर पंडाल से काफी दूरी पर रखा जाए तथा उसकी देखरेख करने वाला बिजली-मिस्त्री मौजूद रहे। भोजन बनाने की जगह पर अग्निशामक यंत्र और पानी के टैंक आदि की पर्याप्त व्यवस्था की जाए। खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता का भी ध्यान रखा जाए।
7. **एक बहुमंजिली इमारत**—बहुमंजिली इमारत का निर्माण पूर्णतया प्रामाणिक मानचित्र के अनुसार कराया जाए। इसके लिए कुशल वास्तुकारों, अभियंताओं और प्रशिक्षित शिल्पियों को ही नियुक्त किया जाए। यदि इमारत चार मंजिल से ऊँची है तो उसमें दो या तीन लिफ्ट लगी होनी चाहिए। उसमें पार्किंग, खुला पार्क, अग्निशमन आदि की समुचित व्यवस्था की जाए। स्थानीय सरकारी प्राधिकरणों द्वारा प्रमाणित योजना और मानचित्र के अनुसार ही ऐसी इमारत को आवासीय या वाणिज्यिक इकाइयों के रूप में प्रयोग किया जाए।
4. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत दिए गए सूचना प्राप्ति के अधिकार को दो उदाहरणों की सहायता से समझाएँ।

उत्तर :

सूचना प्राप्ति का अधिकार— उपभोक्ता को यह अधिकार होता है कि उसको वे सभी सूचनाएँ उपलब्ध करवाई जाएँ जिनके आधार पर वह वस्तु अथवा सेवा को क्रय करने का निर्णय लेता है। ये सूचनाएँ वस्तु की किस्म, मिश्रण, मूल्य, प्रमाण, तैयार करने की तिथि, प्रयोग करने की विधि आदि के संबंध में हो सकती हैं। अतः उत्पादक को चाहिए कि इन सभी सूचनाओं को सही रूप में प्रस्तुत करे ताकि उपभोक्ता धोखे से बचे।

उदाहरण—

1. जब एक ग्राहक एक दवाई खरीदता है, उसे उस दवाई के प्रयोग विधि, प्रभाव तथा दवाई के प्रयोग में निहित जोखिम के बारे में सूचित किया जाना चाहिए।
2. यदि कोई सिले-सिलाये कपड़े खरीदता है, उसे उस कपड़े की गुणवत्ता बताई जाए और यह भी बताया जाए कि उस कपड़े की धुलाई किस प्रकार की जाए ताकि कपड़ा सिकुड़ न जाए।
5. बाजार में उपभोक्ताओं के संरक्षण के लिए नियम और विनियम क्यों आवश्यक हैं? उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

निम्न कारणों से उपभोक्ताओं के संरक्षण के लिए नियम तथा विनियमों की आवश्यकता है—

1. **मिलावट व अशुद्धता**—अधिक लाभ कमाने के लोभ में महुँगे

खाद्य-पदार्थों जैसे-घी, तेल और मसालों में मिलावट की जाती है।

2. **सुरक्षा उपयों की कमी**—विद्युत यंत्र एवं अन्य उपकरण जो स्थानीय स्तर पर घरेलू व छोटे उद्योगों में बनाये जाते हैं उनमें सुरक्षा की कमी पाई जाती है जिससे उपभोक्ता को दुर्घटना का शिकार होना पड़ता है।
3. **कृत्रिम अभाव**— कभी-कभी व्यापारी वस्तुओं का कृत्रिम अभाव पैदा कर देते हैं और उन वस्तुओं की जमाखोरी करते हुए उन्हें अधिक व ऊँचे दामों में बेचते हैं।
4. **झूठी या अधूरी जानकारी**— व्यापारी वस्तुओं के विषय में झूठी व आधी-अधूरी जानकारी देकर उपभोक्ता को आसानी से धोखे में डाल देते हैं। सौंदर्य प्रसाधन, दवाइयाँ, विद्युत उपकरण आदि कुछ ऐसे सामान्य उदाहरण हैं जिन्हें खरीदते समय उपभोक्ता कठिनाई का सामना करते हैं।
5. **विक्रय पश्चात् सेवा की असंतोषजनक सुविधा**— बहुत-सी महुँगी वस्तुओं जैसे-कार तथा इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को बिक्री के बाद भी रख-रखाव की पर्याप्त आवश्यकता पड़ती है लेकिन भुगतान के पश्चात् व्यापारी ऐसी सेवाओं को ढंग से प्रदान नहीं करते।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

NCERT पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

1. बाजार में नियमों तथा विनियमों की आवश्यकता क्यों पड़ती है? कुछ उदाहरणों के द्वारा समझाएँ।

उत्तर :

बाजार में उपभोक्ताओं को शोषण से बचाने के लिए और उत्पादकों की मनमर्जी पर अंकुश लगाने के लिए नियमों और विनियमों की आवश्यकता पड़ती है। जब उत्पादक थोड़े और शक्तिशाली होते हैं और उपभोक्ता कम मात्रा में खरीददारी करते हैं और बिखरे हुए होते हैं, तो बाजार उचित तरीके से कार्य नहीं करता है। यह स्थिति तब होती है, जब इन वस्तुओं का उत्पादन बड़ी कंपनियाँ कर रही हों। अधिक पूँजीवाली, शक्तिशाली और समृद्ध कंपनियाँ विभिन्न प्रकार से चालाकीपूर्वक बाजार को प्रभावित कर सकती हैं। उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए वे समय-समय पर मीडिया और अन्य स्रोतों के द्वारा गलत सूचना देते हैं। उदाहरण के लिए, एक कंपनी ने यह दावा करते हुए कि माता के दूध से हमारा उत्पाद बेहतर है, सर्वाधिक वैज्ञानिक उत्पाद के रूप में शिशुओं के लिए दूध का पाउडर पूरे विश्व में कई वर्षों तक बेचा। कई वर्षों के लगातार संघर्ष के बाद कंपनी को यह मानना पड़ा कि वह झूठे दावे करती आ रही थी।

2. भारत में उपभोक्ता आंदोलन की शुरुआत किन कारणों से हुई? इसके विकास के बारे में पता लगाएँ।

उत्तर :

1. **भारत में उपभोक्ता आंदोलन की शुरुआत**— उपभोक्ता

आंदोलन की शुरुआत उपभोक्ताओं के असंतोष के कारण हुई, क्योंकि विक्रेता कई अनुचित व्यावसायिक व्यवहारों में सम्मिलित होते थे। बाजार में उपभोक्ता को शोषण से बचाने के लिए कोई कानूनी व्यवस्था उपलब्ध नहीं थी।

भारत में सामाजिक बल के रूप में उपभोक्ता आंदोलन का जन्म, अनैतिक और अनुचित व्यवसाय कार्यों से उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करने और प्रोत्साहित करने की आवश्यकता के साथ हुआ। अत्यधिक खाद्य कमी, जमाखोरी, कालाबाजारी, खाद्य पदार्थों एवं खाद्य तेल में मिलावट के कारण 1960 के दशक में व्यवस्थित रूप में उपभोक्ता आंदोलन का उदय हुआ।

2. **भारत में उपभोक्ता आंदोलन का विकास-** 1970 के दशक तक उपभोक्ता संस्थाएँ बड़े पैमाने पर उपभोक्ता अधिकार से संबंधित आलेखों के लेखन और प्रदर्शनी के आयोजन का कार्य करने लगीं थीं। उन्होंने सड़क यात्री परिवहन में अत्यधिक भीड़-भाड़ और राशन की दुकानों में होने वाले अनुचित कार्यों पर नजर रखने के लिए उपभोक्ता दल बनाया। हाल ही में, भारत में उपभोक्ता दलों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

3. दो उदाहरण देकर उपभोक्ता जागरूकता की जरूरत का वर्णन करें।

उत्तर :

निम्न कारणों से उपभोक्ता जागरूकता की आवश्यकता है-

1. उपभोक्ता जागरूकता की इसलिए भी जरूरत है क्योंकि बेईमान व्यापारी अपने थोड़े से फायदे के लिए जनसाधारण के जीवन से खेलना शुरू कर देते हैं। जैसे-विभिन्न खाद्य पदार्थों-दूध, घी, तेल, मक्खन, खोया और मसालों आदि में मिलावट करते हैं जिससे आम व्यक्ति के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इस कारण उपभोक्ता जागरूकता आवश्यक है जिससे व्यापारी हमारे स्वास्थ्य से खिलवाड़ न कर सकें।
2. उपभोक्ता जागरूकता इसलिए आवश्यक है क्योंकि अपने स्वार्थों से प्रेरित होकर दोनों-उत्पादक और व्यापारी कोई भी गलत काम कर सकते हैं। जैसे-वे खराब वस्तु दे सकते हैं, कम तौल सकते हैं, अपनी सेवाओं के अधिक मूल्य ले सकते हैं, आदि। धन के लालच के कारण ही समय-समय पर जरूरी वस्तुओं के दाम बहुत बढ़ जाते हैं।
4. कुछ ऐसे कारकों की चर्चा करें, जिनसे उपभोक्ताओं का शोषण होता है?

उत्तर :

व्यापारी, दुकानदार और उत्पादक कई तरीकों से उपभोक्ताओं का शोषण करते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख तरीके निम्नलिखित हैं-

1. **अधूरी या गलत जानकारी-** बहुत से उत्पादक अपने सामान की गुणवत्ता को बढ़ा-चढ़ाकर पैकेट के ऊपर लिख देते हैं जिससे उपभोक्ता धोखा खाते हैं। जब वे ऐसी चीजों का प्रयोग करते हैं तो उल्टा ही पाते हैं और अपने-आप को ठगा हुआ महसूस करते हैं।
2. **असन्तोषजनक सेवा-** बहुत-सी वस्तुएँ ऐसी होती हैं जिन्हें खरीदने के बाद एक लम्बे समय तक सेवाओं की आवश्यकता होती है, जैसे-कूलर, फ्रिज, वाशिंग मशीन, स्कूटर और कार आदि। परन्तु खरीदते समय जो वादे उपभोक्ता से किए जाते हैं, वे खरीदने के बाद पूरे नहीं किए जाते। विक्रेता और उत्पादक एक-दूसरे पर इसकी जिम्मेदारी डालकर उपभोक्ताओं को परेशान करते हैं।
3. **कृत्रिम अभाव-** लालच में आकर विक्रेता बहुत-सी चीजें होने पर भी उन्हें दबा लेते हैं। इसकी वजह से बाजार में वस्तुओं का कृत्रिम अभाव पैदा हो जाता है। बाद में इसी सामान को ऊँचे दामों पर बेचकर दुकानदार लाभ कमाते हैं। इस प्रकार विभिन्न तरीकों द्वारा उत्पादक, विक्रेता और व्यापारी उपभोक्ताओं का शोषण करते हैं।
4. **घटिया सामान-** कुछ बेईमान उत्पादक जल्दी धन एकत्र करने के उद्देश्य से घटिया किस्म का माल बाजार में बेचने लगते हैं। दुकानदार भी ग्राहक को घटिया माल दे देता है क्योंकि ऐसा करने से उसे अधिक लाभ होता है।
5. **कम तौलना या मापना-** बहुत से चालाक व लालची दुकानदार ग्राहकों को विभिन्न प्रकार की चीजें कम तौलकर या कम मापकर उनको ठगने का प्रयत्न करते हैं।
6. **अधिक मूल्य-** जिन चीजों के ऊपर विक्रय मूल्य नहीं लिखा होता, वहाँ कुछ दुकानदारों का यह प्रयत्न होता है कि ऊँचे दामों पर चीजों को बेचकर अपने लाभ को बढ़ा लें।
7. **मिलावट करना-** लालची उत्पादक अपने लाभ को बढ़ाने के लिए खाने-पीने की चीजों, जैसे-घी, तेल, मक्खन, मसालों आदि में मिलावट करने से बाज नहीं आते। ऐसे में उपभोक्ताओं का दोहरा नुकसान होता है। एक तो उन्हें घटिया माल की अधिक कीमत देनी पड़ती है दूसरे उनके स्वास्थ्य को भी नुकसान होता है।
8. **सुरक्षा उपायों की अवहेलना-** कुछ उत्पादक विभिन्न वस्तुओं को बनाते समय सुरक्षा नियमों का पालन नहीं करते। बहुत-सी चीजें हैं जिन्हें सुरक्षा की दृष्टि से खास सावधानी की जरूरत होती है, जैसे प्रेशर कुकर में खराब सेफ्टी वाल्व के होने से भयंकर दुर्घटना हो सकती है। ऐसे में उत्पादक थोड़े से लालच के कारण जानलेवा उपकरणों को बेचते हैं।

5. उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम, 1986 के निर्माण की जरूरत क्यों पड़ी?

उत्तर :

उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम, 1986 के निर्माण की जरूरत निम्नलिखित कारणों से पड़ी-

1. **व्यवसाय मानव कल्याण का साधन है-** व्यवसाय समाज का अंग है। इसलिए समाज के बहुत बड़े वर्ग अर्थात् उपभोक्ताओं की सेवा करना इसका धर्म है। वास्तव में उपभोक्ता की सेवा में ही व्यवसाय का कल्याण समाहित है। उपभोक्ताओं के हितों की उपेक्षा करना व्यवसाय की मृत्यु है।
2. **सामाजिक न्याय के साथ विकास-** हमारे संविधान में यह घोषणा की गई है कि भारत एक समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतान्त्रिक राज्य है। हमारे आर्थिक दर्शन की आधारशिला सामाजिक न्याय के साथ विकास करना है। इसलिए उपभोक्ताओं का शोषण हमारे निदेशात्मक सिद्धान्तों और नीतियों के विरुद्ध है।
3. **एकल बनाम बहुउद्देश्य-** व्यवसाय की जिम्मेदारी विभिन्न लोगों के प्रति होती है। उनमें से उपभोक्ता प्रमुख हैं। व्यवसाय सामाजिक और आर्थिक दोनों संस्था है। इसलिए लाभार्जन व्यवसाय का एकल उद्देश्य नहीं है। व्यवसाय भी समाज का अंग होते हुए समाज के महत्वपूर्ण अंग उपभोक्ताओं की उपेक्षा नहीं कर सकता है।
4. **उपभोक्ताओं की अज्ञानता-** सामान्यतः उपभोक्ता मासूम और अनजान होते हैं। उन्हें वस्तु की किस्म, उसके तत्व और विशेषताओं का ज्ञान नहीं होता है। ये वस्तुएँ खराब, घटिया एवं स्वास्थ्य के लिए घातक हो सकती हैं। इसलिए यह प्रशासन की जिम्मेदारी है कि उपभोक्ताओं के हितों का संरक्षण करे।
5. **क्रेता सावधान का सिद्धान्त पुराना हो चुका है-** पहले यह सोचा जाता था कि विक्रेता बेईमान, बदचलन एवं दुष्ट है। इसलिए क्रेता की यह जिम्मेदारी है कि वह स्वयं होशियार एवं चौकन्ना रहे और विक्रेता को उसे धोखा देने का अवसर न दे। औद्योगिक क्रान्ति के बाद वातावरण में परिवर्तन आ गया है। श्रम विभाजन, विशिष्टीकरण और बड़े पैमाने पर उत्पादन ने स्थान ग्रहण कर लिया है। उपभोक्ता सावधान की जगह उपभोक्ता के प्रभुत्व ने जगह ले ली है। सैद्धान्तिक रूप से उपभोक्ता का साम्राज्य स्वीकार कर लिया गया है, परन्तु व्यावहारिक रूप से उपभोक्ता उत्पादन के शोषण का शिकार है।
6. अपने क्षेत्र के बाजार में जाने पर उपभोक्ता के रूप में अपने कुछ कर्तव्यों का वर्णन करें।

उत्तर :

अपने क्षेत्र के बाजार में जाते समय उपभोक्ता को निम्नलिखित कर्तव्यों का पालन करना चाहिए-

1. उपभोक्ताओं का यह कर्तव्य है कि वह BIS (ISI) मार्क या एगमार्क वाली वस्तुएँ ही खरीदें तथा वस्तु की खरीद के समय बिल और गारंटी कार्ड अवश्य प्राप्त करें।

2. जहाँ भी संभव हो खरीदे गए सामान व सेवा की रसीद अवश्य लेनी चाहिए।
3. उपभोक्ताओं को 'उपभोक्ता जागरूकता संगठन' बनाना चाहिए। इस संगठन को सरकार तथा अन्य संस्थाओं द्वारा उपभोक्ताओं की समस्याओं के लिए स्थापित विभिन्न कमेटियों में प्रतिनिधित्व दिए जाने का प्रावधान है।
4. उपभोक्ताओं को अपनी वास्तविक समस्या की शिकायत अवश्य करनी चाहिए, चाहे वस्तु का मूल्य कितना ही क्यों न हो।
5. उपभोक्ताओं को अपने अधिकारों की जानकारी अवश्य प्राप्त करनी चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर उन अधिकारों का प्रयोग भी करना चाहिए।
7. मान लीजिए, आप शहद की एक बोतल और बिस्किट का एक पैकेट खरीदते हैं। खरीदते समय आप कौन-सा लोगो या शब्द चिह्न देखेंगे और क्यों?

उत्तर :

शहद की बोतल खरीदते समय हम एगमार्क का लोगो और बिस्किट का पैकेट खरीदते समय आई.एस.आई. का लोगो देखेंगे क्योंकि एगमार्क कृषि उत्पादों की गुणवत्ता को प्रमाणित करने वाला लोगो है और आई.एस.आई. औद्योगिक उत्पादों की गुणवत्ता को प्रमाणित करने वाला लोगो है।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

8. भारत में उपभोक्ताओं को समर्थ बनाने के लिए सरकार द्वारा किन कानूनी मानदण्डों को लागू करना चाहिए?

उत्तर :

1. **वैधानिक उपाय-** उपभोक्ता को सशक्त बनाने के लिए निम्नलिखित वैधानिक उपाय किए गए हैं-
 1. आवश्यक वस्तु अधिनियम, 1955
 2. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986
 3. अधिकारिक मानक वर्णन अधिनियम, 1976
 4. खाद्य सामग्री में मिलावट से बचने के लिए अधिनियम-1954
2. **प्रशासनिक उपाय-** उपभोक्ताओं की शक्ति बढ़ाने के लिए सरकार ने सार्वजनिक वितरण प्रणाली शुरू की है। आशा की जाती है कि इससे कालाबाजारी, जमाखोरी तथा निर्माताओं और व्यापारियों द्वारा अधिक कीमत वसूल करने पर कुछ हद तक रोक लगेगी।
3. **तकनीकी उपाय-** इस उपाय के अन्तर्गत उत्पाद का मानकीकरण आता है। भारत में भारतीय प्रमाण अधिनियम, 1980 पारित किया गया है। इसके अन्तर्गत उत्पादों को विशिष्ट चिन्ह प्रदान करने की व्यवस्था की गई है, जैसे ISI, BIS आदि।

9. उपभोक्ताओं के कुछ अधिकारों को बताएँ और प्रत्येक अधिकार पर कुछ पंक्तियाँ लिखें।

उत्तर :

उपभोक्ताओं के अधिकारों का वर्णन 1986 के उपभोक्ता सुरक्षा कानून में तथा 1991 और 1993 के संशोधनों में किया गया है। उपभोक्ताओं के मुख्य अधिकार निम्नलिखित हैं-

1. **सुनवाई का अधिकार-** उपभोक्ताओं को अनुचित सौदेबाजी और शोषण के विरुद्ध क्षतिपूर्ति माँगने का अधिकार है। यदि एक उपभोक्ता को कोई क्षति पहुँचाई जाती है तो क्षति की मात्रा के आधार पर उसे क्षतिपूर्ति पाने का अधिकार होता है। इस कार्य को पूरा करने के लिए सुनवाई का अधिकार सभी उपभोक्ताओं को दिया गया है।
2. **उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार-** हर उपभोक्ता को यह अधिकार है कि उसके अधिकारों के प्रति सजग रखने के लिए सरकार प्रयत्न करती रहे। उसे बाजार में मिलने वाली विभिन्न वस्तुओं के गुण-दोषों की जानकारी होनी चाहिए जिससे वह वस्तुओं को खरीदने से पहले उस जानकारी का प्रयोग कर सके।
3. **प्रस्तुतीकरण का अधिकार-** हर उपभोक्ता को यह अधिकार है कि वह विभिन्न संस्थाओं एवं संगठनों के सामने अपनी समस्याओं को प्रस्तुत कर सके तथा ये संगठन उसे उसकी समस्याओं के समाधान में मदद कर सकें।
4. **सुरक्षा का अधिकार-** उपभोक्ताओं को यह अधिकार दिया गया है कि वे ऐसी सभी वस्तुओं की बिक्री से अपना बचाव कर सकें, जो उनके जीवन और सम्पत्ति के लिए हानिकारक हो सकती हैं।
5. **सूचना का अधिकार-** उपभोक्ता को यह अधिकार दिया गया है कि वह हर खरीदी जाने वाली वस्तु की गुणवत्ता, मात्रा शुद्धता और मूल्य आदि के विषय में हर सूचना प्राप्त कर सके ताकि वह अपने-आप को शोषण से बचा सके।
6. **चुनाव का अधिकार-** हर उपभोक्ता को यह अधिकार है कि वह देख-परखकर विभिन्न प्रकार की वस्तुओं में से अपनी इच्छानुसार चीज का चुनाव कर सके और सही मूल्य भी चुकाए।

10. उपभोक्ता अपनी एकजुटता का प्रदर्शन कैसे कर सकते हैं?

उत्तर :

1. उपभोक्ता संघ (संगठन) एवं फोरम बना सकते हैं। वे इनका उपयोग अपने अधिकारों की सुरक्षा के लिए कर सकते हैं।
2. वे सरकार द्वारा उपभोक्ता संरक्षण एवं हिस्सेदारी सम्बन्धी कमेटियों के साथ संलग्न हो सकते हैं, सूचना के अधिकार का प्रयोग कर सकते हैं तथा सरकार/विभाग से पूरी

जानकारी पा सकते हैं।

3. विभिन्न विभागों तथा सेवकों द्वारा गठित श्रम संघों (ट्रेड यूनियनों) की सदस्यता ग्रहण कर सकते हैं।
4. वे बेईमान उत्पादकों, वितरकों, दुकानदारों, व्यापारियों, नर्सिंग होमों, अस्पतालों, शिक्षा संस्थानों के गलत कार्यों के विरुद्ध प्रदर्शन, प्रचार तथा घेराव कर सकते हैं।
5. वे कानून विशेषज्ञों, वकीलों तथा पुलिस एवं उपभोक्ता न्यायालयों का सहारा/आश्रय भी ले सकते हैं।
6. वे कारखानों तथा उद्योगों के मालिकों/प्रबन्धकों को पूरा वेतन या मजदूरी देने के लिए मजबूर कर सकते हैं।

11. भारत में उपभोक्ता आंदोलन की प्रगति की समीक्षा करें।

उत्तर :

भारत में उपभोक्ता आंदोलन का जन्म 1960 के दशक में उपभोक्ताओं की असंतुष्टता के कारण हुआ। उपभोक्ता आंदोलन 'सामाजिक बल' पर आधारित आंदोलन था जिसने उपभोक्ताओं के हितों के लिए आवाज उठाई।

1970 के दशक तक उपभोक्ता संस्थाएँ बड़े पैमाने पर उपभोक्ता अधिकार से संबंधित आलेखों के लेखन और प्रदर्शनी का आयोजन का कार्य करने लगीं थीं। उन्होंने सड़क यात्री परिवहन में अत्यधिक भीड़-भाड़ और राशन की दुकानों में होने वाले अनुचित कार्यों पर नजर रखने के लिए उपभोक्ता दल बनाया। हाल में, भारत में उपभोक्ता दलों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। आज देश में 700 से अधिक उपभोक्ता संगठन हैं जिनमें से केवल 20-25 संगठन अपने कार्यों के लिए पूर्ण रूप से संगठित हैं और मान्यता प्राप्त हैं। उपभोक्ता आंदोलन की सफलता के रूप में भारतीय संसद ने 24 दिसंबर, 1986 को उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम (कोपरा) पारित किया। इसी कारण से हर साल 24 दिसंबर को राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस मनाया जाता है।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

12. निम्नलिखित को सुमेलित करें-

1. एक उत्पाद के घटकों का विवरण	क	सुरक्षा का अधिकार
2. एगमार्क	ख	उपभोक्ता मामलों में सम्बन्ध
3. स्कूटर में खराब इंजन के कारण हुई दुर्घटना	ग	अनाजों और खाद्य तेल का प्रमाण
4. जिला उपभोक्ता अदालत विकसित करने वाली एजेन्सी	घ	उपभोक्ता कल्याण संगठनों की अन्तर्राष्ट्रीय संस्था
5. उपभोक्ता इण्टरनेशनल	ङ	सूचना का अधिकार
6. भारतीय मानक ब्यूरो	च	वस्तुओं और सेवाओं के लिए मानक।

उत्तर : (1) (ङ), (2) (ग), (3) (क), (4) (ख), (5) (घ), (6) (च)।

13. सही या गलत बताएँ-

- (क) कोपरा केवल सामानों पर लागू होता है।
- (ख) भारत विश्व के उन देशों में से एक है, जिसके पास उपभोक्ताओं की समस्याओं के निवारण के लिए विशिष्ट अदालतें हैं।
- (ग) जब उपभोक्ता को ऐसा लगे कि उसका शोषण हुआ है, तो उसे जिला उपभोक्ता अदालत में निश्चित रूप से मुकदमा दायर करना चाहिए।
- (घ) जब अधिक मूल्य का नुकसान हो, तभी उपभोक्ता अदालत में जाना लाभप्रद होता है।
- (ङ) हॉलमार्क, आभूषणों की गुणवत्ता बनाए रखने वाला प्रमाण है।
- (च) उपभोक्ता समस्याओं के निवारण की प्रक्रिया अत्यन्त सरल और शीघ्र होती है।
- (छ) उपभोक्ता को मुआवजा पाने का अधिकार है, जो क्षति की मात्रा पर निर्भर करती है।

उत्तर : (क) गलत, (ख) सही, (ग) सही, (घ) गलत, (ङ) सही, (च) गलत, (छ) सही।

WWW.CBSE.ONLINE